तृतीय माला, खण्ड ९—अंक ५

मंगलवार, १३ नवम्बर, १९६२
२२ कार्तिक, १८८४ (शक)

लोक-सभा
वाद-विवाद

(तीसरा सत्र)

3rd Lok Sabha

(खण्ड ९ में अंक १ से १० तक हैं)

लोक-सभा सचिवालय
नई दिल्ली

एक रुपया (देश में)

चार शिलिंग (विदेश में)

विषय-सूची

पृष्ठ

प्रश्नों के मौखिक उत्तर—

तारांकित प्रश्न* संख्या १५४ से १६६ और १७३ ५१५—३८

प्रश्नों के लिखित उत्तर—

तारांकित प्रश्न संख्या १६० से १७२ ५३९—४१

अतारांकित प्रश्न संख्या २९९ से ३४४ और ३४६ से ३६३ ५४१—७१

निधन सम्बन्धी उल्लेख ५७१

अविलम्बनीय लोक महत्व के विषय की ओर ध्यान दिलाना . . . ५७१—७५

मांझी और बकुलह स्टेशनों के बीच हुई रेल दुर्घटना

सभा पटल पर रखे गये पत्र ५७५

तारांकित प्रश्न संख्या ११८२ के उत्तर में शुद्धि ५७६

पेट्रोलियम उत्पादों की संभरण स्थिति के बारे में वक्तव्य . . . ५७६—७७

श्री के० दे० मालवीय

विदेशियों सम्बन्धी विधि (लागू करना तथा संसोधन) विधेयक—पुत्स्थापित . ५७७

विदेशियों सम्बन्धी विधि (लागू करना तथा संशोधन) अध्यादेश १९६२ के बारे में वक्तव्य . . . . . ५७७—७८

श्री दातार

समवाय (संशोधन) विधेयक-पुर स्थापित ५७८

समवाय (संशोधन) अध्यादेश १९६२ के बारे में वक्तव्य . . . ५७९

श्री क० च० रेड्डी

आपात उद्घोषणा तथा चीन के आक्रमण के बारे में संकल्प . . ५७९—६३६

श्री बिशन चन्द्र सेठ ५७९—८७

श्री दि० ना० सिंह ५८७—८८

श्री दे० द० पुरी ५८८

श्री तिरुमल राव ५८८—८९

श्रीमती शारदा मुकर्जी ५८९

श्री बड़े ५८९—९२

श्री जगदेव सिंह सिद्धांती ५९२—९४

श्री वीरेन्द्र बहादुर सिंह ५९४—९५

किसी नाम पर अंकित यह + चिह्न इस बात का द्योतक है कि प्रश्न को सभा में उसी सदस्य ने वास्तव में पूछा था ।

लोक-सभा

मंगलवार, १३ नवम्बर, १९६२
२२ कार्तिक, १८८४ (शक)

लोक-सभा ग्यारह बजे समवेत हुई

[अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए]

प्रश्नों के मौखिक उत्तर

पाकिस्तान को चोरी छिपे चावल भेजना

†*१५४. **डा० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी** : क्या **खाद्य तथा कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि काफी अधिक मात्रा में चावल पश्चिम बंगाल से चोरी छिपे पूर्वी पाकिस्तान भेजा जा रहा है जिससे भारत में चावल की कमी और कीमतें बढ़ती जा रही हैं ; और

(ख) यदि हां, तो यह स्थिति दूर करने के लिए क्या विशेष उपाय किये गये हैं या किये जाने वाले हैं ?

†**खाद्य तथा कृषि मंत्री के सभा-सचिव (श्री शिंदे)** : (क) और (ख). बड़ी मात्रा में चावल के चोरी छिपे जाने की किसी घटना का पता नहीं लगा है, यद्यपि राज्य सरकार की प्रवर्त्तन शाखा और चौकियां सीमा पर सतर्क देख रेख रखती हैं ।

पश्चिमी बंगाल में मूल्यों में वृद्धि होने का यह कारण है कि वहां वर्ष १९६१–६२ की फसल में पहिली फसल की अपेक्षा उत्पादन थोड़ा हुआ । इसे दूर करने के लिए उचित मूल्य की दूकानों द्वारा खाद्यान्न का वितरण बढ़ा दिया गया है ।

†**डा० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी** : चावल का चोरी छिपे व्यापार छोटे पैमाने पर कितना होता रहा है ? माननीय मंत्री कहते हैं कि बड़े पेमाने पर चोरी छिपे व्यापार नहीं हुआ ?

---

†मूल अंग्रेजी में

2188 (Ai) LSD.—1

†**श्री शिन्दे** : बात यह है कि भारत में सीमा के पास के इलाकों में जो मूल्य प्रचलित हैं व पूर्वी पाकिस्तान में प्रचलित मूल्यों से अधिक हैं । अतः इन परिस्थितियों में चोरी छिपे व्यापार की संभावना नहीं है।

†**अध्यक्ष महोदय** : सरकार को केवल बड़े पैमाने पर होने वाले चोरी छिपे व्यापार का पता लगता है । अन्यथा, यह चलता है ।

†**डा० लक्ष्मी मल्ल सिंधवी** : क्या किसी व्यक्ति के खिलाफ चौर्यानियन का मामला रजिस्टर हुआ है और क्या इन राष्ट्र विरोधी कार्यवाही के कारण किन्हीं व्यक्तियों का सरकार को पता लगा है ?

†**खाद्य तथा कृषि मंत्री (श्री स० का० पाटिल)** : दोनों ओर, पश्चिमी बंगाल तथा पूर्वी पाकिस्तान में, थोड़ा चौर्यानियन चलता है । यह एकतर्फा बात नहीं है । यह काम दोनों ओर से होता है । कभी इससे सहायता मिलती है । जब मैं यह कहता हूं तो इसका अर्थ यह नहीं है कि मैं इसे होने देता हूं या इसे प्रोत्साहन देता हूं । निश्चय यह ऐसा नहीं है जिसकी हमें चिन्ता होनी चाहिये ।

†**अध्यक्ष महोदय** : प्रश्न यह था कि क्या कोई मामला रजिस्टर हुआ है ?

†**श्री स० क० पाटिल** : कुछ मामले सदैव ही रजिस्टर रहते हैं और छुटते हैं । इसके बारे में कोई खास बात नहीं है ।

†**डा० लक्ष्मी मल्ल सिंधवी** : प्रश्न यह है कि क्या किसी मामले में कार्यवाही की गई है । वह कहते हैं वे छोड़ दिये गये हैं ।

†**अध्यक्ष महोदय** : अतः किसी में भी कार्यवाही नहीं की गई ।

†**श्री स० मो० बनर्जी** : माननीय मंत्री ने कहा था कि पश्चिमी बंगाल में कुछ स्थानों पर मल्य चढ़ गये हैं और सरकार ने पश्चिमी बंगाल में तथा अन्य सीमान्त क्षेत्रों में मूल्यों को चढ़ने से रोकने के लिए कार्यवाही की है ।

†**श्री स० का० पाटिल** : दो वर्ष पहिले जूट की फसल के नष्ट होने से पश्चिमी बंगाल में जूट का उत्पादन बढ़ाने के लिए भरसक प्रयास किया गया था । अतः ६ से ७ लाख एकड़ तक भूमि में चावल की फसल के बजाये जूट की फसल बोई गई । परिणाम यह हुआ कि चावल का उत्पादन कुछ कम हो गया । इस वर्ष मुझे बताया गया है कि आने वाली फसल बहुत अच्छी है ।

†**श्री प्रिय गुप्त** : क्या सरकार ने धान वाली भूमि में पटसन बोये जाने के पहिले यह गणना की थी कि क्या इससे खाद्य उत्पादन में कमी होगी या नहीं ?

†**श्री स० का० पाटिल** : माननीय सदस्य जानते हैं कि यहां कोई विधान नहीं है जिससे यह कार्य किया जा सके ।

†**श्री प्रिय गुप्त** : केन्द्रीय सरकार का तो निश्चय है ।

†**अध्यक्ष महोदय** : शान्ति, शान्ति । वह जानना चाहते हैं कि क्या कोई गणना की गई थी या नहीं ।

---

†मूल अंग्रेजी में

†**श्री स० का० पाटिल :** मैं कुछ नहीं टाल रहा हूं । मैं तो केवल यह कह रहा हूं जैसा कि मैं ने प्राय: कहा है कि विधान द्वारा फसल का आयोजन करना पड़ेगा । इससे मामले की पुष्टि होती है । इस रूप में, कृषक अपनी भूमि में कुछ भी कर सकता है ।

†**श्री प्रिय गुप्त** : धान की खेती उन पर लादी गई है ।

श्री यशपाल सिंह : क्या यह सही है कि चावल तिब्बत भेजा जा रहा है और उस से यहां क्राएसिस पैदा हो गयी है और मुनाफाखोरी बढ़ गयी है ?

श्री स० का० पाटिल : इन दिनों इस अनुचित मुनाफाखोरी पर बड़ा रिस्ट्रिक्शन हो गया है और वह चीज़ नहीं होने पायेगी ।

†**श्री श्याम लाल सर्राफ :** क्या सरकार को पता लगा है कि पंजाब में पठानकोट तेहसील में और जम्मू तथा काश्मीर राज्य में कठुआ तहसील में समाज-विरोधी कार्य करने वाले व्यक्ति पाकिस्तान में चावल के चोरी छिपे व्यापार में लगे हैं ?

†**अध्यक्ष महोदय** : हम पूर्वी क्षेत्र से उत्तरी क्षेत्र पर आ गये हैं ।

†**श्री दी० चं० शर्मा :** श्रीमान्, माननीय सदस्य पठानकोट के बारे में कुछ नहीं जानते ।

†**अध्यक्ष महोदय** : शान्ति, शान्ति । समझा यह जाता है कि प्रत्येक सदस्य सब कुछ जानता है । अगला प्रश्न ।

ग्रामदान क्षेत्रों में कृषि उत्पादन

***१५५. श्री श्री नारायण दास :** क्या **सामुदायिक विकास, पंचायती राज और सहकार** मंत्री ७ अगस्त, १९६२ के अतारांकित प्रश्न संख्या १३१ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या ग्रामदान गांवों और भूदान क्षेत्रों में सहकारी समितियों को कृषि उत्पादन के लिये वित्तीय सहायता देने के प्रश्न पर इस बीच विचार किया गया है; और

(ख) यदि हां, तो उसका क्या नतीजा निकला ?

सामुदायिक विकास, पंचायती राज और सहकार मंत्रालय में उप-मंत्री (श्री श्यामधर मिश्र) : (क) जी, हां ।

(ख) ग्रामदान और भूदान क्षेत्रों में स्थापित की गई सहकारी समितियों को १ करोड़ की विशेष निधि में से वित्तीय सहायता देने का निर्णय किया गया है ।

†**श्री श्रीनारायण दास :** ऐसे ग्रामदान गांवों की क्या संख्या है और अब तक कितना व्यय किया गया है ?

†**श्री श्यामधर मिश्र :** गांवों की संख्या ४६४० है । विशेष निधि में से अभी कोई व्यय नहीं हुआ है । सामान्य निधि से व्यय हुआ है ।

†**श्री श्रीनारायण दास :** समूची योजना के कब तक कार्यान्वित किये जाने की आशा है ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†**श्री श्यामधर मिश्र** : निश्चय कर लिया गया है । आशा है कि हम शीघ्र ही इस बारे में राज्यों को लिखेंगे । कार्यवाही जल्दी ही की जायेगी ।

डा० गोविन्द दास : क्या यह बात सही नहीं है । कि यह जो ४०० के करीब गांव मिले हैं यह अलग अलग राज्यों में हैं और अलग अलग क्षेत्रों में मिले हैं और इन को जब सहायता दी जायेगी तो क्या इस बात का खयाल रखा जायेगा कि जहां की जैसी परिस्थिति हो उस के अनुसार उन को सहायता दी जाय और उस के लिए एक योजना बनाई जाय ?

श्री श्यामधर मिश्र : दरअसल में ने जैसा कहा कि ४६०० के करीब गांव हैं जोकि ग्रामदान में मिले हैं । करीब करीब ४५ लाख एकड़ भूमि भूदान में मिली है । अब हर जगह की परिस्थितियां भिन्न भिन्न हैं और इसीलिये एक करोड़ की विशेष निधि इसलिए नहीं है कि हर जगह एक ही किस्म की स्कीम लागू होगी । पहले शौर्ट टर्म लेंगे, मीडियम टर्म लेंगे और बाद में लौंग टर्म लेंगे । एग्रीकलचरल प्रोडक्शन प्रोग्राम के लिए जैसी जहां की परिस्थिति होगी वैसी उसको सहायता दी जायगी ।

†**श्री भागवत झा आजाद** : क्या सरकार ने अर्थ-व्यवस्था का ब्यौरा तैयार किया है या इन क्षेत्रों में बढ़ी हुई पैदावार के साथ बढ़ी हुई वित्तीय सहायता का क्या अनुपात है ?

†**श्री श्यामधर मिश्र** : इन विशेष क्षेत्रों में कोई विशेष अर्थ-व्यवस्थायें सम्बन्धित नहीं हैं । इसकी पहिले ही गणना की जा चुकी है कि कृषि उत्पादन के लिए सहकारी समितियों द्वारा दी गई बड़ी वित्तीय सहायता से कृषि उत्पादन में वद्धि होगी क्योंकि कृषि वित्तीय सहायता, उर्वरक बीज तथा अन्य वस्तु देने वाले विभिन्न राज्यों द्वारा तथा इन सहायताओं से उत्पादन बढ़ता है ।

†**श्री हरि विष्णु कामत** : कृषि मंत्री ने पांच महीने पहिले मेरे एक प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा था कि भूदान यात्रा में आचार्य विनोबा भावे को दान में दी गई भूमि का लगभग दो-तिहाई भाग अभी भूमिहीन किसानों या सहकारी समितियों में बांटा जाना शेष है । में जानना चाहता हूं कि आज क्या स्थिति है, क्या आचार्य विनोबा भावे को अपनी भूदान यात्रा में प्राप्त हुई भूमि का पर्याप्त भाग कृषि योग्य नहीं है ?

†**अध्यक्ष महोदय** : यहां यह प्रश्न नहीं है । जोर ग्रामदान गांवों में सहकारी समितियों को कृषि उत्पादन के लिए वित्तीय सहायता देने पर है । यह वित्तीय सहायता की बात है । श्री शिवमूर्ति स्वामी ।

†**श्री शिवमूर्ति स्वामी** : ग्रामदान गांवों के लिए तीसरी पंचवर्षीय योजना में कितने धन की व्यवस्था है ?

†**श्री श्यामधर मिश्र** : एक करोड़ रु० की विशेष निधि के अतिरिक्त और कोई विशिष्ट राशि निर्धारित नहीं है ।

---

†मूल अंग्रेजी में

असैनिक विमान चालक

+

†*१५९. { **श्री उमानाथ :**
श्री स० मो० बनर्जी :

क्या **परिवहन तथा संचार** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) सरकार द्वारा प्रशिक्षित कितने असैनिक विमान चालक अब भी बेरोजगार हैं; और

(ख) क्या निकट भविष्य में उन्हें रोजगार दिये जाने की सम्भावना है ?

†**परिवहन तथा संचार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री मुहीउद्दीन) :** (क) विचार है कि आजकल इलाहाबाद स्थित असैनिक उड्डयन प्रशिक्षण केन्द्र में प्रशिक्षित ६ वाणिज्यिक विमान-चालक जिनके पास 'ख' लाइसेन्स हैं, बेकार हैं ।

(ख) हां, श्रीमान ।

†**श्री उमानाथ :** सरकार ने उनमें से प्रत्येक के प्रशिक्षण पर ७५,००० रु० व्यय किये हैं । क्या सरकार का विचार, राष्ट्रीय संकट का ध्यान रख कर, उन में से किसी को या सब को रक्षा कार्य में काम देने का है या पहिले से ही काम पर लगा दिया गया है और उन्हें काम पर लगाने में क्या अड़चनें हैं ?

†**श्री मुहीद्दीन :** जब उन्हें काम के लिए बुलाया जायेगा, तब उन्हें काम दे दिया जायेगा ।

†**श्री उमानाथ :** आजकल इलाहबाद संस्था में कितने विद्यार्थियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है और क्या सरकार का विचार इलाहाबाद संस्था की धारिता बढ़ाने का है ?

†**श्री मुहीउद्दीन :** आजकल १५ विद्यार्थी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं । जहां तक विस्तार का प्रश्न है, उस पर आवश्यकता होने पर विचार किया जायेगा ।

†**श्री स० मो० बनर्जी :** आजकल कुल कितने प्रशिक्षित असैनिक विमान चालक बेकार हैं और राष्ट्रीय आपात की पूर्ति के लिए प्रतिरक्षा मंत्रालय के अधीन उन्हें तत्काल काम पर न लगाने के क्या कारण हैं ?

†**श्री मुहीउद्दीन :** यदि उन्हें बुलाया जाता है तो निश्चय ही उन से काम करने के लिए कहा जायेगा ।

†**श्री स० मो० बनर्जी :** मंत्री महोदय भी कुल संख्या नहीं जानते और इसी कारण वह ऐसा कह रहे हैं ।

†**अध्यक्ष महोदय :** क्या माननीय मंत्री के पास कुल संख्या के आंकड़े हैं ?

†**श्री मुहीउद्दीन :** मैं कह चुका हूं कि छः विमान चालक बेकार हैं जिन्होंने अपने लाइसेन्सों का नवीकरण किया है । यह निश्चित जानकारी है ।

---

†मूल अंग्रेजी में

†**श्री त्यागी** : क्या मंत्रालय वर्तमान आपात को ध्यान में रख कर देशभर में विमान चालकों का पूरा सर्वेक्षण कर रहा है ?

†**श्री मुहीउद्दीन** : हां, इस आपात को ध्यान में रख कर हमारे पास लाइसेन्सधारी विमान-चालकों की एक सूची है चाहे उन्होंने अपने लाइसेन्सों का नवीकरण किया है या नहीं ।

†**श्रीमती रेणुका राय** : क्या इस मंत्रालय और प्रतिरक्षा मंत्रालय के बीच यह देखने के लिए कोई व्यवस्था है कि इन लोगों को काम पर लगाया जाये ?

†**श्री मुहीउद्दीन** : हां, वह प्रबन्ध तो सदैव ही है । यदि आवश्यक हुआ, तो उन्हें काम दिया जायेगा ।

†**श्रीमती रेणुका राय** : क्या इस आपात की दृष्टि से कोई विशेष प्रबन्ध है ?

†**श्री दाजी** : इस बात को ध्यान में रख कर कि सरकार एक व्यक्ति को प्रशिक्षण देने पर लगभग ७५,००० रु० व्यय कर रही है और छः व्यक्ति बेकार हैं एवं और पन्द्रह व्यक्तियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है, मैं जानना चाहता हूं कि देश की आवश्यकता और दी जा रही ट्रेनिंग में समयान्तर क्यों है ?

†**श्री मुहीउद्दीन** : इस प्रश्न पर काफी समय पहिले विचार किया जा चुका है । यहां तक कि प्राक्कलन समिति ने भी इसकी जांच की है और मैं अपने माननीय मित्र से प्रार्थना करता हूं कि वह प्राक्कलन समिति की रिपोर्ट पढ़ लें ।

डा० लक्ष्मी मलन सिंघवी श्रीमान्, क्या ऐसा कोई विधेयक सदन के समक्ष लाये जाने के लिये विचाराधीन है जिसके अन्तर्गत असैनिक विमान-चालकों को अनिवार्यतः सक्रिय सैनिक कर्तव्यों के लिये बुलाया जा सके ?

†**श्री मुहीउद्दीन** : प्रतिरक्षा मंत्रालय को पूर्ण अधिकार है, और सरकार को पूर्ण अधिकार है कि वह भारत प्रतिरक्षा अध्यादेश के अधीन किसी भी व्यक्ति को बुला ले और वे उन्हें बुला सकते हैं । हमारे पास लाइसेन्सधारी विमान-चालकों की सूची है, चाहे उनके लाइसेन्सों का १९६२ में नवीकरण हुआ है या नहीं । वह सूची हमारे पास है ।

†**श्री अ० प्र० जैन** : सुपरसोनिक जेट विमानों के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित विमानचालकों की आवश्यकता है । क्या मंत्रालय में इस प्रश्न पर विशेष रूप से विचार किया है कि जिन विमान चालकों को जेट प्रशिक्षण नहीं मिला है उन्हें आगे प्रशिक्षण दिया जाये ?

†**श्री मुहीउद्दीन** : इलाहाबाद में दी जाने वाली ट्रेनिंग के बारे में कुछ भ्रम है । इलाहाबाद में आरम्भिक विज्ञान और विमान उड़ाने के अभ्यास की ट्रेनिंग दी जाती है ।

†**अध्यक्ष महोदय** : माननीय सदस्य यही तो कहते हैं कि क्या इस आरम्भिक ट्रेनिंग की अनुपूर्ति जेट विमानों के लिए उच्च ट्रेनिंग देकर की जानी चाहिए ।

†**श्री मुहीउद्दीन** : इलाहाबाद में यह ट्रेनिंग नहीं दी जाती। इन प्रशिक्षणार्थियों के परीक्षा पास करने पर एयरलाइन्स उन्हें ले लेती है और उन्हें आगे ट्रेनिंग देती है । वह अग्रेतर ट्रेनिंग सुपरसोनिक जेट की ट्रेनिंग भी हो सकती है ।

---

†मूल अंग्रेजी में

डीजल लोकोमोटिव परियोजना

†*१५७. श्री प० कुन्हन :
श्री अ० क० गोपालन :
श्री बूटा सिंह :
श्री नरेन्द्र सिंह महीड़ा :

क्या रेलवे मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) डीजल लोकोमोटिव (रेल के इंजन) परियोजना के सम्बन्ध में अब तक क्या प्रगति हुई है ;

(ख) परियोजना पूरी होने में कितना समय लगेगा ; और

(ग) सरकार और अमरीकी कम्पनी के बीच समझौते की शर्तें क्या हैं ?

†रेलवे मंत्रालय में उपमंत्री (श्री सें० वे० रामस्वामी) : (क) कारखाना तथा बस्ती क्षेत्र दोनों का ही विकास व निर्माण हो रहा है और समचे रूप में १५ प्रतिशत प्रगति हुई है।

(ख) आशा है कि परियोजना मार्च, १९६७ के अन्त तक पूरी हो जायेगी।

(ग) करार की मुख्य बातों का ब्यौरा देने वाला विवरण सभा पटल पर रखा जाता है। [देखिये परिशिष्ट १, अनुबन्ध संख्या ३२]

†श्री प० कुन्हन : क्या मैसर्स आल्को प्रोडक्ट्स इन्कारपोरेट आफ अमरीका हमें अन्य देशों से और डीजल लोकोमोटिव खरीदने से रोकता है ?

†श्री सें० वें० रामस्वामी : जब कि हम स्वयं बनाते हैं तो हम क्यों खरीदें ? कोई आवश्यकता नहीं है।

†श्री नरेन्द्र सिंह महीड़ा : इन डीजल लोकोमोटिव की स्थिति क्या होगी ?

†श्री सें० वे० रामस्वामी : यह निश्चित प्रोग्राम है। वर्ष १९६७ के अन्त तक वार्षिक उत्पादन लगभग १५० हो जायेगा।

†श्री स० मो० बनर्जी : विवरण से पता लगता है कि फर्म सरकारी कर्मचारियों को अमरीका में ट्रेनिंग देने का भी प्रबन्ध करेगी और भारत में कारीगरों तथा देखभाल करने वालों को प्रशिक्षण देने की विस्तृत योजना प्रस्तुत करेगी। क्या कोई योजना बनाई गई है जिसके अन्तर्गत कुछ सरकारी कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जा सके, और यदि हां, तो कब ?

†श्री सें० वे० रामस्वामी : हमारे प्रशिक्षणार्थी यथासमय भेजे जायेंगे। वे भारत में पहले से ही प्रशिक्षण पा रहे हैं।

†श्री इन्द्रजीत गुप्त : इस परियोजना की पूर्ति न होने तक, जिसके लिए माननीय मंत्री कहते हैं पांच वर्ष और लगेंगे, हमें वर्ष १९६७ तक डीजल लोकोमोटिवों का आयात करने पर अनुमानतः कितना व्यय करना होगा ?

†श्री सें० वें० रामस्वामी : वह सर्वथा भिन्न प्रश्न होगा, जिनके लिए पहिले उत्तर दिया जा चुका है, अर्थात् हमें तीसरी योजना काल में कुल लगभग ५५० डीज़ल लोकोमोटिवों की आवश्यकता

---

†मूल अंग्रेजी में

होगी। हम कुछ तो आयात कर चुके हैं और कुछ आ रहे हैं। इस बीच में, अन्तर आयात से पूरा हो जायेगा। मैं निर्माण कार्यक्रम को स्पष्ट कर दूं। उत्पादन लक्ष्य वर्ष १९६७ में १५० प्रति वर्ष का है। हमारा निश्चित प्रोग्राम है। १९६३–६४ में, यह संख्या १२, १९६४–६५ में २९ और १९६५–६६ में ६४ होगी।

श्री यशपाल सिंह : क्या यह सच है कि रेलवे बोर्ड ने ट्रेनों को बिजली से चलाने की सिफ़ारिश की है और इससे डीज़ल लोकोमोटिव का काम हल्का हो गया है ?

रेलवे मंत्रालय में उप मंत्री (श्री शाहनवाज़ खां): जिस इलाके में बिजली से चलने वाली गाड़ियां आ जाती हैं, डीज़ल के इंजनों को वहां से हटा कर दूसरे इलाके में भेज दिया जाता है। यह सही है कि इस हद तक उस इलाके में डीज़ल लोकोमोटिव का काम कुछ ख़त्म सा हो जाता है।

†**श्री दी० चं० शर्मा :** विवरण से पता लगता है कि फर्म को डिजाइन और अन्य बातों के लिए एकमुश्त भुगतान किया जायेगा और वे भुगतान डिजाइन तथा मद के अनुसार विभिन्न हैं। फर्म को इंजीनियरिंग फ़ीस का भी अधिकार होगा और भारत में वास्तविक उत्पादन पर स्वामित्व का भी। अतः मेरा विचार है कि फ़र्म को तीन प्रकार का भुगतान होगा। अर्थात् डिज़ाइन, इंजीनियरिंग फीस और स्वामित्व के लिए एकमुश्त भुगतान होगा। इन में से प्रत्येक मद के अन्तर्गत कितना भुगतान होगा ?

†**श्री सें० वे० रामस्वामी :** आजकल इन्हें बताना लोक हित में नहीं है।

हेरन और वाईकिंग विमान बेचने का प्रस्ताव

†*१५८. **श्री प्र० चं० बरुआ :**
श्रीमती सावित्री निगम :
श्री मुरारका :
श्री राजेश्वर पटेल :
श्री विद्या चरण शुक्ल :
श्री रा० शि० पाण्डेय :

क्या **परिवहन तथा संचार** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि इंडियन एयरलाइन्स कारपोरेशन ने अभी हाल में अपने कुछ हेरन और वाईकिंग विमान बेचने का प्रस्ताव रखा था ;

(ख) यदि हां, तो कितने विमान बेचे जाने वाले थे और उनकी बिक्री की क्या शर्तें थीं ; और

(ग) क्या वे वास्तव में बेचे जा चुके हैं और यदि हां, तो किस कीमत पर ?

†**परिवहन तथा संचार मंत्रालय में उप मंत्री (श्री मुहीउद्दीन :** (क) से (ग). इण्डियन एयरलाइन्स कारपोरेशन ने हाल में विज्ञाप्ति किया है और अपने १२ वाईकिंग व ७ हेरोन विमानों तथा उनके पुर्जों व अतिरेक इंजनों को बेचने का प्रस्ताव दिया है। प्राप्त हुए प्रस्ताव उनके विचाराधीन हैं।

†**श्री प्र० चं० बरुआ :** क्या कोई विश्व टेण्डर मांगा गया है, और यदि हां, तो वे प्रस्ताव किन देशों से आये हैं ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†**श्री मुहीउद्दीन** : अभी मेरे पास यह सारी जानकारी नहीं है, और यह बताना भी इतनी उचित बात नहीं है कि यह प्रस्ताव किन देशों से आये हैं ।

†**श्री प्र० चं० बरुआ** : इण्डियन एयरलाइन्स कारपोरेशन में इन विमानों को कितने समय से प्रयोग किया जा रहा है, और क्या यह सच है कि ये विमान प्रयोग के लिये उचित नहीं पाये गये ?

†**श्री मुहीउद्दीन** : हेरोन के इस प्रश्न पर इस सभा में पहिले अनेक बार विचार किया जा चुका है, और इस बारे में पूरा उत्तर दिया जा चुका है ।

†**श्री मुरारका** : क्या यह सच नहीं है कि वर्ष १९५५ में इन वाईकिंग विमानों को अतिरेक घोषित कर दिया गया था, और अब कारपोरेशन उन्हें कबाड़ के मूल्य पर भी नहीं बेच सकती ।

†**श्री मुहीउद्दीन** : हां, यह सच है ।

†**श्रीमती सावित्री निगम** : इसका क्या कारण है कि हालांकि ये वाईकिंग विमान वर्ष १९५५ में बेकार घोषित कर दिये गये थे और वे अभी तक बेचे भी नही नहीं गये हैं ?

†**श्री मुहीउद्दीन** : वर्ष १९५६–५७ के बाद, उन्हें बेचने के लिए भरसक प्रयत्न किया गया है । परन्तु इन वाईकिंग विमानों की संसार में कोई अधिक मांग नहीं है, और कोई उचित प्रस्ताव नहीं मिले थे । अतः हालांकि इण्डियन एयरलाइन्स कारपोरेशन इन्हें काफी समय से बेचने का प्रयास कर रही है, परन्तु वे इसमें सफल नहीं हुए हैं ।

†**श्री नरेन्द्र सिंह महीड़ा** : क्या सरकार को इन हेरोन और वाईकिंग विमानों की खरीद के बारे में कोई प्रस्ताव प्राप्त हुआ है ?

†**श्री राजेश्वर पटेल** : क्या सरकार ने इन विमानों की सेवायें प्रतिरक्षा मंत्रालय को दी है, और यदि हां, तो क्या उन्होंने ये स्वीकार कर ली हैं ?

†**श्री मुहीउद्दीन** : यह समस्या भी सक्रिय रूप से विचाराधीन है ।

†**परिवहन तथा संचार मंत्री (श्री जगजीवन राम)** : वास्तव में, वाईकिंग विमानों का प्रतिरक्षा मंत्रालय द्वारा प्रयोग किये जाने पर विचार किया गया था । एयर वाइस मार्शल हरजिन्दर सिंह, जो कानपुर एब्रोज के प्रभारी हैं, स्वयं आये थे और मामले पर विचार विमर्श किया था । तत्पश्चात् उन्होंने इंजीनियरों का एक दल वाईकिंग विमानों की इस उददेश्य से जांच करने के लिए भेजा था कि क्या वे उनका किसी प्रकार प्रयोग कर सकते हैं । इसकी जांच करने के बाद दल ने निष्कर्ष निकाला कि उन्हें प्रयोग करना उचित नहीं है । अतः उन्हें बेचा जा रहा है ।

†**श्री बसुमतारी** : मैं जानना चाहता हूं कि क्या वर्तमान आयात में सरकार इन विमानों को बेचने का विचार छोड़ने पर विचार नहीं कर रही है क्योंकि हमें स्वयं अनेक विमानों की आवश्यकता है ?

†**अध्यक्ष महोदय** : इसका उत्तर दिया जा चुका है कि यह बात विचाराधीन है ।

†**श्री जगजीवन राम** : नहीं, श्रीमान । मैंने अभी वाईकिंग विमानों के बारे में उत्तर दिया है ताकि सभा को स्थिति का बोध हो जाये । जहां तक हेरोन विमानों का संबंध है, वायु

---

†मूल अंग्रेजी में

बल ने उनकी जांच की थी और कहा था कि वे उनका प्रयोग नहीं कर सकते। मैंने कारपोरेशन को आदेश दिया था कि वह उन्हें उड़ने योग्य बनाये और आपात के मामले में कारपोरेशन के डकोटा विमान का वायु बल प्रयोग कर सकता है और कारपोरेशन हेरोन विमानों का छोटे मार्गों पर प्रयोग कर सकता है, हालांकि वे लाभदायक नहीं है। आजकल यह स्थिति है। यदि हमें विमान के लिए उचित प्रस्ताव मिलता है, तो हम उन्हें बेच देंगे।

†**श्री मुरारका** : क्या यह सच नहीं है कि ये वाईकिंग विमान वस्तुतः ४७,५०० पौंड पर बेचे जा रहे थे परन्तु लाइसेन्स जारी करने में सरकार की ओर से देर होने के कारण सौदा रद्द हो गया ?

†**श्री मुहीउद्दीन** : माननीय सदस्य के कथनानुसार एक प्रस्ताव आया था, परन्तु बाद में यह वापस ले लिया गया। वास्तव में, यदि वह होता, तो वे निश्चय ही बेच दिये गये होते।

†**श्री बड़े** : प्रस्ताव वापस लेने के क्या कारण हैं ?

†**श्री हरि विष्णु कामत** : औचित्य के एक प्रश्न पर। श्री प्र० चं० बरुआ के एक प्रश्न के उत्तर में यदि मैंने उपमंत्री को ठीक सुना था तो, उन्होंने कहा था कि यह बताना उचित नहीं है कि प्रस्ताव किससे आये थे। क्या इसका कारण यह है कि सरकार समझती है कि यह लोकहित में नहीं है या इसे बताना सरकार के हित में नहीं है ?

†**श्री मुहीउद्दीन** : क्या मैं इसका स्पष्टीकरण कर सकता हूं। यह एक वाणिज्यिक सौदा है . . .

†**अध्यक्ष महोदय** : वह टेक्निकल आपत्ति कर रहे हैं, अर्थात् सरकार के हित और लोकहित में अन्तर कर रहे हैं। यह केवल लोकहित में है कि मंत्री महोदय ऐसी जानकारी नहीं देते। अगला प्रश्न।

†**श्री हरि विष्णु कामत** : उन्होंने इसका उत्तर नहीं दिया।

†**अध्यक्ष महोदय** : अगला प्रश्न।

कृषि उत्पादों का परीक्षण

†*१५९. { **श्री सुरेन्द्रपाल सिंह** :
श्री रामेश्वर टांटिया :
श्री श्याम लाल सर्राफ :
श्री बसुमतारी : }

क्या **खाद्य तथा कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि केन्द्रीय सरकार ने कृषि उत्पादों की किस्म के परीक्षण और विश्लेषण के लिये कलकत्ता में एक प्रयोगशाला स्थापित करने का निर्णय किया है; और

(ख) यदि हां, तो इस प्रयोगशाला में क्या केवल बंगाल की ही आवश्यकता पूरी की जायेगी अथवा इससे अन्य पड़ौसी राज्य भी लाभ उठायेंगे?

---

†मूल अंग्रेजी में

†**खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (डा० राम सुभग सिंह)** : (क) जी हाँ।

(ख) यह प्रयोगशाला पश्चिम बंगाल, बिहार, उड़ीसा, आसाम त्रिपुरा और मनीपुर के संपूर्ण पूर्वी प्रदेश की आवश्यकता पूरी करेगी।

†**श्री सुरेन्द्रपाल सिंह**: क्या यह प्रयोगशाला अनाज की फसलों या व्यापारिक फसलों या दोनों का परीक्षण और विश्लेषण करेगी ?

†**डा० राम सुभग सिंह** : इसका उपयोग घी, बनस्पति, तेल, खली, शहद, आटा कढ़ी पाउडर, मसाले, गुड़ आदि के नमूनों का विश्लेषण करने के लिए किया जायगा।

†**श्री सुरेन्द्रपाल सिंह**: इस परियोजना की अनुमानित लागत क्या है ? क्या सारा खर्च केन्द्रीय सरकार करेगी या पश्चिम बंगाल सरकार भी उसमें हाथ बटायेंगी ?

†**डा० राम सुभग सिंह**: वास्तव में यह प्रयोगशाला स्थापित करने के लिए हमने २० लाख रुपये की रकम रखी है। अभी तक यह प्रयोगशाला स्थापित नहीं की गयी है लेकिन शीघ्र ही स्थापित की जाने वाली है। तब लागत का हिसाब लगाया जायगा।

†**श्री रामेश्वर टांटिया**: माननीय मंत्री ने बताया है कि यह प्रयोगशाला बंगाल, असाम, बिहार, उड़ीसा, त्रिपुरा और मनीपुर की आवश्यकता पूरी करेगी। क्या सरकार माहाराष्ट्र और मध्यप्रदेश की जहाँ कपास और तेलहन की खेती होती है, आवश्यकता पूरी करने के लिए ऐसी प्रयोगशाला स्थापित करने के बारे में सोच रही है ?

†**डा० राम सुभग सिंह**: जी हाँ। योजना यह है कि नागपुर में एक केन्द्रीय नियंत्रण प्रयोगशाला स्थापित की जाये और कानपुर, गुन्टूर, राजकोट, कोचीन, मद्रास, कलकत्ता, बंबई और चंडीगढ़ में ८ प्रादेशिक प्रयोगशालाएं खोली जायें।

†**श्री श्यामलाल सर्राफ**: क्या ऐसा कोई अभिकरण स्थापित करने का सरकार का विचार है। जिससे यह प्रयोगशाला इन वस्तुओं के उत्पादकों या उपभोक्ताओं की मदद कर सके ?

†**डा० राम सुभग सिंह**: वास्तव में ये प्रयोगशालाएं उत्पादकों की मदद के लिए स्थापित की जा रही है और उन अच्छा से अच्छा उपयोग करने के लिए सभी संभव कदम उठाये जायेंगे। जहाँ तक माननीय सदस्य के सुझाव का संबंध है, वह अभी नहीं किया जा सकता।

†**श्री बसुमतारी**: वर्तमान संकट को देखते हुए इन प्रयोगशालाओं को शीघ्र स्थापित करने के लिए क्या अतिरिक्त कार्यवाही की जा रही है ?

†**डा० राम सुभग सिंह**: वास्तव में हम दो प्रयोगशालाएँ एक गुन्टूर में और दूसरी मद्रास में स्थापित कर चुके हैं। मद्रास की प्रयोगशाला अभी पिछले महिने ही स्थापित की गयी है। कलकत्ते में जगह देने के लिए हमने आवास मंत्रालय से प्रार्थना की है और वह मिलते ही हम कलकत्ते में प्रयोगशाला स्थापित कर देंगे।

श्री विभूति मिश्र : यह जो लैबोरेटरी है, इस से चार पांच सूबों को लाभ पहुंचेगा। म जानना चाहता हूं कि जो इंडिविजुअल अपना सामान भजेंगे, उस का क्या तरीका होगा और क्या जिस का सामान टैस्ट किया जायगा, उस के लिये सरकार पैसा भी चार्ज करेगी ?

---

†मूल अंग्रेजी में

डा० राम सुभग सिंह : असल में दो तरह की लैबोरेटरीज़ बनाने का विचार है और बन भी रही हैं। एक ग्रेडिंग लैबोरेटरी है और दूसरी कंट्रोल लैबोरेटरी। ग्रेडिंग लैबोरेटरीज़ बहुत व्यापक रूप से हर जगह बनाई जा रही हैं और विभिन्न पदार्थों के लिये वे होंगी। उन की स्थापना ज्यादातर उत्पादकों अथवा व्यापारियों की ओर से हो रही है। कंट्रोल लैबोरेटरी का हर एक उत्पादन से सीधा सम्बन्ध नहीं होगा। इसलिये प्रत्येक आदमी की जरूरत की पूर्ति करने की बात इस में आती है।

†**श्री कुन्हन** : कोचीन में प्रयोगशाला स्थापित करने में कितना समय लगेगा ?

†**डा० राम सुभग सिंह** : सरकार प्रयोगशाला के लिये इमारत बना रही है और वह तैयार होते ही स्थापित कर दी जायगी।

तटीय व्यापार

+

†*१६०. { **श्री ब० कु० दास** :
श्री स० चं० सामन्त :
श्री सुबोध हंसदा :
डा० प० मंडल :

क्या **परिवहन तथा संचार** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) चालू वर्ष में तटीय व्यापार के द्वारा कुल कितना माल ले जाने की योजना है ;

(ख) क्या देशी जहाज सम्पूर्ण मात्रा ढोने के लिये पर्याप्त हैं ; और

(ग) यदि नहीं, तो उस क्षमता के विकास के लिये क्या पग उठाये जा रहे हैं ?

†**परिवहन तथा संचार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री भगवती)** : (क) १९६२ में भारतीय तट पर सूखे माल के व्यापार की अनुमानित मात्रा लगभग ३९ लाख टन है।

(ख) और (ग). कलकत्ते से कोयले के अधिक परिवहन के लिये किराये पर लिये गये कुछ जहाजों को छोड़ कर बाकी भारतीय जहाज ही सारा माल ढोयेंगे। अभी हाल में कुछ जहाज प्राप्त किये गये हैं और इसलिये उन किराये के जहाजों को अब तक रोक दिया गया है। अनुमान है कि कुछ और पुराने जहाज शीघ्र ही प्राप्त किये जायेंगे।

†**श्री ब० कु० दास** : क्या तटीय व्यापार से ले जाया जाने वाला अतिरिक्त कोयला माननीय मंत्री द्वारा उल्लिखित मात्रा में शामिल है ?

†**श्री भगवती** : जी, हां, कोयला शामिल किया गया है।

†**श्री ब० कु० दास** : इस वर्ष जहाज प्राप्त करने के लिये जहाज़ कंपनियों को विदेशी मुद्रा के रूप में कितनी सहायता दी जायगी ?

†**श्री भगवती** : दस जहाज प्राप्त किये जा रहे हैं। विदेशी मुद्रा की कठिनाई है। इसलिये हम नये जहाज नहीं खरीद सकते। जयन्त शिपिंग कम्पनी, राजकुमार लाइन्स, कलकत्ता स्टीम नैविगेशन कम्पनी, और आर० सेन एण्ड कम्पनी के लिये कुछ पुराने जहाज हम खरीद रहे हैं।

---

†मूल अंग्रेजी में

†**श्री सुबोध हंसदा** : मंत्री महोदय ने बताया कि कोयला एक चीज है जो तटवर्ती जहाजों से ले जाया जायगा । क्या तटीय जहाजों से कोयला लाने ले जाने का खर्च जमीन से हो कर ले जाने के खर्च से कम पड़ता है ?

†**श्री भगवती** : मैं ऐसा ही समझता हूं ।

श्री तुलशीदास जाधव : ग्रान ए प्वाएंट ग्राफ इनफार्मेशन, सर । यह जो क्वैश्चन लिस्ट हम को सप्लाई की गई है, यह भिन्न है ग्रौर इस में यह सवाल नहीं है ।

†**श्री स० चं० सामन्त** : क्या यह सच नहीं है कि देशी जहाजों की संख्या बढ़ाने ग्रौर तटीय व्यापार के लिये जहाज प्राप्त करने के लिये गैर सरकारी दलों ने केन्द्रीय सरकार से सहायता मांगी है ग्रौर यदि हां, तो कितने दलों ने ?

†**श्री भगवती** : मैं ने बताया है कि दस नये जहाज प्राप्त करने का निश्चय किया गया है । गैर-सरकारी दलों के बारे में जानकारी मैं नहीं दे सकता ।

†**श्री जसवन्त सिंह** : क्या कोयला लाने ले जाने के लिये पिछले साल कोई विदेशी जहाज लिये गये थे ; ग्रौर उस में कितनी विदेशी मुद्रा लगी ?

†**श्री भगवती** : उपलब्ध जहाजों की संख्या बढ़ाने के लिये हम ने सात जहाज लिये थे ग्रौर कोयला ले जाने के लिये वे हर महीने में ग्रौसतन पांच खेप करते थे । विदेशी मुद्रा के सम्बन्ध में मैं जवाब नहीं दे सकता ।

बाढ़ से फसल तथा पशुग्रों को हानि

+

†*१६१. **श्री गो० कु० सिंह :**
श्री सुबोध हंसदा :
श्री स० चं० सामंत :
श्री नि० रं० लास्कर :
श्री विश्राम प्रसाद :
डा० पू० ना० खान :
श्री कोल्ला वैंकैया :
श्री यशपाल सिंह :
श्री प्र० चं० बरुग्रा :
श्री पें० वेंकटासुब्बया :

क्या **खाद्य तथा कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंग कि :

(क) क्या सरकार ने ग्रभी हाल की बाढ़ों से देश में फसलों तथा पशुग्रों की हुई हानि का कोई ग्रनुमान लगाया है ;

(ख) यदि हां, तो इस का विस्तृत विवरण क्या है ; ग्रौर

(ग) सहायता के रूप में विभिन्न राज्यों को (राज्यवार) कितनी सहायता दी गई ?

†**खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री शिन्दे)** : (क) ग्रौर (ख). जानकारी इकट्ठी की जा रही है ग्रौर वह यथासमय सभापटल पर रख दी जायगी ।

---

†मूल ग्रंग्रेजी में

(ग) विवरण सभा पटल पर रखा जाता है । **[देखिये परिशिष्ट १, अनुबन्ध संख्या ३३]**

†**श्री सुबोध हंसदा** : इस बात को देखते हुए कि हमारे देश में बाढ़ बराबर ही आती रहती है, सरकार ने जनता को अपना जान-माल बचाने के लिये पहले से चेतावनी देने के लिये अब तक क्या निरोधात्मक कार्यवाही की है ?

†**श्री शिन्दे** : माननीय सदस्य ने जो प्रश्न पूछा है वह वास्तव में सिंचाई और विद्युत् मंत्रालय के क्षेत्र के अन्तर्गत आता है ।

†**श्री वेंकटा सुब्बैया** : क्या जनता की इस अकाल सहायता निधि से आन्ध्र प्रदेश सरकार को भी कोई सहायता दी गयी है ?

†**खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री अ० म० थामस)** : इस मामले में आन्ध्र प्रदेश सरकार को भी लिखा गया था लेकिन उन्होंने सहायता के कोई प्रस्ताव हमारे पास नहीं भेजे हैं ।

†**श्रीमती अकम्मा देवी** : क्या सरकार उन राज्यों को कोई वित्तीय सहायता देती है जहां की फसलें रोग से खराब हो जाती हैं ।

†**श्री अ० म० थामस** : हर राज्य सरकार से कहा गया है कि वह अपने बजट में बाढ़ सहायता कार्य के लिये व्यवस्था रखे । उन्हें वह रकम समाप्त करनी होती है । उस के बाद अतिरिक्त खर्च की गई रकम का ५० प्रतिशत केन्द्रीय सरकार देती है । उचित स्थानों पर वित्त मंत्रालय से ऋण आदि के रूप में तदर्थ अनुदान दिये जा सकते हैं ।

श्री क० ना० तिवारी : क्या मंत्री महोदय यह बतलाने की कृपा करेंगे कि फ्लड के कारण रफली कितनी शुगर केन की फसल पर असर पड़ा है ?

†**श्री अ० म० थामस** : गन्ने के बारे में हमारे पास बिहार और उत्तर प्रदेश से विशिष्ट आंकड़े नहीं प्राप्त हुए हैं । हम ने बिहार से जानकारी मांगी थी । हमें बताया गया है कि अधिकतर भदई, अगहनी और गन्ने की फसलों को नुकसान हुआ है । कुल १६,८१,००० एकड़ क्षेत्र में नुकसान हुआ है और वह ९ करोड़ रुपये से थोड़ा अधिक है । मेरे पास गन्ने के विस्तृत आंकड़े नहीं हैं ।

†**श्री दी० चं० शर्मा** : विवरण से यह दिखाई पड़ता है कि २ करोड़ रुपया पंजाब सरकार को दिया गया है । इस ऋण पर ब्याज की दर कितनी होगी और वह कितनी अवधि में वापस चुकता किया जायगा ।

†**श्री अ० म० थामस**: ब्याज ४ प्रतिशत सालाना है और वह दस वार्षिक किस्तों में चुकता किया जायगा ।

†**श्री स० चं० सामन्त** : क्या बाढ़ पीड़ित राज्य सरकारों में से किसी ने वहां बाढ़ के मूल कारणों का पता लगाने के लिये कोई जांच समिति कायम की है ?

†**श्री अ० म० थामस** : यह एक सामान्य प्रश्न है । केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकारें दोनों ही सक्रिय रूप से बाढ़ नियंत्रण उपायों पर विचार कर रही हैं । कई राज्यों में तो बाढ़ नियंत्रण बोर्ड भी स्थापित किये गये हैं और वह इन बोर्डों के कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत है ।

†**श्री प्र० चं० बरुआ** : विवरण से यह दिखाई पड़ता है कि आसाम को केवल २०,० ०० रुपये की सहायता दी गई है । जबकि आसाम में बाढ़ से सब से ज्यादा नुकसान हुआ है, क्या आसाम सरकार

†मूल अंग्रेजी में

की ओर से कोई वित्तीय सहायता की प्रार्थना अभी बाकी पड़ी है और क्या केन्द्रीय सरकार उन्हें और अधिक धन देने जा रही है ?

†**श्री शिन्दे** : विभिन्न राज्यों को दी जाने वाली वित्तीय सहायता के ढांचे से सम्बद्ध ब्यौरों पर वित्त आयोग ने विचार किया है । यह सहायता आयोग की उन सिफारिशों के अनुसार दी जा रही है जो भारत सरकार ने मान ली हैं ।

†**श्री प० कुन्हन** : किन-किन राज्यों ने दूसरी योजना के दौरान दी गई रकम का पूरा-पूरा इस्तेमाल किया है ? क्या केरल सरकार ने केन्द्रीय सरकार से कोई वित्तीय सहायता मांगी है ?

†**श्री अ० म० थामस** : नुकसान के बारे में हम ने सभी राज्यों से पूछा है । हमें केरल सरकार से अभी तक कोई जवाब नहीं मिला है ।

श्री यशपाल सिंह : मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या कृषि मंत्रालय को यह पता है कि यह रुपया स्टेट गवर्नमेंट के थ्रू आठ या नौ महीने में पहुंचता है ? इसलिये क्या नैचुरल कैलैमिटीज़ फंड कायम कर के यह रुपया सीधा डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट्स के जरिये नहीं दिया जा सकता है ।

†**श्री शिन्दे** : माननीय सदस्य का कथन सही नहीं है ।

श्री तुलशीदास जाधव : स्टेटमेंट में महाराष्ट्र के लिये कोई अमाउंट नहीं है । तो क्या महाराष्ट्र स्टेट ने कुछ नहीं मांगा है ?

†**श्री शिन्दे** : वह राज्यवार नियतन का प्रश्न नहीं है । क्योंकि केन्द्रीय सरकार ने एक विशिष्ट ढांचा मंजूर किया है । यदि कोई राज्य उस योजना के अनुसार भारत सरकार के सामने कोई मांग रखता है तो वह सामान्यतया मंजूर कर ली जाती है । उस में भेदभाव का कोई प्रश्न नहीं है ।

†**श्री भागवत झा आज़ाद** : प्रश्न के भाग (क) और (ख) के उत्तर के सम्बन्ध में यह बात है कि इस बात के बावजूद कि बाढ़ काफ़ी समय पहले आई थी, उत्तर नहीं दिया जा सका ? क्या राज्य सरकारों ने कोई अनुमान लगाया है या नहीं ?

†**श्री अ० म० थामस**: वास्तव में हमें उन से तदर्थ रिपोर्ट मिलती रही है । यह प्रश्न मिलने के बाद हम ने उस के अन्तर्गत आई हुई बातों के सम्बन्ध में विभिन्न राज्य सरकारों को लिखा था और हमें बिहार, मद्रास, उड़ीसा, पंजाब और पश्चिम बंगाल से उत्तर मिल चुके हैं । बाकी राज्यों ने जवाब नहीं दिये हैं । उत्तर प्रदेश को बाढ़ से बहुत नुकसान हुआ है । हमें अभी उन से जानकारी नहीं मिली है । इस मामले में सभी राज्यों को लिखा जा चुका है ।

ग्रामीण संस्थाओं में कृषि की शिक्षा

+

†*१६२. **श्री विभूति मिश्र :**
श्रीमती सावित्री निगम :
श्री भागवत झा आज़ाद :
श्री भक्त दर्शन :

क्या **खाद्य तथा कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि खाद्य तथा कृषि मंत्रालय द्वारा नियुक्त एक उच्चस्तरीय समिति भारत की ग्रामीण संस्थाओं में कृषि की शिक्षा के सम्बन्ध में द्वितीय संयुक्त भारत अमेरिकी दल के द्वारा अभिव्यक्त मत से सहमत नहीं हुई है ; और

---

†मूल अंग्रेजी में

(ख) यदि हां, तो समिति की मुख्य सिफारिशें क्या हैं ?

†**खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (डा० राम सुभग सिंह)** : (क) जी हां ।

(ख) आवश्यक जानकारी देने वाला एक विवरण सभा पटल पर रखा जाता है । **[देखिये परिशिष्ट १, अनुबन्ध संख्या ३४]**

श्री विभूति मिश्र : स्टेटमेंट को देखने से पता चलता है कि जो ऐग्रिकल्चरल सेंटर्स हैं उन को आप ऐग्रिकल्चर कालेजों में कन्वर्ट करने जा रहे हैं । मैं जानना चाहता हूं कि इस तरह से देश में कितने कालेज खुलेंगे ?

डा० राम सुभग सिंह : यह जो रुरल इंस्टिट्यूट्स हैं उनकी संख्या इस वक्त ११ है । उन में दो साल की शिक्षा, कृषि सम्बन्धी, दी जाती है । लेकिन उनके अलावा अलग से एग्रिकल्चर कालेज स्थापित किये जाते हैं और इस वक्त आठ विश्वविद्यालय स्थापित किये जा सके हैं । हमारी योजना है कि इन देहाती संस्थाओं में कृषि शिक्षा का कार्य अभी चालू रखा जाय क्योंकि दो ही वर्ष में जानकार स्नातक निकल जाते हैं ।

श्री विभूति मिश्र : क्या यह सही है कि जहां जहां पर देहाती क्षेत्रों में आप की एग्रिकल्चर ट्रेनिंग की संस्थायें रक्खी गई हैं, सब जगहों पर कालेज बनेंगे ? अगर यह सही है तो कितनी जगहों पर वे बनेंगे ?

डा० राम सुभग सिंह : हालांकि बिहार में बिरौली में यह रुरल इन्स्टिटयट है लेकिन वहां पूसा में, सबौर में और रांची में बड़े अच्छे-अच्छे ऐग्रिकल्चर कालेज स्थापित किये गये हैं । अगर बिरौली में भी कोई चाहे कि उस को ऐग्रिकल्चर कालेज के रूप में बढ़ा दिया जाये, वहां के लोग और सरकार चाहें, तो हमें कोई उज्र नहीं है ।

श्रीमती सावित्री निगम : जो कालज कृषि संस्थाओं में अपने को बदलना चाहते हैं उन्हें क्या सहायता दी जायेगी ?

†**डा० राम सुभग सिंह** : भारतीय कृषि अनुसंधान संस्था के पास २ करोड़ रुपये की रकम है लेकिन वह उस समिति की सिफारिशों के आधार पर वितरित की जाती है जो यह देखने के लिये विभिन्न राज्यों में जाती है कि वह संस्थायें उपयुक्त हैं या नहीं । उस समिति की सिफारिशों पर ही कोई अनुदान दिया जाता है ।

†**श्री भागवत झा आजाद** : चूंकि सरकार ने कृषि शिक्षा का नया ढांचा, जिसका सुझाव भारतीय कृषि अनुसंधान संस्था ने दिया है और जिसका समर्थन राष्ट्रीय शिक्षा परिषद् ने किया है, अस्वीकार कर दिया है, इन स्कूलों को ऊंचा उठाने और उन्हें कालेज बनाने के लिये क्या ठोस कार्रवाई की जा रही है ?

†**डा० राम सुभग सिंह** : सरकार ने उसे अस्वीकार नहीं किया है क्योंकि वास्तविक स्थिति यह है कि १९५४ में स्थापित एक दल ने यह सिफारिश की थी कि इन ग्रामीण संस्थाओं को नहीं कायम रखना चाहिये । उसके बाद एक दूसरी टोली ने १९५९ में इस प्रश्न पर विचार किया और उसने पहली टोली की सिफारिशों का भी समर्थन किया । एक उच्चस्तरीय समिति १९६० में कायम की गयी और उसने यह बताया कि ये संस्थायें बहुत अच्छा काम कर रही हैं और उन्हें तुरन्त समाप्त

†मूल अंग्रेजी में

नहीं किया जाना चाहिये। शिक्षा मंत्रालय अभी उस पर चर्चा कर रहा है और सरकार ने कोई निश्चय नहीं किया है। हमने अभी उन्हें कायम रखा है।

†**श्री अ० प्र० जैन** : क्या ये ग्रामीण संस्थायें भूमि-अनुदान कालेजों जैसी नहीं हैं जहां विस्तार-कार्य शिक्षा से सम्बद्ध होता है और यदि हां, तो इन ग्रामीण संस्थाओं का विस्तार क्यों नहीं किया जा रहा है ?

†**डा० राम सुभग सिंह** : यदि माननीय सदस्य का आशय आगरा के पास बीजपुर की ग्रामीण संस्था या उस प्रकार की दूसरी संस्थाओं से हो,तो वही कल्पना है। लेकिन बिरौली, गरधाटी या वाधों की ग्रामीण संस्था भूमि अनुदान कालेज के ढंग की नहीं है यदि उनके पास उतनी जमीन हो और वह कालेजों की तरह काम कर सकते हों तो हमें कोई आपत्ति नहीं है।

श्री बड़े : आदिवासी क्षेत्रों में एग्रीकल्चर कालिज खोलने के लिये सेंटर ७५ परसेंट देगा और राज्य २५ परसेंट देगा ऐसा शासन ने लिखा है, क्या यह सही है ?

डा० राम सुभग सिंह : जो लिखा है उसे हम लोग मानते हैं।

श्री सरजू पाण्डेय : क्या केन्द्रीय सरकार ने उत्तर प्रदेश सरकार को कोई ऐसा डाइरेक्टिव दिया है कि कोई नया एग्रीकल्चर कालिज न खोला जाये ?

डा० रामसभग सिंह : माननीय सदस्य के जिले गाजीपुर में एक एग्रीकल्चर कालिज खोल दिया गया ह और वह जुलाई से चालू हो गया है। इसके अलावा दिलदार नगर में एक एग्रीकल्चर स्कूल भी खोल दिया गया है।

श्रीमती जयाबेन शाह : यह दो करोड़ रुपया एग्रीकल्चर इंस्टीट्यूट के लिये है। मगर इन इंस्टीट्यूट्स में से एक को एजूकेशन मिनिस्ट्री ७५ परसेंट ग्रांट देती है और एग्रीकल्चर कालिज को यूनीवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन की ओर से कुछ दिया जाता है। तो यह जो दो करोड़ रुपया है इसमें से किस-संस्था को ग्रांट दी जायेगी।

डा० राम सुभग सिंह : यह जो दूसरे ढंग को कालिज का जिक्र माननीय सदस्या ने किया, उसको भी मदद देंगे और रूरल इंस्टीट्यूट को भी। यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन एग्रीकल्चर कालिज को मदद देना बन्द कर रहा है। फूड एंड एग्रीकल्चर मिनिस्ट्री की ओर से उनको मदद दी जाती रहेगी।

†**श्री रंगा** : कृषि कालेजों और सामान्य कालेजों की तुलना में इन कृषि संस्थाओं में प्रतिछात्र लागत मालूम करने का कोई प्रयत्न किया गया है और क्या वह लागत कम करने के लिये कोई प्रयत्न किया गया है ?

†**डा० राम सुभग सिंह** : यदि माननीय सदस्य भारतीय कृषि शिक्षा परिषद की आखिरी बैठक की कार्रवाई देखें तो उन्हें मालूम होगा कि हमने प्रतिछात्र शिक्षा व्यय कम करने पर बहुत जोर दिया है। हमारा प्रयत्न यह होगा कि सामान्य किसानों के लड़के और लड़कियां कम लागत पर इन संस्थाओं से पूरा-पूरा लाभ उठा सकें।

---

†मूल अंग्रेजी में

विमानों के पुर्जे और सामान

+

†*१६३. { श्री राजेश्वर पटेल :
श्री मुरारका :

क्या **परिवहन तथा संचार** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) पिछले कुछ वर्षों से फालतू पड़े हुये वाइकिंग, हेरन और डकोटा के पुर्जों और सामान का क्या मूल्य है ;

(ख) उनमें से कितना सामान बेकार और पुराना हो चुका है; और

(ग) इस सामान को बेचने के लिये क्या कार्यवाही की जा रही है ?

परिवहन तथा संचार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री मुहीउद्दीन): (क) और (ख).३१-३-१९६२ को वाइकिंग्ज, हेरन्स और डकोटा सम्बन्धी पुराने और बेकार फुटकर पुर्जों के मूल्य नीचे दिये जाते हैं :—

वाइकिंग्ज .	४७.५५ लाख रुपये ।
हेरन्स .	१६.३० लाख रुपये ।
डकोटा . . .	१८.०५ लाख रुपये ।

(ग) चूंकि वाइकिंग्ज और उनसे सम्बद्ध फुटकर पुर्जों की कोई बिक्री नहीं होती, इंडियन एयरलाइन्स कारपोरेशन ने विज्ञापन से रद्दी के तौर पर उनकी बिक्री के लिये टेंडर मांगे हैं वह प्राप्त प्रस्तावों पर विचार कर रहा है ।

कारपोरेशन ने अपने हेरन्स और सम्बन्धित पुर्जे भी विज्ञापन के जरिये बिक्री के लिये रखे हैं । उनमें दिलचस्पी रखने वालों ने पूछताछ शुरू कर दी है ।

डकोटा के अतिरिक्त पुर्जों की सूचियां कारपोरेशन ने भारत तथा विदेशों में परिचालित की हैं । ४५,००० रुपये के पुर्जों की बिक्री को छोड़कर बाकी पुर्जों के लिये कोई बाजार नहीं है । उन्हें रद्दी के तौर पर बेच देने के लिये कारपोरेशन कार्यवाही कर रहा है ।

†**श्री राजेश्वर पटेल :** ३१ मार्च, १९६१ को फुटकर पुर्जों और भंडार का मूल्य कितना था ?

†**श्री मुहीउद्दीन :** वह लगभग उतना ही होगा क्योंकि उसमें अधिक वृद्धि नहीं हुई है । मूल्य ह्रास को छोड़कर अधिक अन्तर नहीं होगा ।

†**श्री राजेश्वर पटेल :** क्या यह सच है कि हर साल हम वास्तविक आवश्यकता से अधिक खरीदते रहे हैं ?

†**श्री मुहीउद्दीन :** मैं आंकड़े बताऊंगा । १९५७–५८ में जो वाइकिंग्ज लिये गये थे उनके लिये हमने १९५५–५६ में ४.६१ लाख रुपये के, १९५७–५८ में २.५९ लाख रुपये के और १९५७–५८ में १८,००० रुपये के फुटकर पुर्जे खरीदे । इस लिये नये पुर्जों की खरीद हमारी जरूरतों से अधिक नहीं है ।

†**श्री मुरारका :** डकोटा के फुटकर पुर्जों को अतिरिक्त घोषित क्यों किया गया है जब कि नागरिक और प्रतिरक्षा प्रयोजनों के लिये उनका उपयोग किया जा रहा है ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†**श्री मुहीउद्दीन** : वे अधिकतर पुराने हो गये हैं ।

†**श्री मुरारका** : वे कब पुराने हो गये ? क्या वे हमें खराब हालत में मिले थे या वे हमारी जरूरत से इतने ज्यादा थे कि पड़े-पड़े खराब हो गये ?

†**श्री मुहीउद्दीन** : १९५४ में जब हमने एयरलाइन्स का राष्ट्रीयकरण किया तब हमने फुटकर पुर्जों सहित ७४ डकोटा हस्तगत किये । हमें भूतपूर्व कंपनियों से काफी मात्रा में पुर्जे मिले और वे स्टाक में पड़े थे ।

मंगलौर पत्तन

+

†*१६४. { **श्री मोहसिन** :
श्री दी० चं० शर्मा :
श्री वारियर :
श्री रामेश्वर टांटिया :
श्री श्यामलाल सर्राफ :

क्या **परिवहन तथा संचार** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या मंगलौर में सभी ऋतुओं में काम में लाया जाने वाला पत्तन बनाने का कोई प्रावस्था भाजित कार्यक्रम बनाया गया है ;

(ख) क्या इसके लिये स्थान चुन लिया गया है ;

(ग) निर्माण का अनुमानित व्यय क्या है ; और

(च) क्या इससे लौह अयस्क के अतिरिक्त तेल, कोयला तथा ऐसी ही अन्य वस्तुओं का परिवहन करने की व्यवस्था होगी ?

†**परिवहन तथा संचार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री भगवती)**: (क) से (घ). एक विवरण सभा पटल पर रखा जाता है । **[देखिये परिशिष्ट १, अनुबन्ध संख्या ३५]**

†**श्री मोहसिन** : यह निर्माण पूरा करने में कितना समय लगेगा ?

†**श्री भगवती** : ब्रेकवाटर्स और शोर प्रोटेक्शन वर्क्स आदि के निर्माण के लिये कई तारीखें दी जा चुकी हैं ।

†**श्री दी० चं० शर्मा** : इस पत्तन के लिये स्थान कब तक निर्धारित किया जायगा क्योंकि यह सारा कार्यक्रम उसी पर निर्भर है ?

†**श्री भगवती** : स्थान अंतिम रूप से निश्चित करने के लिये कार्यवाही की गई है । छानबीन जल्दी करने के लिये एक एक्जीक्यूटिव इंजीनियर के अधीन एक फील्ड डिवीजन कायम किया गया है । यह छानबीन पूरी हो जाने के बाद स्थान अंतिम रूप से निश्चित किया जायगा । उसमें ज्यादा समय नहीं लगेगा ।

†**श्री रामेश्वर टांटिया** : वर्तमान क्षमता कितनी है और क्या नये निर्माण के बाद सड़क और रेल सुविधायें भी किसी हद तक बढ़ जायेंगी ?

---

†मूल अंग्रेजी में ।

†**श्री भगवती :** अयस्क-स्थल से इस स्थल तक लौह अयस्क पहुंचाने के लिये रेलवे बनायी जायगी ?

†**डा० का० ला० राव :** क्या यह सच है कि अधिकतर जांच-पड़ताल पूरी हो गई है और यह एक प्रकार का पुनः परीक्षण है ?

†**श्री भगवती :** यह तय हो चुका है कि वह स्थान वेत्रवती नदी के उत्तर में होगा, अब वह पांच मील की दूरी पर हो या तीन मील की दूरी पर, यह अभी निश्चित करना बाकी है। तीन मील की दूरी में रेत फैली हुई है। वह उपयुक्त होगा या नहीं उसकी जांच पड़ताल करनी है। विस्तृत जांच पड़ताल से यह पता लगा है कि उत्तर में लगभग पांच मील की दूरी पर एक स्थान अधिक उपयुक्त होगा ।

†**श्री श्यामलाल सर्राफ :** आने-जाने वाले माल और यात्री यातायात के प्रयोजन के लिये और उसके आसपास के क्षेत्रों के विकास के लिये इस पत्तन के विकास की अत्यावश्यकता को ध्यान में रखते हुये क्या सरकार यह पत्तन यथाशीघ्र पूरा करने में शीघ्रता करेगी ?

†**अध्यक्ष महोदय :** यह कार्यवाही के लिये सुझाव है ।

†**श्री हरि विष्णु कामत :** क्या यह सच है कि इन समाचारों में कोई सचाई नहीं है कि गोआ की स्वतंत्रता के बाद गोआ में वर्तमान पत्तन के कारण मंगलौर पत्तन के निर्माण की प्रगति रुक गई है या संभवतः रुक जायगी ?

†**परिवहन तथा संचार मंत्री (श्री जगजीवन राम) :** उस समाचार में कोई सचाई नहीं है।

उर्वरकों का संग्रह

†*१६५. **श्री दी० चं० शर्मा :**
श्री भागवत झा आजाद :
डा० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी :
श्री सुरेन्द्रपाल सिंह :
श्री यशपाल सिंह :
श्री बूटा सिंह :
श्री गुलशन :
श्री प्र० के० देव :
श्रीमती रेणुका राय :
श्री दाजी :
श्री स० मो० बनर्जी :

क्या **खाद्य तथा कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि नंगल संयंत्र और रूरकेला में भारी मात्रा में उर्वरक एकत्र हो गये हैं; और

(ख) यदि हां, तो उसे वहां से हटाने के लिय क्या कदम उठाये गये हैं या उठाने जाने वाले हैं ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†**खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (डा० राम सुभग सिंह)** : (क) नंगल के कारखाने में लगभग २ महीने के उत्पादन का भांडार बनाने की आशा है। सितम्बर, १९६२ के आरंभ में ५३,२१० टन का अधिकतम भांडार था। अब भांडार ४५,०५५ टन है।

रूरकेला में अभी भी उत्पादन नहीं हो रहा है।

(ख) राज्य कृषि मंत्रालयों तथा कृषि विभागों से कोटा उठाने का अनुरोध किया गया था। कैल्सियम अमोनियम नाइट्रेट के मूल्य हाल में ही ३२ रुपये कम पर दिये गये हैं।

†**श्री दी० चं० शर्मा** : जब मूल्य कम कर दिये गये हैं तो भी राज्य कोटा क्यों नहीं उठा रहे हैं। क्या कारण हैं ?

†**डा० राम सुभग सिंह** : मैं माननीय सदस्य तथा सभा को बताना चाहता हूं कि हमने दो महीने पहले घोषणा की थी हम देखेंगे कि दो महीने के अन्दर कैल्सियम अमोनियम नाइट्रेट का कोटा उठा लिया गया है और आज मैं प्रसन्नता से बता देना चाहता हूं कि हमारे पास ४५,८३९ टन के आर्डर हैं। भांडार केवल ४५,०५५ टन का है।

†**श्री भागवत झा आजाद** : देश में उर्वरकों की बढ़ती हुई मांग के कारण क्या सरकार ने अब निर्धारित कर लिया है कि कोटा प्रशासनिक असफलता के कारण नहीं उठाया गया था और क्या सरकार उत्तम वितरण पद्धति बनायेगी ?

†**डा० राम सुभग सिंह** : क्या माननीय सदस्य ने मेरा उत्तर सुना था। उनको तो प्रशासनिक सफलता की सराहना करनी चाहिये थी।

†**श्री भागवत झा आजाद**: मैंने उनका उत्तर सुना था। (**अन्तर्बाधा**)

†**डा० राम सुभग सिंह**: वह समझे नहीं हैं। हमारे पास ४५,८३९ टन के आर्डर हैं।

†**श्री कृ० चं० पन्त** : क्या नंगल में निर्मित उर्वरक पंजाब, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के लिये निश्चित थे और उन राज्यों को किसानों ने उनको उस समय नहीं लिया था जब उनका उत्पादन हुआ था और ऐसा इस कारण हुआ था कि सरकार कैल्सियम अमोनियम नाइट्रेट के फायदों को किसानों को नहीं समझा पाई थी ?

†**डा० राम सुभग सिंह** : मैं माननीय सदस्य को बताना चाहता हूं कि यदि वह कैल्सियम अमोनियम नाइट्रेट के पंजाब के उपभोग के आंकड़े देखते तो संभवतया ऐसा प्रश्न न पूछते। पंजाब ने आर्डर दिये थे और तुरन्त ही १२,८३८ टन उठाने जा रही है और पंजाब में ही इसकी सबसे अधिक खपत है।

†**डा० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी**: भांडार में इकट्ठा करने के कारण कितनी अनुमानित हानि हुई है और क्या उन राज्य सरकारों से इसको लिया जा रहा है जिन्होंने समय पर कोटा नहीं उठाया था ?

†**डा० रामसुभग सिंह** : गत दो महीनों में सभी राज्य सरकारों ने अपना कोटा उठाया और अब उन्होंने नये आर्डर दिये हैं जिनको पूरा करना मुश्किल पड़ रहा है।

†**श्री यशपाल सिंह**: क्या यह सही है कि डिमांड से ज्यादा हमारा प्रोडक्शन हो गया है किसान उसे नहीं ले रहे हैं और इसलिये एक जगह से उठा कर दूसरी जगह उसे रक्खा जा रहा है ?

---

†मूल अंग्रेजी में

डा० रामसुभग सिंह : ऐसी बात तो नहीं है बल्कि हम तो और ज्यादा फर्टिलाइजर्स का उत्पादन करना चाहते हैं और पिछले दो, तीन दिनों से हम लोग सोच रहे हैं कि ५० हजार टन फर्टिलाइजर्स हम दूसरे देशों से खरीदें क्योंकि सब्जी वगैरह उगाने के लिये फर्टिलाइजर्स की बहुत जरूरत पड़ती है ।

†**श्री प्र० चं० बरुआ** : शेष भांडार कब तक उठा लिये जाने की आशा है ?

†**डा० रामसुभग सिंह** : शष भांडार नहीं है और इस महीने में पूरा उठा लिया जायेगा ।

†**श्री सुरेन्द्र पाल सिंह** : क्या देश के किसान इस नये उर्वरक को ले लेंगे और क्या सरकार इस प्रकार के उर्वरक की देश की मांग पूरी कर सकेंगे ?

†**डा० रामसुभग सिंह** : जी हां । मेरे मित्र यह जानकर खुश होंगे कि रूरकेला कारखाने में अगले वर्ष से उत्पादन आरंभ हो जायेगा और उस कारखाने की क्षमता उत्पादन आरंभ होने पर ६ लाख टन होगी । परन्तु अगले वर्ष के तीन महीनों में इससे ३०,००० टन का उत्पादन होगा तथा बाद में दो लाख टन होगा । इसलिये हमारी आवश्यकतायें कारखाने से पूरी हो जायेंगी ।

†**श्री दी० चं० शर्मा** : क्या मंत्री महोदय ने इस प्रकार के उर्वरक की सभी राज्यों की मांग का निर्धारण कर लिया है और यदि हां, तो कुल मांग क्या है ?

†**डा० रामसुभग सिंह** : वर्ष १९६२-६३ की सभी उर्वरकों की कुल मांग ५.२५ लाख टन है ।

प्रश्न संख्या १६६ और १६७ के बारे में

†**अध्यक्ष महोदय** : श्री श्यामलाल सर्राफ ।

†**श्री श्यामलाल सर्राफ** : प्रश्न संख्या १६६ ।

†**श्री स० मो० बनर्जी** : इस प्रश्न के साथ-साथ प्रश्न संख्या १७३ भी लिया जाये ।

†**अध्यक्ष महोदय**: जी, हां । यदि माननीय मंत्री स्वीकार करें तो ऐसा हो सकता है ।

†**खाद्य तथा कृषि मंत्री के सभा सचिव (श्री शिन्दे)**: जी, हां ।

चीनी के मूल्यों का वैज्ञानिक व्यवस्थाकरण

\+

†*१६६. **श्री श्याम लाल सर्राफ :**
श्री रामेश्वर टांटिया :

क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(१) चीनी के मूल्यों को देश की मांग के अनुकूल बनाने और सभी लोगों को अधिक चीनी के उपयोग की प्रेरणा देने के लिये; और

---

†मूल अंग्रेजी में

(२) देश के बाजार में अन्य देशों की प्रतियोगिता का मुकाबला करने के लिये, अब तक चीनी के मूल्यों का वैज्ञानिक व्यवस्थाकरण करने के लिये क्या कदम उठाये गये हैं ?

†**खाद्य तथा कृषि मंत्री के सभासचिव (श्री शिन्दे)**: निम्न कार्यवाही की गई है :

(१) चीनी कारखानों से बिक्री के लिये चीनी का नियमित रूप से दिया जाना ; और

(२) गन्ने का प्रति एकड़ उत्पादन बढ़ाने के लिये गन्ने की खेती का विकास और अन्त में चीनी का उत्पादन व्यय कम हो जाये ।

चीनी की उत्पादन लागत

†*१७३. **श्री प्र० चं० बरुआ** : क्या **खाद्य तथा कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या चीनी प्रोद्योगविज्ञ संस्था के तेरहवें वार्षिक सम्मेलन में चीनी की उत्पादन लागत को कम करने के कुछ तरीकों पर विचार किया गया था ;

(ख) यदि हां, तो सम्मेलन में इस सम्बन्ध में क्या निर्णय लिये गये थे ; और

(ग) जिन तरीकों के सम्बन्ध में निर्णय किया गया है, उनको किस प्रकार लागू किया जा रहा है ?

†**खाद्य तथा कृषि मंत्री के सभासचिव (श्री शिन्दे)** : (क) से (ग). २३ अक्तूबर, १९६२ को कानपुर में हुए चीनी प्रोद्योगविज्ञ संस्था के तेरहवें वार्षिक सम्मेलन के सभापति तथा उद्घाटन भाषण के चीनी उत्पादन लागत कम करने के औचित्य का उल्लेख किया गया था परन्तु कोई निश्चित निर्णय नहीं किया गया था ।

†**श्री श्यामलाल शर्राफ** : क्या सरकार जानती है कि आज भी चीनी के मूल्य गन्ने के मूल्य की तुलना में तथा गन्ना उत्पादकों को दिए गए मूल्यों की तुलना में बहुत ऊंचे हैं ?

†**खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री अ० म० थामस)** : यह ठीक नहीं है । इस समय चीनी के मूल्य गन्ने की कुल लागत के ४६.५ प्रतिशत हैं और कर ३३.५ प्रतिशत है । निर्माण लागत और लाभ केवल २० प्रतिशत होगा ।

†**श्री श्यामलाल शर्राफ** : सरकार का विचार जितना संभव है उतना किस प्रकार लाभ देने का है क्योंकि उत्पादन लागत तथा विक्रय मूल्य बहुत अधिक है ।

†**श्री अ० म० थामस** : जब इस प्रश्न पर इस सभा में चर्चा हुई थी उस समय न तो कोई सदस्य और न ही सरकार गन्ने के मूल्य कम करने के पक्ष में थी । गन्ने के मूल्य कम किए बिना अथवा उत्पादन शुल्क कम किए बिना चीनी के मूल्यों में कमी करने की गुंजायश नहीं है । गन्ने की लागत के आधार पर कमी करना संभव नहीं है । उत्पादन शुल्क कम करने पर भी ऐसा करना संभव नहीं है । इसलिए मूल्यों को ऐसा ही रखना है ।

†**श्री रामेश्वर टांटिया** : क्या गन्ने के मूल्य वसूली के अनुसार निश्चित किए जायेंगे और यदि हां, तो चीनी के मूल्य के नवीकरण का क्या असर होगा ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†श्री शिन्दे : इस वर्ष से इसको वसूली जोड़ से दिया जायेगा । न्यूनतम मूल्य १ रुपया ८ आने प्रति मन होंगे ।

श्री विभूति मिश्र : अभी मंत्री जी ने बताया कि गन्ने का फील्ड बढ़ेगा, तो शूगरकेन प्राइस पर असर पड़ेगा । मैं यह जानना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान में कोयम्बटूर के सिवा कितनी जगहों पर अच्छे बीज पैदा करने का इन्तजाम किया गया है ।

†श्री शिन्दे : चीनी के मूल्य तभी कम हो सकते हैं जब प्रति एकड़ गन्ने का उत्पादन बढ़ जाये । सरकार प्रयत्न कर रही है कि प्रति एकड़ उत्पादन यथासंभव बढ़ा दिया जाये । ऐसा विचार नहीं है कि किसानों को कम मिले । इसके विपरीत प्रति एकड़ उत्पादन बढ़ जाने पर किसानों की आय तुरन्त बढ़ जायेगी ।

श्री विभूति मिश्र : अध्यक्ष महोदय, मेरे प्रश्न का जवाब नहीं दिया गया है ।

†अध्यक्ष महोदय : प्रश्न काल समाप्त हो गया ।

प्रश्नों के लिखित उत्तर

जहाजी कम्पनियां

†*१६७. श्री त्रिविक्र कुमार चौधरी : क्या परिवहन तथा संचार मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या भारत-यूरोप के दोनों तरफ के व्यापार में लगी हुई तीन भारतीय जहाजी कम्पनियों ने आपस में समझौता कर लिया है कि वह भारत-पोलैंड, भारत-जर्मनी, भारत-रूस, भारत-मिस्र तथा भारत-लेबनान व्यापार में समान रूप से माल का लदान करेंगे तथा समान आय प्राप्त करेंगे ; और

(ख) भारत-यूरोप के दोनों तरफ के व्यापार में लगी हुई भारतीय जहाजी कम्पनियों के बीच समझौता हो जाने से क्या भारतीय कम्पनियों को इस व्यापार का अधिक प्रतिशत कोटा मिल जाने की आशा है ?

†परिवहन तथा संचार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री भगवती) : (क) जानकारी का एक विवरण सभा पटल पर रखा जाता है । **[देखिये परिशिष्ट १, अनुबंध संख्या ३६]**

(ख) केवल भारत-ब्रिटेन व्यापार में भारत का अंश बहुत कम था । परन्तु हाल में ही स्वीकार कर लिया गया है कि १ सितम्बर, १९६२ से भारत का अंश ३९.४७५ प्रतिशत बढ़ा दिया जायेगा और इसके बाद १-१-१९७१ तक वार्षिक वृद्धि से इसको १ प्रतिशत से ४८.४७५ प्रतिशत बढ़ाया जायेगा । इस प्रकार ब्रिटिश और भारतीय जहाज मालिकों में समानता हो जायेगी । इसलिए इस समय और वृद्धि करने का प्रश्न नहीं उठता है ।

---

† मूल अंग्रेजी में

जबलपुर के रास्ते दिल्ली और मद्रास के बीच विमान सेवा

†*१६८. **श्री विद्याचरण शुक्ल :**
श्री बसुमतारी :

क्या **परिवहन तथा संचार** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि मध्य प्रदेश की सरकार ने केन्द्रीय सरकार से निवेदन किया है कि दिल्ली-मद्रास विमान मार्ग पर जबलपुर को भी शामिल कर लिया जाये ; और

(ख) यदि हां, तो सरकार ने इस पर क्या निर्णय किया है ?

†**परिवहन तथा संचार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री मुहीउद्दीन)** (क) जी नहीं ।

(ख) प्रश्न नहीं उत्पन्न होता ।

ऊन के उत्पादन में कमी

†*१६९. **श्री बाल्मीकी** : क्या **खाद्य तथा कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि गत तीन वर्षों में ऊन का उत्पादन कम हो गया है ; और

(ख) यदि हां, तो इसे बढ़ाने के लिये क्या पग उठाये जा रहे हैं ?

†**खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में राज्य-मंत्री (डा० राम सुभग सिंह)** : (क) जी नहीं ।

(ख) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता । परन्तु ऊन के उत्पादन को बढ़ाने के लिए की गई कार्यवाही का एक टिप्पण सभा पटल पर रखा जाता है । **[देखिये परिशिष्ट १, अनुबंध संख्या ३७]**

दक्षिण पूर्व रेलवे प्रशासन में डिवीजन व्यवस्था

†*१७०. **श्री महेश्वर नायक** : क्या **रेलवे** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) दक्षिण पूर्व रेलवे पर डिवीजन व्यवस्था लागू करने में अब तक कितनी प्रगति हुई है ;

(ख) अब तक कौन-कौन से डिवीजन बन गये हैं ; और

(ग) कितने और कहां पर डिवीजन बनाने का विचार है ?

†**रेलवे मंत्रालय में उपमंत्री (श्री शाहनवाज खां)** : : (क) और (ख). खड़गपुर, खुर्दारोड़, वाल्टेयर, बिलासपुर, चक्रधरपुर तथा नागपुर के मुख्यालय बना कर छः से सात डिवीजन बनाने का विचार है ।

(ग) नागपुर में मुख्यालय के द्वारा एक और डिवीजन बनाया जायेगा ।

---

†*मूल अंग्रेजी में*

रेलवे दुर्घटनायें

†*१७१. श्री उमानाथ :
श्री स० मो० बनर्जी :
श्री मोहसिन :
श्री यशपाल सिंह :
श्री नरेन्द्र सिंह महीडा :
श्री कोल्ला वेंकैया :
श्री सुबोध हंसदा :

क्या रेलवे मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सितम्बर और अक्तूबर, १९६२ में दुर्घटनाओं (पटरी से उतरने की घटनाओं सहित) की संख्या पिछले सालों की अपेक्षा कम थी ;

(ख) यदि हां, तो कितनी ;

(ग) सितम्बर और अक्तूबर, १९६२ में कितनी दुर्घटनायें हुईं और उनका क्या ब्यौरा है ; और

(घ) उन्हें रोकने के लिए और आगे क्या कार्यवाही की गई है ?

†रेलवे मंत्रालय में उपमंत्री (श्री सें० वें० रामस्वामी): (क) से (ग). जी हां। टक्करें, पटरी से उतर जाने, लैवल क्रासिंग दुर्घटनायें तथा गाड़ियों में आग आदि की दुर्घटनायें सितम्बर और अक्तूबर, १९६२ में ३०८ थी। जुलाई, अगस्त १९६२ के आंकड़े ३०९ थे और सितम्बर, अक्तूबर, १९६१ में ३४९ थे।

इन ३०८ दुर्घटनाओं के ब्यौरे नीचे दिए जाते हैं :—

यात्री गाड़ियों की टक्करें . .	५
माल गाड़ियों की टक्करें	९
यात्री गाड़ियों का पटरी से उतर जाना . . .	३३
माल गाड़ियों का पटरी से उतर जाना . . .	२२२
यात्री गाड़ियों की लैवल क्रासिंग की दुर्घटनायें . .	१३
माल गाड़ियों की लैवल क्रासिंग की दुर्घटनायें . .	८
यात्री गाड़ियों में आग	१२
माल गाड़ियों में आग	६

(घ) एक विवरण सभा पटल पर रखा जाता है। [देखिये परिशिष्ट १, अनुबंध संख्या ३८]

---

†मूल अंग्रेजी में

इमारती तथा अन्य लकड़ी की आवश्यकता

†*१७२. श्री प्र० चं० बरुआ :
श्री सुरेन्द्रपाल सिंह :
श्री मराज :
श्री अ० क० गोपालन ;

क्या खाद्य तथा कृषि मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या तृतीय पंचवर्षीय योजनावधि में सात लाख एकड़ भूमि में पेड़ लगाने की योजना है जिससे देश की इमारती तथा अन्य प्रकार की लकड़ी की बढ़ती हुई आवश्यकता को पूरा किया जा सके ;

(ख) यदि हां, तो योजना के अधीन इस योजना के लिये कितनी रकम आवंटित की गई है ;

(ग) यह पेड़ कहां पर लगाये जायेंगे; और

(घ) इस सम्बन्ध में अब तक क्या कार्यवाही की गई है ?

†खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (डा० राम सुभग सिंह): (क) जी हां। तीसरी पंचवर्षीय योजना में राज्यों और संघ क्षेत्रों में लगभग ७ लाख एकड़ में बागान बनाने का विचार है। इसके अतिरिक्त जल्दी बढ़ने वाले पौदों को १.३७ लाख एकड़ में उगाने का केन्द्रीय कार्यक्रम है ।

(ख) बागान लगाने के कार्यक्रम के लिये १०५६ लाख रुपये तथा केन्द्रीय कार्यक्रम के लिये २७५ लाख रुपये ।

(ग) जहां पर भी बेकार भूमि पड़ी है और वनों के कम वृक्षों वाले भाग में ।

(घ) १९६१–६२ में उड़ीसा, उत्तर प्रदेश और मनीपुर को निकाल कर अन्य राज्यों में ८७.००० एकड़ भूमि। में उल्लिखित राज्यों के आंकड़े मालूम नहीं हैं। १९६२–६३ का लक्ष्य एक लाख एकड़ है। केन्द्र के कार्यक्रम के अधीन १९६१–६२ में लगभग २३५३ एकड़ और १९६२–६३ के लिये २६,००० एकड़ के लक्ष्य थे ।

फतहपुर सीकरी में हैंगिंग गार्डन

†२९९. श्री दी० चं० शर्मा : क्या परिवहन तथा संचार मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) फतेहपुर-सीकरी में हैंगिंग गार्डनन्स बनाने की योजना में अब तक क्या प्रगति हुई है; और

(ख) वह संभवत: कब तक पूरी हो जायेगी ?

†परिवहन तथा संचार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री भगवती) : (क) और (ख). फतेहपुर-सीकरी में पानी की कमी एक मुख्य समस्या है। फिर भी, उत्तर प्रदेश सरकार फतेहपुर-सीकरी में पानी की सप्लाई बढ़ाने के लिये कार्यवाही कर रही है और वहां रेस्ट-हाउस में पीने के पानी की नियमित सप्लाई की व्यवस्था करना संभव हो गया है। फतेहपुर-सीकरी में हैंगिंग गार्डन के लिये

†मूल अंग्रेजी में

पर्याप्त पानी उपलब्ध होगा या नहीं इस प्रश्न की छानबीन राज्य सरकार की सलाह से की जा रही है ।

दिल्ली में प्राणकीय उद्यान[1]

†३००. श्री दी० चं० शर्मा : क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि दिल्ली में प्राणकीय उद्यान स्थापित करने की दिशा में और क्या प्रगति हुई है और उस पर कितनी रकम खर्च की गई है ?

†खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में राज्य–मंत्री (डा० राम सुभग सिंह) : विवरण संलग्न है। [देखिये परिशिष्ट १, अनुबंध संख्या ३६]

कोको की खेती

†३०१. { श्री अ० क० गोपालन :
श्री प० कुन्हन :

क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) विभिन्न राज्यों ने कोको की खेती की परियोजना के सम्बन्ध में क्या प्रगति की है ;

(ख) क्या संबंधित राज्य सरकारों ने कोको की खेती के लिये कोई योजना तैयार की है; और

(ग) यदि हां, तो उसका ब्योरा क्या है ?

†खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में राज्य-मंत्री (डा० रामसुभग सिंह) : (क) से (ग). तीसरी योजना के दौरान, मद्रास और मैसूर राज्यों में अग्रिम योजनाओं के साथ केरल राज्य में कोको के विकास की एक योजना शुरू की जा रही है। इसके अलावा भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् ने कोको की किस्मों के अग्रिम परीक्षण आरंभ करने की एक योजना मंजूर की है जो आसाम, उड़ीसा और त्रिपुरा राज्यों में कार्यान्वित की जायेगी। इस योजना के अधीन महाराष्ट्र राज्य भी ओरिओलो किस्म से कोको की खेती आरंभ करेगा और आन्ध्र प्रदेश में एक बगीचा बनाया जायेगा जिसमें विदेशों से मंगाये गये चुनिन्दे पौध लगाये जायेंगे।

योजना शुरू करने के लिये प्रारम्भिक काम जैसे जगह चुनना, मद्रास में जारी है। अनुमान है कि केरल राज्य शीघ्र ही इस योजना को कार्यान्वित कर देगा। मैसूर राज्य इस योजना पर अपनी स्वीकृति पहले ही दे चुका है।

कोको की किस्मों के अग्रिम परीक्षण आरंभ करने के लिये भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा स्वीकृत योजना सम्बन्धित राज्यों को भेज दी गई है ताकि व वित्तीय ब्योरे तयार कर लें। उनके अनुमान प्राप्त होने के बाद तुरन्त ही यह योजना मंजूर कर ली जायेगी।

इस बीच, चुनिन्दे पौध रायल बॉटनिकल गार्डन्स, क्यू, रूरे (ब्रिटेन) से प्राप्त हो चुके हैं और वह आन्ध्र प्रदेश में रामचन्द्रपुरम् में लगाये जाने के लिये भज दिये गये हैं। फारेस्ट्रो कोको के लगभग २७५ पौंड बीज मलाया से मंगाये जा चुके हैं और ये बीज पहले उड़ीसा राज्य में लगाये जायेंगे और तब धीरे-धीरे छोटे बीज दूसरे राज्यों में पहुंचायें जायेंगे।

---

†मल अंग्रेजी में

[1] Zoological Park

केरल, मद्रास और मैसूर में तीसरी योजना के दौरान इस योजना पर संभावित व्यय इस प्रकार है :

केरल	४,३१,०३० रुपये
मद्रास	४६,५८० रुपये
मैसूर	३८,०३२ रुपये ।

भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् की योजना कुल ६,६६,००० रुपये की लागत से आसाम, उड़ीसा, त्रिपुरा, महाराष्ट्र और आन्ध्र प्रदेश में कार्यान्वित की जाती है। इसका सारा खर्च परिषद् उठायेगी ।

कोचीन और त्रिवेन्द्रम में हवाई अड्डा

†३०२. श्री अ० क० गोपालन :
श्री प० कुन्हन :
श्री मे० क० कुमारन :

क्या **परिवहन तथा संचार** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या कोचीन और त्रिवेन्द्रम में हवाई अड्डे वाइकाउन्ट हवाई जहाजों के लिये और बढ़ाये जा रहे हैं; और

(ख) यदि हां, तो निर्माण कार्य कब तक पूरा हो जायेगा ?

†**परिवहन तथा संचार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री मुहीउद्दीन)**: (क) और (ख). त्रिवेन्द्रम हवाई अड्डे की हवाई पट्टी बढ़ायी जा रही है ताकि वाइकाउन्ट और स्काइमास्टर ढंग के विमानों के इस्तेमाल के लिये उसे उपयुक्त बनाया जाये। अनुमान है कि वह मार्च, १९६३ तक पूरा हो जायेगा।

कोचीन में हवाई पट्टी बढ़ाने की कोई योजना नहीं है ।

तिरूनेलवेली से कन्याकुमारी तक रेलवे लाइन का बढ़ाया जाना

†३०३. श्री मे० क० कुमारन :
श्री अ० क० गोपालन :
श्री प० कुन्हन :

क्या **रेलवे** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) तिरूनेलवेली से कन्याकुमारी तक रेलवे लाइन बनाने की योजना किस दशा में है ; और

(ख) क्या त्रिवेन्द्रम-कन्याकुमारी लाइन इसी के साथ-साथ बनायी जायेगी ?

†**रेलवे मंत्रालय में उपमंत्री (श्री सें० वें० रामस्वामी)** : (क) और (ख). तिरूनेलवेली-कन्याकुमारी या त्रिवेन्द्रम-कन्याकुमारी लाइन तीसरी पंचवर्षीय योजना में नई लाइनें बनाने के रेलवे के कार्यक्रम में शामिल नहीं है ।

---

†मूल अंग्रेजी में

त्रिपुरा में औषधालय और अस्पताल

†३०४. **श्री दशरथ देब :** क्या **खाद्य तथा कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) त्रिपुरा में कितने पशुचिकित्सा-अस्पताल और औषधालय हैं ;

(ख) अमेरपुर और कंचापुर के आदिमजाति विकास खंडों और छाओमोनू तथा छोरटकापा की दुर्गम तहसीलों में ऐसे कितने औषधालय हैं ; और

(ग) इन क्षेत्रों में और ऐसे औषधालय खोलने के लिए क्या कदम उठाये गये हैं ?

†**खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री अ० म० थामस):** (क)

(१) पशुचिकित्सा अस्पताल	कोई नहीं
(२) पशुचिकित्सा औषधालय	११
(३) ग्रामीण पशुचिकित्सा औषधालय	१
(४) चलता फिरता पशुचिकित्सा एकक . . .	१
(५) पशुचिकित्सा एकक (आदिम जाति कल्याण) . .	५
(६) स्टाकमैन सेन्टर	५

(ख) **अमेरपुर आदिमजाति विकास खंड**

(१) पशुचिकित्सा औषधालय	१
(२) पशुचिकित्सा एकक	२

कंचापुर आदिम जाति विकास खंड, छाओमोनू तहसील और घोरटकापा तहसील में फिलहाल कोई पशुचिकित्सा औषधालय नहीं है।

(ग) तीसरी पंचवर्षीय योजना में अगरतल्ला में एक पूर्णतः सुसज्जित पशुचिकित्सा अस्पताल, पांच ग्रामीण पशुचिकित्सा औषधालय, पांच स्टाकमैन सेन्टर्स, दो पशुचिकित्सा एकक और एक चलता फिरता पशुचिकित्सा एकक स्थापित करने का विचार है। ये केन्द्र और एकक स्थापित करते समय उन क्षेत्रों पर उचित ध्यान दिया जायगा जो वर्तमान पशुचिकित्सा एककों के अन्तर्गत नहीं आते।

त्रिपुरा में कपास की खेती

†३०५. **श्री दशरथ देब :** क्या **खाद्य तथा कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) तीसरी पंचवर्षीय योजना की अवधि में कपास की खेती के विकास के लिये त्रिपुरा में कौन कौन सी योजनाएं मंजूर की गयी हैं ?

(ख) क्या इनमें से कोई योजना कार्यान्वित की गयी है ; और

(ग) यदि नहीं तो उसके कारण क्या हैं ?

†**खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री अ० म० थामस):** (क) अभी तक ऐसी कोई योजना मंजूर नहीं की गयी है। कुल १.४२ लाख रुपये की लागत से तीसरी पंचवर्षीय

†मूल अंग्रेजी में

योजना के दौरान "कोमिला" कपास की खेती के विकास की एक योजना पर भारतीय केन्द्रीय कपास समिति विचार कर रही है और वह स्वीकृत हो जाने पर कार्यान्वित की जायगी।

(ख) और (ग). प्रश्न उपन्न नहीं होते।

पंचायत अध्यक्षों के लिए प्रशिक्षण केन्द्र

†३०६. **श्री इ० मधुसूदन राव :** क्या **सामुदायिक विकास, पंचायती राज और सहकार** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) प्रत्येक राज्य में पंचायत अध्यक्षों के प्रशिक्षण केन्द्रों के नाम क्या हैं ; और

(ख) प्रत्येक राज्य में इन केन्द्रों में अब तक कुल कितने पंचायत अध्यक्षों को प्रशिक्षण प्राप्त हो चुका है ?

†**सामुदायिक विकास, पंचायती राज और सहकार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री ब० स० मूर्ति):** (क) प्रत्येक राज्य में सरपंचों, उपसरपंचों, खंड पंचायत समितियों / खंड विकास समितियों के सदस्यों, पंचों और अंशकालिक पंचायत सचिवों के प्रशिक्षण के लिये अब तक स्थापित किये गये / स्थापित किये जाने लाले पंचायती राज प्रशिक्षण केन्द्रों की सूची संलग्न है। **[देखिये परिशिष्ट १, अनुबन्ध संख्या ४०]**

(ख) जानकारी राज्यों से इकट्ठी की जा रही है।

आन्ध्र में राष्ट्रीय राजपथ

†३०७. **इ० मधुसूदन राव :** क्या **परिवहन तथा संचार** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि आंन्ध्र प्रदेश में (जिलेवार) तीसरी पंचवर्षीय योजना की अवधि में कुल कितने मील राष्ट्रीय राजपथ बनाये जाने वाले हैं ?

†**परिवहन तथा संचार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री भगवती):** जानकारी इकट्ठी की जा रही है और वह सभा पटल पर रख दी जायगी।

हवाई अड्डा पदाधिकारियों के लिए प्रशिक्षण केन्द्र

†३०८. **श्री इ० मधुसूदन राव:** क्या **परिवहन तथा संचार** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि आन्ध्र प्रदेश में ममनूर में हवाई अड्डा पदाधिकारियों के लिये एक प्रशिक्षण केन्द्र खोलने के सबंध में अब तक क्या प्रगति हुई है ?

†**परिवहन तथा संचार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री मोहीउद्दीन):** आन्ध्र प्रदेश में ममनूर में हवाई अड्डा पदाधिकारियों के लिए एक प्रशिक्षण केन्द्र खोलने की कोई योजना नहीं है।

---

†मूल अंग्रेजी में

डाक-तार कर्मचारी

†३०९. { **श्री बूटा सिंह :**
श्री गुलशन:

क्या **परिवहन तथा संचार** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) डाकतार विभाग द्वारा अपने कर्मचारियों पर भारत में अदालतों में कितने अभियोग चलाये गये और २० अगस्त, १९६२ को कितने मुकदमे जारी थे ।

(ख) ऐसे कितने मामले हैं जिनमें अदालतों ने संबंधित कर्मचारियों को जुर्म से बरी कर दिया है लेकिन डाक-तार विभाग ने उन्हें फिर से काम पर रखने का निश्चय नहीं किया है ?

(ग) उपर्युक्त भाग (क) और (ख) के मामलों में अनुसूचित जातियों के कर्मचारी कितने थे ; और

(घ) इस मामले में सरकार ने क्या कार्यवाही की है ?

†**परिवहन तथा संचार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री भगवती):** (क) से (घ). जानकारी इकट्ठी की जा रही है और वह सभा पटल पर रख दी जायेगी ।

दिल्ली में डाक-तार विभाग के क्वार्टर

†३१०. { **श्री बूटा सिंह:**
श्री गुलशन:

क्या **परिवहन तथा संचार** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) ऐसे कितने आदमी हैं जिनके दिल्ली निगम सीमा में अपने मकान हैं और जिन्हें डाक-तार विभाग के क्वार्टर्स दिये गये हैं ;

(ख) डाक-तार विभाग के ऐसे कितने कर्मचारी हैं जिन्हें डाक-तार विभाग के क्वार्टर्स दिये गये हैं लेकिन जो उन सरकारी कर्मचारियों के साथ रह रहे हैं जो वेतन के अनुसार सिर्फ रियायती किराया ही दे रहे हैं ; और

(ग) दिली में १५ वर्ष से अधिक नौकरी वाले, २० अगस्त, १९६२ को ऐसे कितने डाक-तार कर्मचारी थे जिन्हें डाक-तार विभाग के क्वार्टर्स नहीं दिये गये हैं ?

†**परिवहन तथा संचार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री भगवती):** (क) से (ग). जानकारी इकट्ठी की जा रही है और वह सभा पटल पर रख दी जायेगी ।

---

†मूल अंग्रेजी में

जापानी ढंग से खेती के लिए जमीन

†३११. डा० पू० ना० खां :
श्री सुबोध हंसदा :
श्री स० चं० सामन्त :

क्या **खाद्य तथा कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि दूसरी योजना की अवधि में ८० लाख एकड़ जमीन में जापानी तरीके से खेती की गयी है ;

(ख) यदि हां, तो क्या उस जमीन से पैदावार बढ़ गयी है ;

(ग) कुल कितनी वृद्धि हुई है और जापान के उत्पादन के मुकाबले में वह ज्यादा है या कम ; और

(घ) यदि वह कम है तो उसके कारण क्या हैं ;

†**खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (डा० राम सुभग सिंह)**: (क) जी हां, लगभग ८१.५ लाख एकड़ जमीन।

(ख) जी हां।

(ग) अनुमान है कि परंपरागत तरीके से प्राप्त पैदावार से लगभग १२ मन फ़ी एकड़ की औसतन वृद्धि के आधार पर, १९६०–६१ में जापानी ढंग से धान की खेती की जाने पर लगभग ३५ लाख टन अतिरिक्त धान हुआ है।

उसी अवधि में जापान में लगभग ५०.६ मन प्रति एकड़ पैदावार हुई जब कि भारत में जापानी तरीके से खेती की जाने पर २८.३ फी एकड़ पैदावार हुई।

(घ) भारत में धान की पैदावार जापान की तुलना में कम हुई और उसके कारण निम्नलिखित थे :—

(१) चावल की खेती के अधीन ८ करोड़ एकड़ जमीन में से सिर्फ $^{1}/_{5}$ हिस्से में सिंचाई होती है और बाकी $^{3}/_{5}$ हिस्सा पूरी तरह से मौसम पर निर्भर है, जहां कोइ सिंचाई नहीं की जाती जबकि जापान में $^{4}/_{5}$ हिस्से में सिंचाई होती है और सिर्फ $^{1}/_{5}$ हिस्से में सिंचाई नहीं होती।

(२) चावल की खेती के अतर्गत काफ़ी बड़ा क्षेत्र होने के कारण, कम उपजाऊ कई सीमान्त जमीनों में चावल की खेती की गयी है। ऐसी जमीनों में स्वाभाविक ही औसत पैदावार कम हो जाती है।

(३) भारत के किसानों ने चावल के पर्याप्त खाद देने का तरीका नहीं अपनाया है। अधिक से अधिक खाद देकर अधिक से अधिक पैदावार की संभावना का उपयोग किसानों ने नहीं किया है। भारत में चावल की फ़सल के लिये दिये जाने वाले नाइट्रोजन और फ़ास्फ़ेट जैसे औसत पदार्थ जापान की तुलना में बहुत कम हैं।

---

†मूल अंग्रेजी में

इंडियन एयरलाइन्स कारपोरेशन के लिए "ट्राइडेन्ट" विमान

†३१२. **श्री यशपाल सिंह** : क्या **परिवहन तथा संचार** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या 'डो हेवीलैन्डस्' (इंग्लैंड) ने इंडियन एयरलाइन्स कारपोरेशन के इस्तेमाल के लिए 'ट्राइडेन्ट' विमान सप्लाई करने का प्रस्ताव भारत सरकार को भेजा है ;

(ख) क्या सरकार इस प्रस्ताव पर विचार कर रही है ; और

(ग) यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है ?

†**परिवहन तथा संचार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री मुहीउद्दीन)**: (क) से (ग). मेसर्स डी हेवीलैन्ड्स ने इंडियन एयरलाइन्स कारपोरेशन के हाथ कई पुराने वाइकाउन्ट बेचने का प्रस्ताव रखा है बशर्ते कि कारपोरेशन उस के ट्राइडेन्ट विमान खरीदने के लिए एक ठेके पर हस्ताक्षर करे। अभी तक यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया गया है।

उत्तर रेलवे के बिना चौकीदार वाले लेवल क्रासिंग

†३१३. **श्री यशपाल सिंह** : क्या **रेलवे** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) उत्तर रेलवे में ऐसे कितने लेवल क्रासिंग हैं जिन पर कोई चौकीदार नहीं होते ; और

(ख) सरकार इस बात के लिये क्या कारवाई कर रही है कि उन लेवल क्रासिंग्स को पहरेदार वाले लेवल क्रासिंग में बदल दिया जाये ?

†**रेलवे मंत्रालय में उपमंत्री (श्री सें० वें० रामस्वामी)** : (क) और (ख). उत्तर रेलवे में, बगैर चौकीदार के लगभग २८५० लेवल क्रासिंग हैं। इस में "डी" क्लास क्रासिंग और फुटपाथ क्रासिंग शामिल नहीं है। यह पता लगाया गया है कि इन में से लगभग १९१ क्रासिंग पर सड़क यातायात बढ़ जाने के कारण पहरेदारों की जरूरत है। रेलव मत्री ने अभी संबंधित राज्यों के मुख्य मंत्रियों से प्रार्थना की है कि उन के राज्यों में इन लेवल क्रासिंग पर पहरेदार रखने के प्रारंभिक तथा वार्षिक आवर्तक व्यय में से आधा वें दें क्योंकि औद्योगिक विकास और अधिक सड़क यातायात के लाभ उन्हें भी मिलते हैं। उन से अभी उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है। इस योजना पर राज्य सरकारों की स्वीकृति मिलने पर तुरन्त ही उत्तर रेलवे प्रशासन काम शुरु कर देगा।

कोयला लाने ले जाने के लिए 'बाक्स' टाइप के माल डिब्बे

†३१४. **श्री यशपाल सिंह** : क्या रेलवे मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या इस तरह की कोई शिकायतें आयी हैं कि इस देश के कोयले में विशिष्ट घनत्व वाला कोयला लाने ले जाने के लिए बी० ओ० एक्स० माल डिब्ब उपयुक्त नहीं हैं ;

(ख) क्या बी० ओ० एक्स० माल डिब्बों में परिवर्तन करने की कोई योजना है ; और

(ग) क्या यह सच है कि एक भारतीय विशेषज्ञ ने बी० ओ० एक्स० माल डिब्बों के प्रयोग के विरुद्ध सरकार को सलाह दी थी ?

†**रेलवे मंत्रालय में उपमंत्री (श्री सें० वें० रामस्वामी)**: (क) जी नहीं।

---

†मूल अंग्रेजी में

(ख) सभी प्रकार के इंजन डिब्बों में परिवर्तन सुधार की निरन्तर प्रक्रिया है। फिर भी, बी० ओ० एक्स० ढंग के माल डिब्बों में सुझाया गया कोई भी परिवर्तन ऊपर भाग (क) में उठाये गये प्रश्न से किसी प्रकार भी संबद्ध नहीं है।

(ग) जी नहीं ।

ब्रिटेन से आयात पर माल भाड़ा छूट

†३१५. **श्री प्र० चं० बरुआ :** क्या **परिवहन तथा संचार** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या भारत और ब्रिटेन/यूरोप —भारत/पाकिस्तान सम्मेलन की सरकारों के बीच लन्दन में एक करार पर हस्ताक्षर किये गये हैं जिस में ब्रिटेन और यूरोप से सम्मेलन के जहाजों द्वारा भारत सरकार की ओर से किये गये आयात पर ५ प्रतिशत अतिरिक्त मालभाड़ा छूट दी गयी है ;

(ख) यदि हां, तो उस करार की ठीक ठीक शर्तें क्या हैं ; और

(ग) इस से आगामी वर्ष में सरकारी राजस्व में कहां तक बचत होगी ?

†**परिवहन तथा संचार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री भगवती) :** (क) जी, हां ।

(ख) चूंकि यह करार गोपनीय है इसलिए उसकी शर्तें बताना लोकहित में नहीं होगा।

(ग) अनुमान है कि अगले पांच वर्षों में औसतन सालाना ५० लाख रुपये की बचत होगी।

आसाम में संचार सेवाओं का विस्थापन

†३१६. **श्री प्र० चं० बरुआ :** क्या **परिवहन तथा संचार** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि १९ अगस्त, १९६२ के बाद लगभग दो सप्ताह तक धकुआ खाना डाक घर के आस पास के इलाके का शेष देश से कोई डाक संबंध नहीं रहा ;

(ख) क्या इन दिनों में भुगतान भी नहीं हुआ जिसके कारण बाढ़ग्रस्त व्यक्तियों को कठिनाई हुई ;

(ग) यदि हां, तो स्थिति का मुकाबला करने के लिए क्या कदम उठाये गये थे ; और

(घ) क्या आसाम के अन्य क्षेत्रों की भी इस वर्ष उस समय जब कि राज्य में बड़े पैमाने पर बाढ़ आई हुई थी, यही स्थिति थी और यदि हां, तो ऐसा प्रभाव किन क्षेत्रों पर पड़ा ?

†**परिवहन तथा संचार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री भगवती) :** (क) हां। १८–८–१९६२ से ३०–८–६२ तक डाक संचार बन्द रहा ।

(ख) हां, श्रीमान।

(ग) बाढ़ के समय संचार के सभी साधनों के बिगड़ने तथा पुलिस सुरक्षा के उपलब्ध न होने के कारण धन की पूर्ति नहीं हो सकी। फिर भी, संचार के पुनः स्थापित होने और पुलिस सुरक्षा के मिलने पर धन डाकघर भेज दिया गया ।

(घ) हां। एक विवरण सभा पटल पर रखा जाता है। [देखिये परिशिष्ट १, अनुबन्ध संख्या ४१]

---

†तूल अंग्रेजी में

छोटे सिंचाई कार्य

†३१७. श्री दी० चं० शर्मा :
श्री भा० दा० देशमुख :
श्री शिवाजी राव शं० देशमुख :
श्री जु० शं० पाटिल :
श्री जेधे :
श्री रावनदले :
श्री वि० दु० पाटिल :
श्री किशन वीर :
श्री तुलशीदास जाधव :

क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या केन्द्र ने सभी राज्य सरकारों तथा प्रशासनों से राज्य की योजनाओं में पहले से सम्मिलित छोटी सिंचाई के अपने प्रोग्रामों का पुनरीक्षण करने, द्रुत कार्यवाही के लिए उन्हें पुनः बनाने और यह बताने के लिये कहा है कि वे तीसरी योजना-काल में और क्या प्रोग्राम ले सकते हैं ;

(ख) क्या उन से उतने अधिक आवंटन के विशिष्ट प्रस्तावों को २० सितम्बर से पहले भेजने को भी कहा गया है जिसे वे चालू वित्त वर्ष के शेष महीनों में प्रयोग कर सकेंगे ; और

(ग) यदि हां, तो राज्यवार क्या उत्तर आये हैं ?

†खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री अ० म० थामस) : (क) और (ख). हां।

(ग) सिंचाई के छोटे प्रोग्रामों के अन्तर्गत चालू वित्त वर्ष के शेष मासों में प्रयोग किये जाने के लिए धन के अधिक आवंटन के राज्य सरकारों से प्राप्त हुए प्रस्ताव निम्न हैं :—

राज्य का नाम	अपेक्षित अधिक आवंटन (लाख रु०)
१. आन्ध्र प्रदेश	११८.००
२. आसाम	१४.२०
३. बिहार	११०.०८
४. गुजरात	२०.००
५. केरल	१७.००
६. मध्य प्रदेश	५८.६१
७. महाराष्ट्र	४८.६४
८. मैसूर	३९७.००
९. उडीसा	४१.४९
१०. पंजाब	२८.००
११. राजस्थान	११५.००
योग	९६८.०२

†मूल अंग्रेजी में

उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बंगाल सरकारों को चालू वित्त वर्ष में अधिक आवंटन की आवश्यकता नहीं है। मद्रास तथा जम्मू और काश्मीर राज्यों से अभी कोई उत्तर नहीं आया है।

प्रत्येक राज्य सरकार की पिछली कार्यवाही और उसके प्रोग्राम को ध्यान में रखकर भारत सरकार ने अभी तक विभिन्न राज्य सरकारों को ५९३·१५ लाख रु० का अधिक आवंटन किया है।

पशु धन

३१८. **श्री प्रकाशवीर शास्त्री :**
श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती :

क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या तीसरी पंचवर्षीय योजना में पशु धन की रक्षा की और उसे बढ़ाने का कोई कार्यक्रम तैयार किया गया है ;

(ख) क्या यह सच है कि पशुओं में गायों की हालत बहुत खराब है जिससे देश की अर्थ-व्यवस्था पर बुरा प्रभाव पड़ता है और क्या इस के कारणों का पता लगाया गया है ;

(ग) यदि हां, तो सरकार की इस सम्बन्ध में क्या प्रतिक्रिया है ; और

(घ) क्या गायों की हालत खराब होने से दूध और घी के उत्पादन पर प्रभाव पड़ा है और यदि हां, तो कितना और किस रूप में ?

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उप मंत्री (श्री अ० म० थामस) : (क) जी हां।। तीसरी पंचवर्षीय योजना में विभिन्न योजनायें शामिल की गई हैं जिनका अभिप्राय प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से देश के पशु धन की उन्नति करना है ।

(ख) और (ग). पिछले वर्षों में ऐसी कोई रिपोर्ट नहीं मिली है जिससे कि पशुओं की खराब हालत का पता लगे। दूसरी ओर विभिन्न पशु विकास योजनाओं को क्रियान्वित करने से विभिन्न राज्यों, विशेषकर मद्रास के कंगायम क्षेत्र, महाराष्ट्र के खिलार और दोयनी क्षेत्र, गुजरात के कांकरेज क्षेत्र, पश्चिमी उत्तर प्रदेश के हरियाना क्षेत्र, पश्चिम बंगाल के हुगली तथा बेलडांगा क्षेत्रों और उड़ीसा के हनाना क्षेत्रों में अच्छी नस्ल के पशुओं के पाकेट विकसित हो गए हैं।

(घ) विपणन तथा निरीक्षण निदेशालय के एक तदर्थ दुग्ध उत्पादन के अनुमान के अनुसार देश में दुग्ध उत्पादन जोकि १९५१ में ४६६३.५ लाख मन था वह १९५६ में बढ़ कर ५२८२·६ लाख मन तक जा पहुंचा और घी उत्पादन जोकि १९५१ में १०३·०८ लाख मन था वह १९५६ में बढ़कर १०६·०० लाख मन तक जा पहुंचा । उस के पश्चात् दुग्ध उत्पादन का कोई अनुमान नहीं लगाया गया है । परन्तु १९५६ की दुग्ध उत्पादन की उसी औसत तथा १९६१ की पशुधन गणना को ध्यान में रखते हुए, १९६१ में दुग्ध उत्पादन लगभग ५८११.८ लाख मन होता है।

एशिया के लिये संयुक्त आयोजन

†३१९. **श्री विश्राम प्रसाद** : क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने खाद्य तथा कृषि संगठन के महानिदेशिक के इस वक्तव्य पर जो उन्होंने एशिया के लिये संयुक्त आयोजन का समर्थन करते हुए दिया था, बयान दिया है कि "अत : इस प्रदेश की आवश्यकताओं का आयोजन तथा पूर्ति काल्पनिक उपायों के लिये तथा उनके

†मूल अंग्रेजी में

द्वारा किया जाना चाहिये जिनमें सहकारी कार्य की योजनाओं तथा दायित्वों का ध्यान अवश्य रखना चाहिये ; और

(ख) यदि हां, तो उनके सुझाव को लागू करने के लिये क्या कार्यवाही की जा रही है ?

†**खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री राम सुभग सिंह)** : (क) हां। खाद्य तथा कृषि संगठन का एशिया तथा सुदूरपूर्व के लिये छटा अधिवेशन कोयला लम्पुर में १५ से २९ सितम्बर, १९६२ तक हुआ था। इसमें इस बात पर विचार किया गया था और इस प्रदेश की सभी सदस्य सरकारों से आग्रह किया गया था कि वे अपनी राष्ट्रीय योजनाओं को बनाते तथा पुनरीक्षित करते समय अन्य देशों की योजनाओं का ध्यान रखें। फिर भी, अभी तक कान्फ्रेंस की रिपोर्ट नहीं आई है।

(ख) खाद्य तथा कृषि संगठन के छंटे प्रादेशिक कान्फ्रेंस की सिफारिशों पर उचित समय पर विचार किया जायेगा।

दूसरा शिपयार्ड

†३२०. **श्री स० मो० बनर्जी :**
श्री उमानाथ :

क्या **परिवहन तथा संचार** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) दूसरा शिपयार्ड के निर्माण में क्या प्रगति हुई है ;

(ख) इस असाधारण विलम्ब का क्या कारण है ; और

(ग) क्या तीसरी योजना काल में इसके स्थापित होने की संभावना है ?

†**परिवहन तथा संचार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री भगवती)** : (क) और (ख). परियोजना के लिये अपेक्षित लगभग ६३ एकड़ भूमि प्राप्त कर ली गई है। इसके लिये विदेशी सहयोग प्राप्त करने का निरन्तर प्रयास किया जा रहा है। विदेशी सहयोग प्राप्त होने तक, शिपयार्ड के निर्माण में कोई विशेष प्रगति नहीं हो सकती। दि मितसुविशि शिप बिल्डिक एण्ड इंजीनियरिंग लि०, टोकियो, जापान ने इस बात की जांच पड़ताल करने के लिये एक टैक्निकल विशेषज्ञ दल भेजने का प्रस्ताव किया है कि परियोजना के कार्य में कैसे प्रगति हो सकती है।

(ग) नियुक्त होने वाले टैक्निकल सलाहकारों की परियोजना रिपोर्ट प्राप्त होने पर इस बात का पता लगेगा कि शिपयार्ड कब स्थापित होगा।

डाक तथा तार विभाग के कार्यकुशल कर्मचारियों को पुरस्कार

३२१. **श्री भक्त दर्शन :**
श्री भागवत झा आजाद :

क्या **परिवहन तथा संचार** मंत्री २० अगस्त, १९६२ के अतारांकित प्रश्न संख्या ११३३ के उत्तर के संबंध में यह बताने की कृपा करेंगे कि डाक तथा तार विभाग के कार्यकुशल कर्मचारियों को पुरस्कार देने के संबंध में जो प्रस्ताव विचाराधीन था उसकी अब तक क्या प्रगति हुई है ?

---

†मूल अंग्रेजी में

परिवहन तथा संचार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री भगवती) : टेलीटाइपिस्टों तथा टेलीग्राफमैनों के अतिरिक्त अन्य डाक-तार कर्मचारियों को किस रूप में प्रोत्साहन दिया जाये, यह अभी भी विचाराधीन है।

इस संबंध में डाक तथा रेल-डाक सेवा की शाखाओं के लिये अलग-अलग समितियां स्थापित कर दी गयी हैं जोकि इस योजना की जांच करेंगी तथा किस रूप में प्रोत्साहन दिया जाय, इस बारे में अन्तिम निर्णय इन समितियों की रिपोर्ट या सिफारिशों के प्राप्त होते ही ले लिया जायेगा।

टेलीटइपिस्टों को उनके एक सप्ताह में निर्धारित काम से अधिक निपटाये गए सभी संदेशों के लिये २ नये पैसे प्रति दूर मुद्रक परिचालन की दर से प्रोत्साहन नकदी दी जाती है।

टेलीग्राफमैनों को जो कि तार तथा एक्सप्रैस पत्र बांटते हैं निम्नवर्ती दरों पर प्रोत्साहन नकदी दी जाती है :—

(१) हर महीने ३५० से अधिक बांटे गये प्रत्येक तार के लिये ५ नये पैसे।

(२) एक महीने में ६०० से अधिक बांटे गये तारों के लिये १० रुपये प्रति मास का कार्यदक्षता अधिलाभ (बोनस) ।

(३) एक महीने में किये गये ७५ ट्रिप से अधिक प्रत्येक ट्रिप के लिये ५ नये पैसे की ट्रिप प्रोत्साहन नकदी दी जाती है बशर्ते कि उसी महीने में बांटे गये तारों की संख्या ५०० के प्रतिमान से अधिक हो।

पंचायत समितियों को सहायता

†३२२. **श्रीमती रेणुका राय** : क्या **सामुदायिक विकास, पंचायती राज और सहकार** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या पंचायत समितियों को कल्याण-कार्य के लिये कोई धन दिया गया है ; और

(ख) यदि हां, तो यह सुनिश्चित करने के लिये क्या प्रबन्ध किया गया है कि इस धन का प्रयोग समाज के पिछड़े वर्गों का उत्थान करने के लिये होता है ?

†**सामुदायिक विकास, पंचायती राज और सहकार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री ब० सू० मूर्त्ति)** : (क) और (ख). जानकारी एकत्रित की जा रही है और सभा पटल पर रखदी जायेगी।

पाल वाले जहाज

†३२३. **श्री कोल्ला वेंकैया** : क्या **परिवहन तथा संचार** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या भारत सरकार ने मसूपटम में पाल वाले मशीनी जहाजों के निर्माण के लिये एक औद्योगिक सम्पदा के स्थापन के लिये राज्य सरकार को निदेश दिया है ;

(ख) क्या पाल वाले जहाजों के विकास के लिये राज्य सरकार के साथ एक निकम बनाने का कोई प्रस्ताव है ; और

(ग) औद्योगिक बस्ती तथा निगम के लिये संघ सरकार ने कितनी सहायता दी है ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†परिवहन तथा संचार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री भगवती) : (क) नहीं, श्रीमान्। मसूलीपटम में औद्योगिक बस्ती राज्य सरकार बना रही है। सरकार यह कार्यवाही छोटे पैमाने के उद्योगों के संवर्धन तथा विकास के लिये सहायता प्रदत्त गैर-सरकारी औद्योगिक बस्तियों की स्थापना को प्रोत्साहन देने की अपनी नीति के अनुसरण में कर रही है।

(ख) नहीं, श्रीमान्।

(ग) जहाँ तक कि मसूलीपटम में औद्योगिक बस्ती का संबंध है, संघ सरकार आवश्यक टैक्निकल पथ-प्रदर्शन तथा सहायता दी जा रही है।

काशीपुर के निकट रेल-दुर्घटना की जांच

३२४. **श्री भक्त दर्शन :**
श्री भागवत झा आजाद :

क्या रेलवे मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) गत ९ अगस्त को काशीपुर (जिला नैनीताल) के समीप लालकुंआ-मुरादाबाद पैसेंजर से एक बिना चौकीदार के समपार पर उ० प्र० गवर्नमेंट रोडवेज की एक बस की टक्कर हो जाने से जो ड्राइवर वहीं मर गया था और कई मुसाफिर घायल हो गये थे, उस दुर्घटना की जांच का क्या परिणान निकला ;

(ख) उस दुर्घटना के लिये उत्तरदायी कर्मचारियों को क्या दण्ड दिया गया है ; और

(ग) उस दुर्घटना में मृत व्यक्तियों के परिवार तथा अन्य घायल व्यक्तियों को कितना मुआवजा अथवा सहायता दी गई है ?

रेलवे मंत्रालय में उपमंत्री (श्री सें० वें० रामस्वामी) : (क) जांच समिति इस नतीजे पर पहुंची है कि गाड़ी के सीटी बजाने और बस में बैठे यात्रियों के शोर मचाने के बावजूद उत्तर प्रदेश सरकार रोडवेज की बस का ड्राइवर बस को काबू में न रख सका और उसे सम-पार से पहले रोक न सका। फलस्वरूप बस रेल गाड़ी के इंजन में टकरा गयी।

(ख) कोई रेल कर्मचारी दोषी नहीं ठहराया गया।

(ग) कुछ नहीं। इस दुर्घटना के संबंध में अभी तक क्षतिपूर्ति के लिये कोई दावा नहीं मिला है।

मुरादाबाद डिवीजन में सोलानी में रेलवे पुल पर दुर्घटना

३२५. **श्री भक्त दर्शन :**
श्री भागवत झा आजाद :

क्या रेलवे मंत्री १० अगस्त १९६२ के अतारांकित प्रश्न संख्या ४८७ के उत्तर के संबंध में यह बताने की कृपा करेंगे कि मुरादाबाद डिवीजन में सौलानी के रेल पुल की जो दूर्घटना हो गयी थी उसकी जांच समिति की सिफारिशों पर क्या कार्यवाही की गई है ?

रेलवे मंत्रालय में उपमंत्री (श्री सें० वें० रामस्वामी) : जांच समिति की सिफारिशें मान ली गयी हैं और उन पर अमल करने के लिये आवश्यक हिदायत जारी की गयी है।

---

†मूल अग्रजी में

विमान निगम

†३२६ श्री राजेश्वर दयाल पटेल :
श्री रा० शि० पाण्डेय :
श्री मुरारका :

क्या परिवहन तथा संचार मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) भारत सरकार ने इण्डियन एयरलाइन्स कारपोरेशन तथा एयर इण्डिया को दिये गये ऋणों पर अब तक ब्याज की कुल कितनी राशि छोड़ दी है ;

(ख) आज कल कुल कितना ऋण बाकी है ; और

(ग) ये कम्पनियां किस तारीख से ब्याज देंगी ?

†परिवहन तथा संचार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री मुहीउद्दीन) : (क) और (ख). ३१ मार्च, १९५९ तक इण्डिन एयरलाइन्स कारपोरेशन को पूंजी के अतिरिक्त ४२४·८१ लाख रु० का ऋण दिया गया था जो बाद में निम्न रूप में समायोजित किया गया :—

	लाख रु०
(१) कारपोरेशन को दी जाने वाली आर्थिक सहायता के रूप में भी समायोजित	२३१.९९
(२) पूंजी में परिवर्तित	१५९.७१
(३) सरकार को भुगतान हुआ।	३३.११
योग	४२४.८१

इस प्रकार, आज कारपोरेशम पर कोई ऋण बकाया नहीं है । सरकार ने कारपोरेशन को दिये गये सभी ऋणों पर आरम्भ से ब्याज न लेने का निश्चय किया था। इस प्रकार लगभग ८६·४३ लाख रु० ब्याज रूप में छोड़े गये ।। एयर इंडिया कारपोरेशन को दिये गये किसी भी ऋण पर कोई ब्याज नहीं छोड़ा गया।

(ग) दोनों में से किसी भी कारपोरेशन पर ऋण बकाया न होने के कारण, ऋण पर ब्याज देने का प्रश्न उत्पन्न नहीं होता । फिर भी, यह स्पष्ट किया जा सकता है कि सरकार ने दोनों विमान निगमों में लगी पूंजी पर भी, उन के प्रारम्भ से , अर्थात् अगस्त १९५६ से १ अक्टूबर , १९६६ तक, ब्याज छोड़ने का निश्चय किया है। फिर भी, १ अक्तूबर, १९६६ से पूंजी (ऋण पूंजी) के ऋण पत्र वाले भाग पर ४ $^{1}/_{2}$ प्रतिशत प्रति वर्ष ब्याज देय होगा। अनुमान लगाया गया है कि यह ऋण-पूंजी १ अगस्त, १९५८ की पूंजी की अपेक्षा ५० प्रतिशत होगी।

हिन्दुस्तान शिपयार्ड

†३२७. श्री मुरारका :
श्री कृ० चं० पन्त :

क्या परिवहन तथा संचार मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) पिछले पांच वर्षों में हिन्दुस्तान शिपयार्ड द्वारा बने प्रत्येक जहाज पर कितनी आर्थिक सहायता दी जाने की आशा थी और वस्तुतः कितनी सहायता दी गई ;

†मूल अंग्रेजी में

(ख) यदि दोनों राशियों में कोई अन्तर है तो इसका क्या कारण है ; और

(ग) चालू वित्त वर्ष में कितनी आर्थिक सहायता दिये जाने की आशा है ?

†**परिवहन तथा संचार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री भगवती)** : (क) विद्यमान प्रबन्धों के अनुसार, भारत सरकार हिन्दुस्तान शिपयार्ड को निर्माणाधीन जहाज़ों पर हो रहे कार्य की कीमत का २४ प्रतिशत धन आर्थिक सहायता का अग्रिम देय के रूप में देती है। प्रत्येक जहाज़ के लिए अन्तिम आर्थिक सहायता की गणना तथा समायोजन उस समय किया जाता है जबकि भारत सरकार का मुख्य लागत-लेखा अधिकारी शिपयार्ड के लागत आंकड़ों की जांच कर लेता है। हिन्दुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड द्वारा बने पिछले जहाज़ पर पिछले पांच वर्षों में भारत सरकार द्वारा दी गई आर्थिक सहायता निम्न है :—

वर्ष	जहाज़ का नाम	दी गई सहायता रु०
१९५७–५८	'स्टेट आफ उड़ीसा'	३४,३६,६४९
,,	'जल विक्रय'	२८,४३,१९१
,,	'अन्दमान'	४९,५९,५०५
१९५८–५९	'जलवीर'	३३,३८,४६५
१९५९–६०	'युवक'	४,३९,४७४
,,	'जयलक्ष्मी'	४०,१०,०८८
,,	'जग मित्र'	४५,०८,९६०
,,	'इण्डियन इण्डस्ट्री'	२६,९९,२२०
१९६०–६१	'स्टेट आफ उत्तर प्रदेश'	४९,५७,०७५
१९६१–६२	'विश्वनिधि	४४,६४,९५७
,,	'स्टेट आफ राजस्थान'	४०,६६,१३२

(ख) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता।

(ग) वर्ष १९६२–६३ के बजट प्राक्कलन में शिपयार्ड को आर्थिक सहायता के अग्रिम देय के भुगतान की उपबन्धित राशि १५०,०० लाख रु० है।

अन्दमान को रेडियो टेलीफान द्वारा कलकत्ता से मिलाना

†३२८. **श्रीमती सावित्री निगम** : क्या **परिवहन तथा संचार** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या अन्दमान को रेडियो टेलीफोन द्वारा कलकत्ता से मिलाने की योजना में निश्चित हो गई है ; और

(ख) क्या सरकार का विचार इसी प्रकार मद्रास व दिल्ली को भी अन्दमान तथा निकोबार द्वीप समूह से मिलाने का है ?

†मूल अंग्रेजी में

†**परिवहन तथा संचार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री भगवती)** : (क) हां। रेडियो टेलीफोन सर्किट खोला जा चुका है।

(ख) आजकल कोई प्रस्ताव नहीं है ।

आन्ध्र प्रदेश में नई रेलवे लाइनें

†३२९. **डा० क० ला० राव** : क्या रेलवे मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) नई रेलवे लाइने बनाने का रेलवे मंत्रालय का क्या सिद्धान्त है ;

(ख) विगत पांच वर्षों में कौन कौन सी लाइनें स्वीकृत हुईं और क्या वे निर्धारित नीति के अनुसार हैं; और

(ग) विगत दस वर्षों में आन्ध्र प्रदेश में कौन कौन नई लाइनों का सर्वेक्षण हुआ है या होगा ?

†**रेलवे मंत्रालय में उपमंत्री (श्री सें० वें० रामस्वामी)** : (क) नई लाइनों के निर्माण के मामले में, प्रत्येक नई लाइन पर उसकी विशेषताओं के आधार पर विचार किया जाता है जिन में संचालन, वित्तीय सामरिक महत्व, सामाजिक, आर्थिक और अन्य पहलू शामिल हैं।

(ख) जहां तक प्रश्न के पहिले भाग का संबंध है, विगत पांच वर्षों में स्वीकृत नई लाइने दर्शाने वाला एक विवरण सलग्न है। **[देखिये परिशिष्ट १, अनुबन्ध संख्या ४२]** जहां तक प्रश्न के दूसरे भाग का सम्बन्ध है, उत्तर स्वीकारात्मक है।

(ग) कोट्टावलासा —बैला डिल्ला लाइन का जिसका एक भाग आन्ध्र प्रदेश में है, सर्वेक्षण इस काल में किया गया था और इसका निर्माण हो रहा है। आन्ध्र प्रदेश में आने वाली नई लाइनों का आगे सर्वेक्षण करने का तत्काल कोई प्रस्ताव नहीं है।

वन अधिनियम का उल्लंघन

†३३०. **श्री दशरथ देव** : क्या **खाद्य तथा कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) त्रिपुरा के सिलासरी वन रिजर्व के प्राधिकार ने वर्ष १९६० के बाद स्थानीय व्यक्तियों के खिलाफ कितने उल्लंघन के अभियोग चलाय हैं ;

(ख) अभियोग कितने वर्षों से न्यायालयों में अनिश्चित पड़े हैं;

(ग) उक्त मामलों में अधिक समय लगने का क्या कारण है ; और

(घ) मामलों का शीघ्र निर्णय करने के लिए क्या कार्यवाही की जा रही है ?

†**खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री अ० म० थामस)** : (क) से (ख). अपेक्षित जानकारी एकत्रित की जा रही है और उपलब्ध होते ही सभा पटल पर रख दी जायगी।

त्रिपुरा में खास भूमि का अनधिकार कब्जा

†३३१. **श्री दशरथ देव** : क्या **खाद्य तथा कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या कोई खास भूमि लुडुआ चाय सम्पदा, सब–रूम, त्रिपुरा के अनधिकार कब्जा में पाई गई ;

(ख) यदि हां, तो वहां कुल कितनी भूमि उपलब्ध की गई है ; और

---

†मूल अंग्रेजी में

(ग) यदि हां, तो क्या सरकार का विचार उन व्यक्तियों को ऐसी भूमि देने का है जो उसे काफी समय से साझीदार की तरह जोतते रहे हैं ?

†**खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री अ० म० थामस)** : (क) नहीं।

(ख) और (ग). प्रश्न उत्पन्न नहीं होता।

सुगौली और हरिनगर के चीनी के कारखाने

३३२. **श्री विभूति मिश्र** : क्या **खाद्य तथा कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि सरकार ने सुगौली और हरिनगर, जिला चम्पारन (बिहार) के चीनी मिलों की जांच के लिये दो पेनल नियुक्त किये थे;

(ख) यदि हां, तो क्या पेनल ने जांच की और जांच के बाद रिपोर्ट दी है ; और

(ग) सरकार ने पेनल की रिपोर्ट पर क्या निर्णय किया है ?

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री अ० म० थामस) : (क) और (ख). जी हां, श्रीमान।

(ग) काफी सोच विचार के बाद ५ अक्तूबर, १९६२ से तीन वर्ष के लिये सुगौली चीनी कारखाने का प्रबन्ध भारत सरकार ने उद्योग (विकास तथा विनियम) एक्ट १९५१ की धारा १८ए के अस्तर्गत अपने हाथ में ले लिया है। हरिनगर चीनी कारखाने से सम्बन्धित रिपोर्ट थोड़े समय पूर्व ही प्राप्त हुई है और वह विचाराधीन है।

तीसरी योजना में हवाई अड्डों का निर्माण

†३३३. **श्री कोया** : क्या **परिवहन तथा संचार** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि तीसरी पंचवर्षीय योजना काल में कितने और कौन कौन हवाई अड्डे बनाये जायेंगे ?

†**परिवहन तथा संचार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री मुहीउद्दीन)** : खजुराहो में एक हवाई अड्डा के निर्माण को स्वकृति पहिले ही दी जा चुकी है। अन्य स्थानों पर नये हवाई अड्डे बनाने का प्रश्न अभी विचाराधीन है।

श्रम ठेका तथा निर्माण सहकारी समितियों सम्बन्धी गोष्ठी

†३३४. { **श्रीमती मैमूना सुल्तान** :
श्री हिम्म तसिंहका :

क्या **सामुदायिक विकास, पंचायती राज और सहकार** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या २६ सितम्बर, १९६२ को नागपुर में श्रम ठेका तथा निर्माण समितियों संबंधी एक अखिल भारतीय गोष्ठी हुई थी ;

(ख) यदि हां, तो गोष्ठी में क्या मुख्य मत व्यक्त तथा सिफारिशें की गई थीं ; और

---

†मूल अंग्रेजी में

(ग) गोष्टी में हुए विचार विमर्श को ध्यान में रखकर सरकार ने क्या निश्चय किया है ?

†**सामुदायिक विकास, पंचायती राज और सहकार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री श्यामधर मिश्र)** : (क) हां, श्रीमान् ।

(ख) गोष्ठी की मुख्य सिफारिशों को दर्शाने वाला एक विवरण सभा पटल पर रखा जाता है । **[देखिये परिशिष्ट १, अनुबन्ध संख्या ४३]**

(ग) सिफारिशें भारत सरकार के सक्रिय विचाराधीन हैं ।

महाराष्ट्र में छोटी लाइन को बड़ी लाइन बनाना

†३३५. **श्री तुलसीदास जाधव :**
श्री वि० तु० पाटिल :
श्री जेधे :

क्या **रेलवे** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि महाराष्ट्र सरकार ने मांग की है कि पूना से बेलगांव और मिराज से कोल्हापुर तक दक्षिण रेलवे के सेक्शनों में छोटी लाइन के स्थान पर बड़ी लाइन बनाई जाय ; और

(ख) यदि हां, तो यह परियोजना तीसरी पंचवर्षीय योजना की निश्चित परियोजनाओं में शामिल कर दी गई है ?

†**रेलवे मंत्रालय में उपमंत्री (श्री सें० वें० रामस्वामी)** : (क) राज्य सरकार ने तीसरी योजना काल में पूना–बैंगलोर छोटी लाईन के पूना-मिराज सेक्शन में बड़ी लाइन बनाने की सिफारिश की है ।

(ख) पूना-मिराज सेक्शन को तीसरी पंचवर्षीय योजना में बड़ी लाइन में बदलने का विचार है ।

अगरतला में डाक तथा तार घर

†३३६. **श्री बीरेन दत्त** : क्या **परिवहन तथा संचार** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या अगरतला, त्रिपुरा में डाक तथा तार घर बनाने के लिये कोई भूमि ले ली गई ह ;

(ख) यदि हां, तो अरुन्धती नगर, अगरतल्ला में कौन कौन कार्यालय खुलेंगे ;

(ग) क्या अगरतला में काम करने वाले कर्मचारियों को बसाने के लिये कर्मचारी क्वार्टर भी बनाये जायेंगे ; और

(घ) यदि हां, तो इनके कब आरम्भ होने की आशा है ?

†**परिवहन तथा संचार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री भगवती)** : (क) हां । बेतार के तार प्राप्त-कर्ता केन्द्र के निर्माण के लिये ६ एकड़ भूमि प्राप्त कर ली गई है ।

---

†मूल अंग्रेजी में

(ख) डाकघर के निर्माण के लिये अरुन्धतीनगर में भूमि खरीदने के लिये वार्ता हो रही है ।

(ग) और (घ). बेतार के तार केन्द्र भूमि में कर्मचारी क्वार्टरों के ६ यूनिटों के निर्माण का प्रस्ताव पहिले से ही विचार स्वीकार हो चुका है और कार्य हो रहा है ।

अरुन्धतीनगर में अर्जन के लिये प्रस्तावित भूमि में कर्मचारी क्वार्टरों के निर्माण पर भूमि अर्जन होने पर विचार किया जायेगा ।

मछली का निर्यात

†३३७. **डा० उ० मिश्र :** क्या **खाद्य तथा कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि क्या यह सच है कि बड़े पैमाने पर मछली का निर्यत करने के बारे में भारत सरकार को सलाह देने के लिए शीघ्र ही अमरीका से विशेषज्ञ आयेंगे ?

†**खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री अ० म० थामस) :** मत्स्य पालन व्यापार से संबंधित एक या दो अमरीकी फर्मों की योजना है कि वे भारत से अमरीका को मछली-उत्पादों का निर्यात बढ़ाने की संभावनाओं का अध्ययन करने के लिये अपने विशेषज्ञ भारत भेजें परन्तु ये योजनायें अभी कार्यान्वित नहीं हुई हैं ।

खेती योग्य परती भूमि

३३८. **श्री भक्त दर्शन :** क्या **खाद्य तथा कृषि** मंत्री २० अगस्त, १९६२ के अतारांकित प्रश्न संख्या ११५५ के उत्तर के संबंध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) सारे देश में परती भूमि का पता लगाने वाली विशेषज्ञ समिति ने अपने कार्य में इस बीच और क्या प्रगति की है ;

(ख) इस समिति ने उत्तर प्रदेश के बारे में जो रिपोर्ट दी है उसका सारांश क्या है ;

(ग) उत्तर प्रदेश-संबंधी उस रिपोर्ट की सिफारिश पर वहां की राज्य सरकार ने कैसे प्रस्ताव प्रस्तुत किये हैं ; और

(घ) उन प्रस्तावों व विशेषज्ञ-समिति की मूल सिफारिशें को कार्यान्वित करने के लिये कौन से कदम उठाये जा रहे हैं ?

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में राज्य-मंत्री (डा० राम सुभग सिंह) : (क) समिति ने और कोई रिपोर्ट नहीं दी है ।

(ख) समिति ने तीसरी योजना की अवधि में ११,०१८ एकड़ घने जंगलों और झाड़ियों वाली भूमि तथा ५०,००० एकड़ ऊसर (अमलीय और क्षारीय) भूमि को सुधारने की सिफारिश की है ; इस पर कुल अनुमानतः १.७३ करोड़ रुपये खर्च होंगे । यह भी सिफारिश की गई है कि भूमिहीन मजदूरों और अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित कबीलों के सदस्यों में भूमि बांटी जाये ।

(ग) हाल ही में राज्य सरकार ने मैनपुरी जिले में ५,००० एकड़ ऊसर भूमि के सुधार और बन्दोबस्त के लिये एक योजना भेजी है जिस पर ५३ लाख रुपये खर्च होंगे । भूमिहीन मजदूरों

---

†मूल अंग्रेजी में

के ४५० परिवारों को इस भूमि पर बसाने का प्रस्ताव है। प्रारम्भ में यह योजना केवल मैनपुरी जिले में शुरू की जायेगी।

(घ) राज्य सरकार द्वारा भेजी गई योजना विचाराधीन है और शीघ्र ही इसे अन्तिम रूप दे दिया जायेगा। राज्य सरकार से यह भी प्रार्थना की गई है कि जंगल तथा झाड़ियों वाली ११,०१८ एकड़ भूमि के संबंध में भी वह अपनी योजना तैयार करे जिसके लिये समिति ने सिफारिश की है।

कांगड़ा घाटी सेक्शन पर यात्री डिब्बे

†३३९. **श्री हेमराज :** क्या **रेलवे** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि पूर्वोत्तर रेलवे के कांगड़ा घाटी रेलवे सेक्शन (तंग लाइन) पर अधिकतर यात्री डिब्बे क्षतिग्रस्त हो गये हैं और पुर्जों के अभाव के कारण मरम्मत नहीं किये जा सकते ;

(ख) यदि हां, तो चलने योग्य तथा क्षतिग्रस्त यात्री डिब्बों का ब्यौरा क्या है ;

(ग) उनकी मरम्मत कब तक होगी ; और

(घ) इस मामले में क्या कार्यवाही करने का विचार है ?

†**रेलवे मंत्रालय में उपमंत्री (श्री शाहनवाज खां) :** (क) नहीं।

(ख) से (घ). प्रश्न उत्पन्न नहीं होते।

रेल डिब्बे, आदि

†३४०. **श्री हेमराज :** क्या **रेलवे** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) तीसरी पंच वर्षीय योजना काल में रेलों पर कितने नये डिब्बे, आदि, **रेलवे** इंजन, यात्री डिब्बे तथा माल डिब्बे चलाने का विचार है ;

(ख) क्या उन्हें विभिन्न वर्षों में चालू करने का कोई निश्चित प्रोग्राम है ; और

(ग) यदि हां, तो उसका क्या ब्यौरा है और डिब्बों आदि की पहिली किस्त लाइन पर कब चालू की जायेगी ?

†**रेलवे मंत्रालय में उपमंत्री (श्री शाहनवाज खां) :**

(क) रेलवे इंजन २,०९०

यात्री डिब्बे (विद्युत बहुगुणी एकक तथा रेल कारों को छोड़ कर) ५,३२४
(डिब्बों के रूप में)

माल डिब्बे १,४६,७१८
(चार पहिये वाले डिब्बों के रूप में)

(ख) हां।

(ग) वर्ष १९६१-६२ में निम्न डिब्बों आदि को लाइन पर चलाया गया :-

लोकोमोटिव ३२६

---

†मूल अंग्रेजी में

यात्री डिब्बे (विद्युत् बहुगुणी एककों और रेल कारों को छोड़-कर) १२१४
(वोगी के रूप में)

माल डिब्बे १९०१२
(चार पहियों वाले डिब्बों के रूप में)

वर्ष १९६२-६३ में निम्न डिब्बे आदि चाल किये जायेंगे :—

लोकोमोटिव ४०६

यात्री डिब्बे (विद्युत बहुगूणी एककों तथा रेलकार को छोड़-कर) १३४०
(वोगी के रूप में)

माल डिब्बे २७,३००
(चार पहियों वाले डिब्बों के रूप में)

शेष स्टाक को योजना के शेष वर्षों में चालू करने की योजना है।

स्विस सहायता वाले डेरी फार्म

†३४१. **श्री वारियर :**
श्री विशनचन्द्र सेठ :

क्या **खाद्य तथा कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या एक स्विस विशेषज्ञ दल ने केरल में स्विस सहायता के साथ एक डेरी फार्म खोलने की संभावनाओं की जांच पड़ताल की थी ; और

(ख) यदि हां, तो उसके निष्कर्ष क्या हैं ?

†**खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में राज्य-मंत्री (डा० राम सुभग सिंह)** : (क) स्विस विशेषज्ञ दल द्वारा आरम्भ की गई जांच पड़ताल अभी पूरी नहीं हुई है।

(ख) निष्कर्ष अभी उपलब्ध नहीं है।

आस्ट्रेलियाई मेढ़ों का आयात

†३४२. **श्री वारियर** : क्या **खाद्य तथा कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने मूल स्टाक की व्यवस्था करने और उन्हें बिहार राज्य को देने के लिये आस्ट्रेलियाई मेढ़ों का आयात किया है ; और

(ख) यदि हां, तो सौदा का क्या ब्यौरा है ?

†**खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में राज्य-मंत्री (डा० राम सुभग सिंह)** : (क) नहीं। बिहार सरकार ने आस्ट्रेलिया से कुछ रामने मार्श मेढ़े आयात करने का प्रबन्ध किया है।

(ख) ब्यौरा देने वाला एक ब्यौरा संलग्न है। **[देखिये परिशिष्ट १, अनुबन्ध संख्या ४४]**

---

†मूल अंग्रेजी में

गन्ना उत्पादन

†३४३. **श्री योगेन्द्र झा** : क्या **खाद्य तथा कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि बिहार में सीतामढ़ी के चीनी कारखाना क्षेत्र में गन्ने का उत्पादन इस वर्ष बहुत कम होने की संभावना है ; और

(ख) यदि हां, तो उत्पादन में यह कमी होने के क्या कारण हैं ?

†**खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री अ० म० थामस)** : (क) और (ख). हां, श्रीमान। गन्ना उत्पादन में कमी होने के निम्न कारण हैं :—

(१) पिछले दो वर्षों में उस क्षेत्र में एक मात्र चीनी कारखाने की आवश्यकता से कहीं अधिक उत्पादन होता रहा है। गन्ना उगाने वालों को अपने उत्पाद को बेचने में कुछ कठिनाई हुई थी, इसलिये उन्होंने इस वर्ष थोड़ी जमीन में गन्ना उगाना पसन्द किया है।

(२) पिछले वर्ष चीनी उत्पादन में की गई कमी के फलस्वरूप समूची फसल को बेचने के बारे में अनिश्चतता होने के कारण भी गन्ने की फसल की भूमि में कमी हुई है ।

(३) गन्ने की उगाई तथा पैदावार हाल की बाढ़ से कम हो गई है।

जगाधरी और लुधियाना के बीच बरास्ता चण्डीगढ़ रेलवे लूप लाइन

†३४४. **श्री यशपाल सिंह :**
श्री दी० चं० शर्मा :
श्री बूटा सिंह :
श्री गुलशन :

क्या **रेलवे** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि पंजाब सरकार जगाधरी और लुधियाना के बीच बरास्ता चण्डीकढ़ एक नई रेलवे लूप लाइन बनाने के लिये केन्द्रीय सरकार पर जोर देती रही है ; और

(ख) यदि हां, तो केन्द्रीय सरकार द्वारा इसके अब तक स्वीकृत न होने के क्या कारण हैं ?

†**रेलवे मंत्रालय में उपमंत्री (श्री सें० वें० रामस्वामी)** : (क) हां।

(ख) योजना आयोग द्वारा स्वीकृत तीसरी योजना काल में नई लाइनों के निर्माण के रेलवे प्रोग्राम में यह प्रस्ताव सम्मिलित नहीं है।

पंजाब में राष्ट्रीय राजपथ

†३४६. **श्री दलजीत सिंह** : क्या **परिवहन तथा संचार** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) पंजाब में हाल की बाढ़ से टूट गये राष्ट्रीय राजपथों की मरम्मत पर कितना व्यय हुआ है ; और

---

†मूल अंग्रेजी में

(ख) जिन पुलों व राजपथों की मरम्मत या पुनर्निर्माण हुआ है उनके क्या नाम हैं ?

†**परिवहन तथा संचार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री भगवती)** : (क) और (ख). जानकारी एकत्रित की जा रही है और यथासमय सभा पटल पर रख दी जायेगी।

निर्यातित वस्तुओं के लिए प्राथमिकता

†३४७. **श्री प्र० के० देव** : क्या **रेलवे** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या निर्यात के लिये वस्तुओं से भरे माल डिब्बों पर अब से "निर्यात के लिये प्राथमिकता" लेबल लगाये जायेंगे ताकि ऐसी वस्तुओं का आना जाना द्रुतगति से हो ;

(ख) वैगनों पर ये लेबल कौन लगायेगा ?

(ग) क्या इसका प्रभाव देश में उपभोग होने वाली अन्य वस्तुओं के आने जाने पर पड़ेगा; और

(घ) क्या इस नई प्रक्रिया के कारण ऐसे वहन के लिये पहिले से निर्धारित प्राथमिकता में कोई परिवर्तन हो गया है ?

†**रेलवे मंत्रालय में उपमंत्री (श्री सें० वें० रामस्वामी)** : (क) तथा (ख). प्रेषकों को अनुमति दे दी गई है कि वे निर्यात की वस्तुओं से भरे वैगनों पर बड़े इश्तिहार लगा सकते हैं जिन पर "निर्यात के लिये प्राथमिकता" नहीं" केवल निर्यात के लिये—आगे भेजो" लिखा हो।

(ग) और (घ). नहीं।

विशाखापटनम बन्दरगाह में रोके गये गेहूं के जहाज

†३४८. **श्री प्र० के० देव** : क्या **खाद्य तथा कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार को विशाखापटनम बन्दरगाह में पांच अमरीकी और दो पनामा जहाजों को, जिनमें गेहूं था, उनसे माल उतारने में देर होने के कारण रोकने से भारी हानि उठाई है ;

(ख) यदि हां, तो सरकार को कितनी हानि हुई है ;

(ग) गेहूं उतारने में क्या कठिनाई है ; और

(घ) क्या स्टाक तटीय नौवहन को देने से परिवहन अभाव दूर हो जायेगा ?

†**खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री अ० म० थामस)** : (क) और (ख). गेहूं से भरे ६ अमरीकी और एक पनामा जहाज सितम्बर, १९६२ में विशाखापतनम आये थे। इन जहाजों ने निर्वहन के लिये कलकत्ता जाने से पहिले विशाखापतनम में अपने भार का थोड़ा भाग उतारा। इन जहाजों को छोड़ने संबंधी समय विवरण अभी निश्चित नहीं हुए हैं और इसलिये इन मामलों में कितना विलम्ब शुल्क देना होगा बताना असफल है। फिर भी संभव है कि इन जहाजों के बारे में कुछ विलम्ब शुल्क देना होगा।

---

†मूल अंग्रेजी में

(ग) जहाज का निष्कासन उस को ठहराने की सुविधा, रेल परिवहन की उपलब्धता, पारनयन शेड से माल उठाने, जहाजों से माल उतारने और मजदूरों के काम पर निर्भर है।

(घ) सितम्बर, १९६२ में लगभग ६००० टन गेहूं और अक्तूबर में ६,८०० टन गेहूं तटीय जहाजों से भेजा गया था। आशा है कि अन्य लगभग ११,००० टन गेहूं नवम्बर, १९६२ में भेजा जायेगा।

तल्ला पुल

†३४९. **श्रीमती रेणु चक्रवर्ती** : क्या **रेलवे** मंत्री ३ मई, १९६२ के अतारांकित प्रश्न संख्या ५६७ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) चितपुर रेलवे यार्ड को फैलाने वाला तल्ला पुर को चौड़ा तथा मजबूत बनाने के प्रारम्भिक कार्य में कितनी प्रगति हुई है ; और

(ख) राज्य सरकार वस्तुतः निर्माण कब से आरम्भ करेगी ?

†**रेलवे मंत्रालय में उपमंत्री (श्री सें० वें० रामस्वामी)** : (क) और (ख). पश्चिम बंगाल राज्य सरकार इस सड़क के पुल का कार्य कर रही है। पता लगा है कि राज्य सरकार ने योजना और प्राक्कलन पूरे कर लिये हैं और काम का ठेका भी दे दिया है। पता लगा है कि राज्य सरकार पुल का वास्तविक निर्माण सड़क यातायात को उचित रुप में बदल कर आरम्भ करेगी क्यों कि अन्यथा विद्यमान पुल को तोड़ने से काफी असुविधा होगी।

पूर्वोत्तर सीमा रेलवे पर प्लेट फार्मों पर छत डालना

†३५०. **श्री नि० रं० भास्कर** : क्या **रेलवे** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के बड़ी संख्या में स्टेशनों पर प्लेटफार्मों पर छत नहीं है ;

(ख) यदि हां, तो कुल कितने प्लेटफार्मों पर छत नहीं है ; और

(ग) चालू वर्ष में यदि इस कार्य के लिये कोई राशि निर्धारित की गई है तो वह कितनी है ?

†**रेलवे मंत्रालय में उपमंत्री (श्री सें० वें० रामस्वामी)** : (क) पूर्वोत्तर सीमा रेलवे और अन्य रेलवे के बड़ी संख्या में स्टेशनों पर प्लेटफार्मों पर धन के अभाव साधन सीमित होने के कारण छतें नहीं हैं।

(ख) ३५७ स्टेशन।

(ग) २.५० लाख रु०।

---

†मूल अंग्रेजी में

डाक सेवायें

†३५१. श्री तुलसीदास जाधव :
श्री शिवाजीराव शं० देशमुख :
श्री जेधे :
श्री रावन्देल :
श्री किशन वीर :
श्री वि० तु० पाटिल :
श्री जु० शं० पाटिल :

क्या **परिवहन तथा संचार** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि दूसरी पंच वर्षीय योजना के अन्त तक महाराष्ट्र में कितने गांवों में डाक सेवा व्यवस्था हो गई है ?

†**परिवहन तथा संचार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री भगवती)** : ३५,३०२।

कृषि उत्पाद का विपणन

†३५२. श्री रामेश्वर टांटिया :
श्री श्यामलाल सर्राफ :

क्या **खाद्य तथा कृषि** मंत्री निम्न बातें दर्शाने वाला एक विवरण पटल पर रखने की कृपा करेंगे कि :

(क) केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों ने कृषिउत्पादों के विपणन के विनियमन के लिए जो विभिन्न संविधियां बनाई हैं उन के क्या नाम हैं ; और

(ख) विपणन के विनियमन में इन संविधियों से कहां तक सहायता मिली है ?

†**खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में राज्यमंत्री (डा०राम सुभग सिंह)** : (क) और (ख). अपेक्षित जानकारी देने वाला एक विवरण सभा पटल पर रखा जाता है। **[देखिये परिशिष्ट १, अनुबंध संख्या ४५]**।

बिना टिकट यात्रा

†३५३. **श्री कजरोलकर** : क्या **रेलवे** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) वर्ष १९६१–६२ में कितने बिना टिकट यात्री पकड़े गये तथा उन से कितना धन प्राप्त हुआ ; और

(ख) उसी काल में इस वसूली पर कितना व्यय हुआ ?

†**रेलवे मंत्रालय में उपमंत्री (श्री शाहनवाज खां)** : (क) लगभग ८० लाख व्यक्ति पकड़े गये और २.०३ करोड़ रु० वसूल हुए।

(ख) स्टेशनों पर स्थित टिकट कलक्टरों सहित लगभग २.८३ करोड़ रु० व्यय हुए।

---

†मूल अंग्रेजी में

रेलवे सामान का आयात

†३५४. **श्री कजरोलकर :** क्या **रेलवे** मंत्री निम्न लिखित वस्तुओं की वर्ष १९५९, १९६० और १९६१ में वर्षवार कितनी मात्रा का आयात हुआ और उसका मूल्य कितना था ;

(क) इस्पात की पटरियां (बड़ी लाइन, छोटी लाइन या अन्य लाइने) ,

(ख) इस्पात स्लीपर संबंधी सामान,

(ग) लकड़ी के स्लीपर,

(घ) भाप के लोको मोटिव (बड़ी लाइन , छोटी लाइन या अन्य) ?

†**रेलवे मंत्रालय में उपमंत्री (श्री सें० वें० रामस्वामी) :** एक विवरण सभा पटल पर रखा जाता है । **[देखिये परिशिष्ट १, अनुबन्ध संख्या ४६]**।

खाद्यान्न में आत्म निर्भरता

३५५. श्री बाल्मीकी : क्या **खाद्य तथा कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(ग) कौन कौन से खाद्यान्न ऐसे हैं जिन में आत्म निर्भरता देश को प्राप्त हो गई है ;

(ख) कौन-कौन से खाद्यान्न ऐसे हैं जिन में आत्म निर्भरता नहीं प्राप्त हुई है ; और

(ग) आत्म निर्भरता के आधार पर सरकार क्या यह बतायेगी कि अमुक अवधि तक अमुक खाद्यान्न विदेश से नहीं मंगाये जायेंगे ?

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री अ० म० थामस) : (क) से (ग). कुछ हद तक, खाद्यान्नों की मांग उनकी कीमतों के आधार पर अदलती बदलती रहती है । इसलिए किसी विशेष खाद्यान्न में आत्म निर्भरता का विचार करना सम्भव नहीं है। हमारी उपज भी धीरे धीरे बढ़ रही है किन्तु उसके साथ साथ आबादी और जनता की क्रिय-शक्ति बढ़ने के कारण खाद्यान्नों की मांग भी बढ़ रही है । तीसरी पंच वर्षीय योजना की अवधि के अंत में खाद्यान्नों के उत्पादन का लक्ष्य, १० करोड़ टन निश्चित किया गया है । यदि यह लक्ष्य पूरा हो गया और आबादी भी हमारे अनुमान के अनुसार बढ़ी, तो हमारा देश तीसरी योजना की अवधि के अन्त तक खाद्यान्नों में आत्म निर्भर या लगभग आत्म निर्भर हो सकता है ।

भूमिहीन मजदूर

३५६. श्री बाल्मीकी : क्या **खाद्य तथा कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) नवम्बर, १९६२ के तीसरे सप्ताह तक राज्यवार कितनी ज़मीनें भूमिहीन मजदूरों को बांटी गई ; और

(ख) इस पर सरकार को क्या व्यय करना पड़ा ?

†**खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में राज्य-मंत्री (डा० राम सुभग सिंह) :** (क) और (ख): भूमिहीन मजदूरों में ज़मीने बांटी जाने के विषय में उप योजना मंत्री ने २ मई १९६१ को तारांकित प्रश्न संख्या १८५० के उत्तर में उपलब्ध सूचना को सभा पटल पर रख दिया था। उसी प्रश्न के अनुपूरक प्रश्नों के संबंध में दिये गये आश्वासन के सम्बन्ध में ३० मार्च १९६२ को सभा को और अधिक जानकारी दे दी गई थी। उस के आगे और कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है । नवम्बर

---

†मूल अंग्रेजी में

१९६२ के तीसरे सप्ताह तक हुए कार्य की प्रगति के विषय में जानकारी इकट्ठी की जा रही है और यथा समय सभा पटल पर रख दी जायेगी।

दिल्ली में भूकम्प के धक्के

३५७. **श्री भक्त दर्शन :** क्या **परिवहन तथा संचार** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि २९ सितम्बर, १९६२ की रात को करीब ११ बजे दिल्ली में भूकम्प के धक्के महसूस किये गये ; और

(ख) यदि हां, तो क्या उस भूकम्प के उद्गम स्थान, कारण, कम्पन-काल और उस से हुई हानि पर प्रकाश डालने वाला एक विस्तृत विवरण सभा-पटल पर रखा जायेगा ?

परिवहन तथा संचार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री मुहीउद्दीन) : (क) और (ख). दिल्ली में एक हलकी तीव्रता (स्लाइट इंटेसिटी) का एक भूकम्प २९ सितम्बर, १९६२ को भारतीय मानक समय के अनुसार रात के १० बजकर ५८ मिनट पर अनुभव किया गया था। इसका अधिकेन्द्र (एपीसेण्टर) लोदी रोड की वेधशाला से लगभग ७ मील (११ किलोमीटर) पश्चिम-दक्षिण पश्चिम में, पालम से पूर्व की पहाड़ी के पास था।

दिल्ली , अरावली पर्वतमाला के सिरे पर स्थित है । दिल्ली और गुड़गांव के बीच कहीं अलवर के स्फटिक-शैल (क्वार्टज़ाइट्स) कछार से मिले हुए हैं इस से क्षेत्रीय दबाव उत्पन्न हो जाता है जो कभी-कभी सतह पर भूकम्प के रुप में प्रकट होता है।

जहां तक मुझे मालूम है इस भूकम्प से प्राणों या सम्पति की कोई हानि नहीं हुई है।

एयर इण्डिया के विज्ञापन

†३५८. **श्री इन्द्रजीत लाल मल्होत्रा :** क्या **परिवहन तथा संचार** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या इयर इण्डिया ने "पी" फार्म के प्रतिबन्धों के आधार पर विज्ञापन आन्दोलन चलाया था; और

(ख) यदि हां, तो अगस्त, सितम्बर, और अक्तूबर, १९६२ में ऐसे विज्ञापन आन्दोलन पर कितना व्यय हुआ ?

†**परिवहन तथा संचार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री मुहीउद्दीन) :** (क) और (ख). कारपोरेशन ने सूचना दी है कि उन्होंने "पी" फार्म के आधार पर कोई विशेष आन्दोलन नहीं चलाया। फिर भी, बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, और मद्रास में एयर इंडिया के स्थायी आसंचन स्थानों में चार हास्कर चित्र बनाये गये थे।

बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली और मद्रास में डिजाइनों के लिये कला कार्य तथा चित्रों पर कुल लगभग ५००० रु० व्यय हुए।

---

†मूल अंग्रेजी में

एयर इंडिया के टिकटों की बिक्री

†३५९. **श्री इन्द्रजीत लाल मल्होत्रा :** क्या **परिवहन तथा संचार** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) १९६१ और १९६२ में अगस्त–अक्तूबर के महिनों में एअर इंडिया के कितने टिकटों की बिक्री हुई; और

(ख) क्या उसमें कोई बढ़ोतरी पायी गयी है ?

†**परिवहन तथा संचार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री मुहीउद्दीन) :** (क) और (ख). अगस्त और सितम्बर, १९६२ में कुल ३०,४९१ यात्रियों को ले जाया गया जब कि अगस्त और सितम्बर, १९६१ में २६,४१८ यात्रियों को ले जाया गया।

मास्को के लिये एयर इंडिया की उद्घाटन-उड़ान

†३६०. **श्री इन्द्रजीत लाल मल्होत्रा :** क्या **परिवहन तथा संचार** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सितम्बर या अक्तूबर, १९६२ में दिल्ली और मास्को के बीच एयर इंडिया ने बोइंग ७०७ की कोई उद्घाटन-उड़ान की थी;

(ख) ऐसी उद्घाटन उड़ान क्यों की गयी; और

(ग) इस उद्घाटन-उड़ान में कौन कौन लोग थे ?

†**परिवहन तथा संचार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री मुहीउद्दीन) :** (क) जी, हां। एयर इंडिया ने २८ सितम्बर, १९६२ को दिल्ली से मास्को तक दूसरी उद्घाटन-उड़ान की थी।

(ख) अन्तर्राष्ट्रीय विमान परिवहन संघ के विनियमों के अनुसार, जब कभी कोई नये प्रकार का विमान उस मार्ग पर चलाया जाने वाला हो तब एक सदस्य विमान कम्पनी को दो उद्घाटन उड़ान करने की अनुमति होती है। पहली उड़ान से छः महीने की अवधि के अन्दर की जाने वाली कोई निश्चित उड़ान उद्घाटन उड़ान कही जा सकती है। इस उद्घाटन उड़ान का उद्देश्य प्रचार के लिए सम्मानित व्यक्तियों, व्यापारियों और मित्र विमान कम्पनियों आदि को मुफ्त लाना-ले जाना होता है। यह बिक्री बढ़ाने का एक उपाय है और जन सम्पर्क के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है।

(ग) इस उद्घाटन उड़ान के लिए आमंत्रित अतिथियों की सूची संलग्न है। **[देखिये परिशिष्ट १, अनुबंध संख्या ४७]**

मुगलसराय और रोजा के बीच डीजल मालगाड़ी

†३६१. **श्री ज्योतिस्वरूप :** क्या **रेलवे** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या मुगलसराय और रोजा के बीच ११ सितम्बर, १९६२ से एक डीजल मालगाड़ी चालू हो गयी है;

(ख) ११ अक्तूबर, १९६२ को समाप्त पहले महिने में कुल कितने टन माल ढोया गया; और

(ग) इस सेक्शन में डीजल मालगाड़ी चालू करने में कितना खर्च हो जाने का अनुमान है ?

---

†मूल अंग्रेजी में

†रेलवे मंत्रालय में उपमंत्री (श्री सें० वें० रामस्वामी) : (क) जी, हां, १० सितम्बर, १९६२ से ।

(ख) १०-९-६२ से ११-१०-६२ तक डीजल मालगाड़ी ने कुल ३,१६,३५६ टन माल ढोया ।

(ग) प्रत्येक इंजन का मूल्य लगभग १२.२५ लाख रुपया है । डीजल गाड़ी चलाने का खर्च उस समय मालूम किया जायेगा जब कि यह गाड़ी पूरी तौर से चला दी जायेगी ।

इन्दौर को धूलिया से जोड़ने वाली रेलवे लाइन

†३६२. श्री जु० शं० पाटिल :
श्री जेधे :
श्री रावनदले :
श्री भा० दा० देशमुख :
श्री किशन वीर :
श्री वि० तु० पाटिल :
श्री तुलसीदास जाधव :

क्या रेलवे मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या दूसरी पंचवर्षीय योजना में इन्दौर को मनमाड से धूलिया के साथ जोड़ने वाली एक नयी रेलवे लाइन मंजूर की गयी थी और वह अभी तक बनायी नहीं गयी है; और

(ख) उसके कारण क्या हैं ?

†रेलवे मंत्रालय में उपमंत्री (श्री सें० वें० रामस्वामी) : (क) इन्दौर–धूलिया–मनमाड लाइन का निर्माण दूसरी पंचवर्षीय योजना अवधि में मंजर नहीं किया गया था । इसलिये इस परियोजना को कार्यान्वित करने का प्रश्न उत्पन्न नहीं होता ।

(ख) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता ।

छोटी लाइन (नैरो-गेज) कांगड़ा घाटी सेक्शन का पुनः मार्गरेखण

†३६३. श्री हेम राज : क्या रेलवे मंत्री ७ अगस्त, १९६२ के अतारांकित प्रश्न संख्या १४७ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या नैरो-गेज कांगड़ा घाटी सेक्शन के पुनः मार्गरेखण के लिए सर्वेक्षण इस बीच पूरा हो गया है;

(ख) क्या इस सेक्शन में रेल तथा सड़क पुलों के लिए व्यवस्था की गयी है; और

(ग) इस नयी लाइन की लागत कितनी है और क्या पंजाब सरकार ने उसे मंजूर कर दिया है ?

†रेलवे मंत्रालय में उपमंत्री (श्री सें० वें० रामस्वामी) : (क) जनाबवाला शहर और गुलेर स्टेशनों के बीच लाइन के पुनः मार्गरेखण के सर्वेक्षण के लिए क्षेत्र कार्य पूरा हो चुका है लेकिन परियोजना रिपोर्ट और अनुमान अभी अन्तिम रूप से निश्चित नहीं किया गया है ।

---

†मूल अंग्रेजी में

(ख) इस परियोजना के अनुमान में उन पुलों के वैकल्पिक व्यय शामिल होंगे जिन्हें रेल-सड़क-पुलों के रूप मे बनाना राज्य सरकार आवश्यक समझती है। राज्य सरकार से यह बनाने के लिए प्रार्थना की गयी है कि किन किन पुलों को रेल-सड़क-पुल बनाना जरूरी है।

(ग) इस परियोजना की लागत अनुमान तैयार किये जाने के बाद ही मालूम हो सकेगी।

निधन सम्बन्धी उल्लेख

†**अध्यक्ष महोदय** : मुझे सभा को सूचित करना है कि वर्तमान लोक सभा के सदस्य श्री हीराभाई कुंवरभाई बेरिया का ११ नवम्बर, १९६२ को निधन हो गया है।

सभा अपना शोक प्रकट करने के लिये थोड़ी देर मौन खड़ी रहे।

इसके पश्चात् सदस्य कुछ समय तक मौन खड़े रहे।

अविलम्बनीय लोक महत्व के विषय की ओर ध्यान दिलाना

मांझी और बकुलह स्टेशनों के बीच हुई रेल दुर्घटना

†**श्री बिशनचन्द्र सेठ** (एटा) : मैं अविलम्बनीय लोक महत्व के निम्नलिखित विषय की ओर रेलवे मंत्री का ध्यान दिलाता हूं और उन से प्रार्थना करता हूं कि वे इस बारे में वक्तव्य दें :—

> पूर्वोत्तर रेलवे के मांझी और बकुलह स्टेशनों के बीच ११ नवम्बर, १९६२ को हुई कथित रेल-दुर्घटना जिसके फलस्वरूप २५ व्यक्ति मारे गये और अन्य कई घायल हुए।

†**रेलवे मंत्री (श्री स्वर्ण सिंह)** : मुझे खेदपूर्वक सभा को सूचित करना है कि पूर्वोत्तर रेलवे के मांझी और बकुलह स्टेशनों के बीच ११-११-६२ को आधी रात के बाद एक दुखद घटना हुई थी।

१० और ११ नवम्बर, १९६२ की रात को प्रायः १-३० बजे जब मुजफ्फरपुर-इलाहबाद नगर ६७ अप, पूर्वोत्तर रेलवे के छपरा–वाराणसी मीटर गेज सेक्शन के सुरायमनपुर स्टेशन पर पहुंची तो कुछ यात्रियों ने स्टेशन मास्टर को बताया कि कुछ लोग गाड़ी की छत पर यात्रा कर रहे थे और जब गाड़ी मांझी तथा बकुलह स्टशनों के बीच स्थित पुल पर से गुज़र रही थी उस समय वे लोग पुल के ऊपरी ढांचे से टकरा गये थे।

सुरायमनपुर स्टेशन पर, गाड़ी की छत पर जांच पड़ताल करने पर ६ व्यक्ति मरे हुए और पांच बहुत सख्त ज़ख्मी पाये गये। स्टेशन मास्टर के नेतृत्व में एक जांच दल, इंजन और ब्रेकवेन के साथ तुरंत मांझी तक लाइन पर जांच पड़ताल करने के लिए भेजा गया। साथ ही रेलवे के एक डाक्टर के अधीन चिकित्सा सहायता भी भेजी गई। वाराणसी और सोनेपुर के रेलवे अधिकारी भी यह जानकारी मिलने पर तुरन्त घटनास्थल पर चले गये। गोरखपुर से मुख्य वाणिज्यिक पर्यवेक्षक और मुख्य चिकित्सा अधिकारी भी घटना स्थल पर चले गये।

तत्काल बकिला और छपरा के ज़िला अधिकारियों को भी हिदायतें दी गईं।

---

†मूल अंग्रेजी में

[श्री स्वर्ण सिंह]

आखरी जानकारी के अनुसार २५ व्यक्ति मारे गये हैं और ३ सख्त जख्मी हुए हैं। मृतकों में वे लोग शामिल हैं जो पहले सख्त ज़ख्मी हुए थे और बाद में मर गये। तीन ज़ख्मी लोग बलिया सिविल हस्पताल में इलाज करवा रहे हैं।

प्राप्त समाचार से पता लगा है कि गाड़ी अपने सामान्य डिब्बों के साथ जा रही थी और बलिया के रास्ते के स्टेशनों के लोग कार्तिक पूर्णिमा के मेले के लिए गाड़ी की छतों पर बैठ गये। छपरा में कोशिश की गई जहां गाड़ी को लगभग २० मिनट का विलम्ब हो गया और रावेलगंज में भी कोशिश की गई जिससे वहां १५ मिनट का विलम्ब हो गया किन्तु यात्री गाड़ी से नहीं उतरे। इस प्रयोजन के लिए रेलवे पुलिस की सहायता भी प्राप्त की गई थी। ऐसा प्रतीत होता है कि कोशिशों के बावजूद कुछ लोग छत पर बैठे रहे।

लखनऊ स्थित रेलवे सुरक्षा अतिरिक्त आयुक्त इस घटना की आज जांच कर रहे हैं।

श्री बिशनचन्द्र सेठ : अख़बारों में पहले दिन यह छपा कि इस दुर्घटना में पच्चीस आदमी मरे, लेकिन आज के पेपर्ज़ में बताया गया है कि सौ आदमी मरे। गवर्नमेंट को इस बात का पता लगाना चाहिये कि इस दुर्घटना में वास्तव में कुल कितने आदमी मरे हैं। अगर अख़बारों में गलत ख़बरें छपती हैं, तो उसका बहुत बुरा नतीजा निकलता है। मैं यह जानना चाहता हूं कि जब बहुत से आदमी छतों पर बैठ गये, तो फिर गाड़ी चलाई क्यों गई।

श्री स्वर्ण सिंह : जैसा कि मैं ने अर्ज़ किया है, दो स्टेशनों पर इस बात की कोशिश की गई कि लोगों को उतारा जाये। आधी रात के करीब का वक्त था। मेम्बर साहबान को इस बात का तजुर्बा होगा कि उतारने के बाद जब गाड़ी चलने लगती है, तो कुछ लोग फिर ऊपर चढ़ जाते हैं, जिन के मुताल्लिक पता लगना बड़ा मुश्किल है।

†**श्री स० मो० बमर्जी** (कानपुर) : आज के "हिन्दुस्तान टाइम्स" में तो लिखा है कि रेलवे अभी हताहतों की संख्या के बारे में अनुमान लगाने के लिये तैयार नहीं। समाचार पत्रों के अनुसार मृतकों की संख्या १०० है।

†**श्री स्वर्ण सिंह** : रेलवे द्वारा अनुमान न लगाना असामान्य या अप्रत्याशित नहीं है क्योंकि हम केवल उन मृतकों की संख्या बतायेंगे जिनके बारे में हम निश्चित होंगे। हो सकता है कि कुछ लोग नदी में बह गये हों। कुछ मृतकों को नदी से निकाला भी गया है और हमारे पास यही आंकड़े हैं। और अधिक जांच करने पर यदि मृतकों की संख्या अधिक हुई तो मैं निश्चय ही सभा को बताऊंगा।

श्री रामसेवक यादव (बाराबंकी) : मंत्री महोदय ने बताया है कि एक जगह ट्रेन बीस मिनट रुकी रही और दूसरी जगह पंद्रह मिनट। इससे साफ़ ज़ाहिर है कि अधिकारियों को खतरे का ज्ञान था। जब उन को ख़तरे का ज्ञान था, तो उन्होंने ट्रेन चलाई क्यों ? इस प्रकार ट्रेन चलाने के सम्बन्ध में क्या उन अधिकारियों के खिलाफ कोई कार्यवाही होगी ?

अध्यक्ष महोदय : इसका जवाब तो मिनिस्टर साहब दे चुके हैं।

श्री राम सेवक यादव : अगर ट्रेन चलने के बाद पुल के पास पहुंच चुकी थी और वहां ख़तरा था, तो उसको रोका क्यों नहीं गया ?

---

†मूल अंग्रेजी में

अध्यक्ष महोदय : इस का जवाब दे दिया गया है ।

श्री त्यागी (देहरादून) : इस बातका जवाब नहीं दिया गया है कि पुल के पास ट्रेन को क्यों नहीं रोका गया ।

अध्यक्ष महोदय : मिनिस्टर साहब ने कहा है कि जब ट्रेन चलती है, तो उतारने के बावजूद कई आदमी अननोटिस्ड फिर ऊपर चढ़ जाते हैं ।

श्री राम सेवक यादव : जिन लोगों ने ट्रेन को चलने दिया और जिन्होंने इसको पुल पर भी नहीं रोका, उनके खिलाफ क्या कोई कार्रवाई की जायगी क्योंकि वे इस दुर्घटना के लिये जिम्मेवार हैं ?

श्री स्वर्ण सिंह : मैं अर्ज़ करना चाहता हूं कि इस मामले में इनक्वायरी हो रही है । इनक्वायरी के बाद अगर यह पाया गया कि किसी अधिकारी का कसूर था तो यकीनन उसके खिलाफ कार्रवाई की जायगी ।

कुछ माननीय सदस्य : अध्यक्ष महोदय . . . . . .

अध्यक्ष महोदय : हर एक मेम्बर सवाल नहीं पूछ सकता है । जिन्होंने नोटिस दिया है, वे एक एक सवाल पूछेंगे ।

श्री बागड़ी : यह साफ़ ज़ाहिर है कि सवारियां ऊपर थीं और उनको उतारा गया । यह भी आप को पता है कि आगे खतरा था । उनको यह भी पता था कि यह रुटीन है कि चलती हुई गाड़ियों पर लोग चढ़ जाते हैं । जब यह सब कुछ उनको पता था और खतरे की बात भी मालूम थी तो फिर पुल के पास गाड़ी को रोकने की कोशिश गार्ड ने या ड्राइवर ने क्यों नहीं की और अगर नहीं की तो यह स्पष्ट है कि इस सब चीज़ का पता होते हुए भी वे गाड़ी को ले गये और ऐसी हालत में क्या उनके खिलाफ कोई ऐक्शन आप ले रहे हैं ।

श्री स्वर्ण सिंह : इसका जवाब इस बात पर निर्भर होगा कि जिस वक्त गाड़ी चली उस वक्त गार्ड को पता था या नहीं कि ऊपर कुछ आदमी बैठे हैं । चूंकि इनक्वायरी हो रही है, इसलिये मेरे लिये इसके हक में या इसके खिलाफ कुछ कहना मुनासिब नहीं होगा ।

श्री रघुनाथ सिंह : ददरी का जो मेला है, यह बहुत भारी मेला है और अलाहाबाद और सारन तक से आदमी आते हैं । हर साल इस मेले के अवसर पर स्पेशल ट्रेनें चला करती थीं । क्या वजह है कि इस साल स्पेशल ट्रेनें नहीं चलीं और गाड़ियों में और बोगीज़ क्यों नहीं जोड़ दी गईं ताकि लोग छतों पर सफर न करते । आप के स्टेटमेंट से ज़ाहिर होता है कि सब नार्मल ट्रेन्ज़ ही थीं ।

श्री स्वर्ण सिंह : नार्थ ईस्टर्न और नार्थ ईस्ट फ्रंटियर रेलवे दोनों में हमने कोशिश की है कि कोई बयान न दें कि बड़ा भारी बोझा रहा है इस एमरजेंसी के वक्त में और कोई स्पेशल ट्रेन वहां नहीं चलाई जा सकती है ।

श्री सरजू पाण्डेय : क्या यह सही है कि इस एमरजेंसी की वजह से बहुत सी गाड़ियों में डिब्बे कम कर दिये गये हैं जिस की वजह से गाड़ियों में बहुत भीड़ होती है और क्या इस भीड़

---

†मूल अंग्रेजी में

को रोकने के लिये पुलिस का प्रबन्ध किया गया। क्या दूसरे स्टेशनों पर भी पुलिस का प्रबन्ध किया जा रहा है या नहीं किया जा रहा है ?

श्री स्वर्ण सिंह : जैसा कहा गया है सारा प्रबन्ध था। रेल कर्मचारियों ने भी और पुलिस अफसरों ने भी कोशिश की और लोगों को उतारा भी। जो आपने यह कहा कि एमरजेंसी की वजह से गाड़ियों में कुछ डिब्बे कम हुए हैं, हो सकता है कि कहीं कहीं कम भी हुए हों, लेकिन मैं कह सकता हूं कि भारी बांझे के बावजूद भी रेलगाड़ियां उस सैक्शन में वैसी ही चल रही हैं। लेकिन हमें हैरानी नहीं होनी चाहिये अगर एमरजेंसी की वजह से कोई गाड़ी काटनी पड़े। उसके लिये भी हमको तैयार रहना चाहिये।

श्री यशपाल सिंह : स्पेशल ट्रेनों का इंतज़ाम नहीं था और सवारियां ज्यादा थीं। मैं जानना चाहता हूं कि टिकटों की बुकिंग क्यों खत्म नहीं की गई और यह आर्डर क्यों नहीं दिया गया कि टिकटों का बेचना बन्द कर दिया जाय।

श्री स्वर्ण सिंह : शायद माननीय सदस्य को नहीं पता है कि बदकिस्मती से उस हिस्से में बगैर टिकट के भी लोग सफर करते हैं।

†**श्री त्यागी** : यह महत्वपूर्ण विषय है। उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है कि वहां सारा प्रशासन ही ठप्प है। लोग बिना टिकट सफर करते हैं। और यात्रियों ने ही दुर्घटना के बारे में बताया ?

श्री शिवमूर्ति स्वामी (कोप्पल) : गाड़ी में कितने लोगों के लिये जगह थी और कितने टिकट जारी किये गये।

श्री स्वर्ण सिंह : इस के लिये मेरे पास कोई सूचना नहीं है।

त्यागी जी बहुत नाराज़ नज़र आते हैं। यह जो एक्सीडेंट हुआ है बहुत ही अनफार्चुनेट है। लेकिन ट्रेसपासर्ज़ रेलवे लाइन पर आयें, छतों पर चढ़ें, उस सूरत में लोगों को बचाया तो जा सकता है लेकिन लोगों को अपने आप से नहीं बचाया जा सकता है।

†**श्री वी० चं० शर्मा** (गुरदासपुर) : क्या जांच रेलवे इंस्पेक्टर द्वारा की जा रही है या न्यायिक प्राधिकारी द्वारा।

श्री स्वर्ण सिंह : अपने बयान में मैं ने कहा है कि आज इनक्वायरी शुरू हुई है गवर्नमेंट इंस्पेक्टर आफ रेलवेज़ की तरफ से जो कि हाउस जानता है कि एक इंडीपेंडेंट आथोरिटी है।

श्री प्रिय गुप्त : इस किस्म की कार्रवाई, ओवर क्राउडिंग और रूफ पर चढ़ना वगैरह जो कि अक्सर हमारे एन० ई० रेलवे में होती है, उसको देखते हुए, एस० एम० गार्ड और ड्राइवर तथा दूसरे अफसर वहां प्रेजेंट रहते हैं तो सवारियों को उतारने के लिये जब उनके द्वारा गाड़ी को रोके रखा जाता है तो क्या कोई कार्रवाई उनके खिलाफ की जाती है या उस वक्त अन-आफिशली कह दिया जाता है कि गाड़ी को आगे बढ़ाओ। कटिहार में ऐसा हुआ है कि आदमियों को रूफ से उतारने की कोशिश की गई और उसके बाद उन पर कार्रवाई हुई।

अध्यक्ष महोदय : इसका जवाब आ जाने दीजिये।

श्री स्वर्ण सिंह : यह हिपोथेटीकल सवाल है। इस का मैं क्या जवाब दूं। किसी हद तक सवाल दूसरे माननीय सदस्य जो कर रहे हैं, उस का यह जवाब है।

---

†मूल अंग्रेजी में

श्री प्रिय गुप्त : गाड़ी चलती है तो भी खतरा था और अगर नहीं चलती तो भी खतरा था. .

श्री विश्राम प्रसाद : आपने कहा है कि जब गाड़ी छूटती है तो लोग ऊपर चढ़ जाते हैं। लेकिन इस तरह से एक सौ या दो सौ आदमियों का ऊपर चढ़ना बहुत मुश्किल होता है। दूसरी यह बात है कि जब गाड़ी चल रही थी और पुल के पास पहुंची तो वहां पर उस को रोक कर क्या पैसेंजर्ज को यह कहा गया या नहीं कहा गया कि आप लोग लेट जाओ, क्योंकि आगे खतरा है ?

अध्यक्ष महोदय : मैम्बर साहिबान ने बहुत से सवाल किये हैं। उनके दिल में नाराजगी भी है, यह बात दुरुस्त है। यह जो दुर्घटना हुई है यह बहुत अफसोसनाक है। जो इतने लोग मर गये हैं, इस का हर एक को बहुत दुख है। मगर मिनिस्टर साहब ने कहा है कि किस का कसूर है, इस की इनक्वायरी हो रही है। इसके बावजूद भी बार बार उसी सवाल को दुहराये जा रहे हैं। इनक्वायरी की रिपोर्ट को आ जाने दीजिये, फिर देख लिया जायगा।

श्री प्रिय गुप्त : इन्क्वायरी किस बात की। ट्रेनें तो लड़ी नहीं हैं।

अध्यक्ष महोदय : जरूरी नहीं है लड़ें और इन्क्वायरी हो। दूसरे केसिस में भी करनी पड़ती है।

सभा-पटल पर रखे गये पत्र

दिल्ली मोटर गाड़ी नियम, १९४०

†**परिवहन तथा संचार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री भगवती)** : मैं श्री राजबहादुर की ओर से मोटर गाड़ी अधिनियम, १९३९ की धारा १३३ की उप-धारा (३) के अन्तर्गत दिल्ली मोटर गाड़ी नियम, १९४० में कुछ और संशोधन करने वाली निम्नलिखित अधिसूचनाओं की एक-एक प्रति सभा पटल पर रखता हूं :—

(एक) दिनांक १९ अप्रैल, १९६२ के दिल्ली गजट में प्रकाशित अधिसूचना संख्या एफ० १२/१०२/६०—परिवहन।

(दो) दिनांक २६ जुलाई, १९६२ के दिल्ली गजट में प्रकाशित अधिसूचना संख्या एफ० १२/७६/६०—परिवहन।

[पुस्तकालय में रखी गई। देखिये संख्या एल० टी० ५१७/६२]

कृषि उत्पाद (विकास तथा भाण्डागार) निगम अधिनियम, १९५६

†**सामुदायिक विकास, पंचायती राज और सहकार मंत्री (श्री सु० कु० डे)** : मैं कृषि उत्पाद (विकास तथा भाण्डागार) निगम, अधिनियम, १९५६ की धारा ३ के अन्तर्गत निकाली गई दिनांक ३ नवम्बर, १९६२ की अधिसूचना संख्या जी० एस० आर० १४५१ की एक प्रति पुनः सभा पटल पर रखता हूं। **[पुस्तकालय में रखी गई। देखिये संख्या एल० टी० ५१८/६२]**

भारतीय चिकित्सा परिषद् (स्नातकोत्तर डाक्टरी शिक्षा समिति) नियम

†**स्वास्थ्य मंत्रालयमें उपमंत्री (श्री डा० द० स० राजू)** : मैं भारतीय चिकित्सा परिषद् अधिनियम, १९५६ की धारा ३२ की उप-धारा (२) के अन्तर्गत दिनांक २२ जलाई, १९६१ की अधिसूचना संख्या एस० ओ० १९९९ में प्रकाशित भारतीय, चिकित्सा परिषद् (स्नातकोत्तर डाक्टरी शिक्षा समिति) नियम १९६१ की एक प्रति पुनः सभा पटल पर रखता हूं। **[पुस्तकालय में रखी गई। देखिये संख्या एल० टी० १५६/६२]**

---

†मूल अंग्रेजी में

†**श्री हरि विष्णु कामत** (होशंगाबाद): जानकारी केलिए पूछना चाहता हूं कि क्या यह प्रति पहले भी सभा पटल पर रखी गई थी ?

†**अध्यक्ष महोदय** : अवधि समाप्त नहीं हुई थी अतः पुनः रखनी पड़ी ।

तारांकित प्रश्न संख्या ११८२ के उत्तर में शुद्धि

†**सिंचाई और विद्युत् मन्त्रालय में राज्य-मंत्री (श्री अलगेशन)**: श्री मो० ना० सिंह द्वारा ३०-५-१९६२ को पूछे गये तारांकित प्रश्न संख्या ११८२ के उत्तर के सम्बन्ध में मैंने कहा था कि हीराकुड बांध परियोजना से जिन लोगों को हानि हुई थी उन्हें तब तक प्रायः ९० प्रतिशत क्षति-पूर्ति दी चुकी थी ।

भाग (ख) के उत्तर में मैं ने बताया था कि ८,३७,७२,६३८ रुपये ८५ नये पैसे की क्षतिपूर्ति दी गई थी ।

उड़ीसा सरकार से बाद की जानकारी मिलने पर पता लगा था कि ४,३७,७२,६३८ रुपये ८५ नये पैसे की क्षतिपूर्ति केवल मोगरा और ज्योति भूमि के लिए दी गई क्षतिपूर्ति थी और उसमें घरों, कुओं, तालाबों और अन्य विभिन्न प्रकार की सम्पत्ति के लिए दी गई क्षतिपूर्ति शामिल नहीं है । कुल दी गई क्षति पूर्ति ८,०९,७९,०३२ रुपये ८० नये पैसे है जो कि कुल देय क्षतिपूर्ति का ९० प्रतिशत है ।

†**श्री हरि विष्णु कामत** (होशंगाबाद) : श्रीमान्, एक औचित्य प्रश्न है । मैं इस से सहमत हूं कि कुछ मामलों में प्रश्न का उत्तर शुद्ध करना पड़ता है किन्तु प्रश्न का उत्तर देने में दस दिन और उससे भी अधिक समय लग जाता है और फिर उड़ीसा सरकार से गलत जानकारी मिलती है ?

†**श्री अलगेशन**: हमें उड़ीसा सरकार से बाद में मिली जानकारी से इसका पता लगा था । चूंकि यह जानकारी पहली जानकारी के विपरीत थी अतः मैंने यह कर्तव्य समझा कि उत्तर को शुद्ध कर दूं और यह जानकारी सभा के समय समक्ष रख दूं ।

पेट्रोलियम उत्पादों की संभरण स्थिति के बारे में वक्तव्य

†**खान और ईंधन मंत्री (श्री के० दे० मालवीय)** : समाचारपत्रों में कुछ गलत आलोचना के लोगों के मन में गलत धारणाएं पैदा होने की संभावना है अतः उन्हें दूर करने के लिए मैं देश में हर प्रकार के उपयोग के लिए ईंधन के संभरण की स्थिति का संक्षिप्त विवरण देना अपना कर्तव्य समझता हूं ।

अभी हाल ही में मैं ने सार्वजनिक सभा में कहा था कि पेट्रोल की वस्तुओं के भण्डार का भली प्रकार ध्यान रखा जा रहा है । मैं ने यह भी सामान्य रूप से कहा था कि पेट्रोल की वस्तुओं और विशेषतः मोटर के तेल का राशन करने की सरकार की कोई इच्छा नहीं है क्योंकि हम इन वस्तुओं का काफी उत्पादन करते है । किन्तु मैं जनता से अपील करता हूं कि वे मिट्टी के तेल का संयत प्रयोग करें क्योंकि देश में परिवहन सम्बन्धी कठिनाइयों के कारण मिट्टी के तेल का

---

†मूल अंग्रेजी में

संभरण कम होता है। यदि रोटी पकाने में मिट्टी के तेल का अधिक प्रयोग न किया जाये तो हम विदेशी मुद्रा बचा सकते हैं जिसकी अन्य आवश्यक कामों के लिए आवश्यकता है। उसके बदले में हम कोयले का काफी संभरण कर रहे हैं जो मिट्टी के तेल के स्थान पर खाना पकाने में प्रयोग किया जा सकता है।

पेट्रोल की अन्य वस्तुओं का संभरण काफी संतोषजनक है। इस सम्बन्ध में गलत समाचार निकले हैं वास्तव में देश में ईंधन की कोई कमी नहीं है। हाल ही में मैं अपनी आर्थिक सहयोग योजनाओं के बारे में विदेश गया था। वहां हमें कहीं भी धत्ता नहीं बताया गया प्रत्युत हमने सभी जगह संतोषजनक काम किया। इस संकटकाल में हमने तन मन से तेल की खोज के कार्य को तेज कर दिया है और रूस तथा पौलेंड में जहां हम ऋण प्राप्त करने और अधिक कोयले का उत्पादन करने और कोयला धोने में प्रविधिक्षों का सहयोग प्राप्त करने तथा हमारे अपने देश में खनन यंत्रों का उत्पादन करने के सम्बन्ध सहानुभूतिपूर्वक विचार किया गया और उन्होंने स्वीकृति भी दी। मैं स्वयं ही रूमानिया तथा इटली में नहीं गया क्योंकि यहां देश की स्थिति ऐसी थी कि मुझे लौटना पड़ा। इस कारण रूमानिया और इटली में निराशा प्रदर्शित की गई।

हम पेट्रोल की वस्तुओं के संग्रह और वितरण के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं कर रहे हैं। एक योजना के अन्तर्गत तेल क्षेत्र में सरकारी और गैर सरकारी उद्योग ने एक दूसरे को पूरा सहयोग दिया है और शीघ्र ही तेल संग्रह की और अधिक व्यवस्था हो जायेगी। मैं पूर्व और पश्चिम के देशों को धन्यवाद देना चाहता हूं जो हमें पेट्रोल की वस्तुएं देने और इनके संग्रह की व्यवस्था करने में हमारी सहायता की है। खेद है कि मैं इस संबंध में और विस्तृत वक्तव्य नहीं देना चाहता। केवल यह कहना चाहता हूं कि सरकार सारे विषय में बहुत सतर्क है।

†**श्री हरि विष्णुकामत** (होशंगाबाद) : श्रीमान्, जानकारी के लिए यह जानना चाहता हूं कि क्या माननीय मंत्री ने रूस के प्रधान मंत्री श्री खुश्चेव से इस विषय में बात की थी।

†**अध्यक्ष महोदय** : उन्होंने ऐसा किया होगा।

†**श्री त्रिदिब कुमार चौधरी** (बरहामपुर) : क्या माननीय मंत्री ने पेट्रोल सम्बन्धी स्थिति का निर्धारण आपातकाल को दृष्टिगत रखते हुए किया था।

†**श्री के० दे० मालवीय** : मैं केवल यह कहना चाहता हूं कि सरकार निरंतर इस विषय का ध्यान रख रही है।

†**श्री हेम बरुआ** : असम के तेल शोधक कारखानों को हवाई हमलों से बचाने के लिए क्या किया गया है?

†**अध्यक्ष महोदय** : यह प्रसंग संगत नहीं है।

विदेशियों सम्बन्धी विधि (लागू करना तथा संशोधन) विधेयक

†**गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री दातार)**: श्री लाल बहादुर शास्त्री की ओर से मैं प्रस्ताव करता हूं कि विदेशियों के पंजीयन सम्बन्धी अधिनयम, १९३९ और विदेशियों सम्बन्धी

---

†मूल अंग्रेजी में

अधिनियम, १९४६ को कुछ ऐसे व्यक्तियों पर लागू करने, जिन पर वे इस समय लागू नहीं होते हैं और विदेशियों सम्बन्धी अधिनियम, १९४६ में अग्रेतर संशोधन करने वाले विधेयक के पुरःस्थापित करने की अनुमति दी जाये ।

†**अध्यक्ष महोदय** : प्रश्न यह है :

"कि विदेशियों के पंजीयन सम्बन्धी अधिनियम, १९३९ और विदेशियों सम्बन्धी अधिनियम, १९४६ को कुछ ऐसे व्यक्तियों पर लागू करने, जिन पर वे इस समय लागू नहीं होते हैं और विदेशियों सम्बन्धी अधिनियम, १९४६ में अग्रेतर संशोधन करने वाले विधेयक को पुरःस्थापित करने की अनुमति दी जाये ।"

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ ।

†**श्री दातार** : मैं विधेयक को पुरःस्थापित करता हूं :

विदेशियों सम्बन्धी विधि (लागू करना तथा संशोधन) अध्यादेश, १९६२ के बारे में वक्तव्य

†**गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री दातार)** : मैं लोक-सभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन सम्बन्धी नियमों के नियम ७१(१) द्वारा अपेक्षित विदेशियों सम्बन्धी विधि (लागू करना तथा संशोधन) अध्यादेश १९६२ (१९६२ का संख्या ५) द्वारा तत्काल विधि बनाने के कारण बताने वाले व्याख्यात्मक वक्तव्य की एक प्रति सभा पटल पर रखता हूं ।

[पुस्तकालय में रखी गई । देखिये संख्या एल० टी० ५१९/६२]

समवाय संशोधन विधेयक

†**वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री (श्री क०च० रेड्डी)** : मैं प्रस्ताव करता हूं कि समवाय अधिनियम १९५६ में अग्रेतर संशोधन करने वाले विधेयक को पुरःस्थापित करने की अनुमति दी जाये ।

†**अध्यक्ष महोदय** : प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ :

"कि समवाय अधिनियम, १९५६ में अग्रेतर संशोधन करने वाले विधेयक को पुरःस्थापित करने की अनुमति दी जाये ।"

†**श्री हरि विष्णु कामत** (होशंगाबाद) : मैं औचित्य सम्बन्धी प्रश्न पूछना चाहता हूं कि सरकार की यह प्रथा बन गई है कि वह एक अधिवेशन में विधेयक को पुरःस्थापित कर देती है और फिर दूसरे अधिवेशन में उसे पारित करती है । इस आपातकाल में क्या सरकार आश्वासन देगी कि इस अधिवेशन में पेश किये गये विधेयक इसी अधिवेशन में पारित किये जायेंगे ।

†**अध्यक्ष महोदय** : प्रश्न यह है :

"कि समवाय अधिनियम, १९५६ में अग्रेतर संशोधन करने वाले विधेयक को पुरःस्थापित करने की अनुमति दी जाये ।"

श्री क० च० रेड्डी : मैं विधेयक को पुरःस्थापित करता हूं ।

---

†मूल अंग्रेजी में

समवाय (संशोधन) अध्यादेश, १९६२ के बार में वक्तव्य

†**वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री (श्री क० च० रेड्डी)** : लोक-सभा के प्रक्रिया तथा कार्य-संचालन सम्बन्धी नियमों के नियम ७१(१) के द्वारा अपेक्षित समवाय (संशोधन) अध्यादेश, १९६२ (१९६२ का संख्या ७) द्वारा तत्काल विधान बनाने के कारण बताने वाले व्याख्यात्मक वक्तव्य की एक प्रति सभा पटल पर रखता हूं।

[पुस्तकालय में रखा गया । देखिये संख्या एल० टी० ५२०/६२]

आपात उद्घोषणा तथा चीन के आक्रमण के बारे में संकल्प--जारी

†**अध्यक्ष महोदय** : हम दोनों संकल्पों तथा तत्सम्बन्धी संशोधनों पर चर्चा आरम्भ करते हैं।

श्री बिशनचन्द्र सेठ (एटा): अध्यक्ष महोदय, पिछले तीन चार दिनों में इस सदन में जो कार्य हुआ उसको मैंने देखा और जो माननीय सदस्यों के भाषण हुए उनको मैंने गम्भीरता से सुना ।

इससे पहले कि मैं अपना भाषण शुरू करूं मैं यह उचित मानता हूं कि उन जवानों को, जिन्होंने हमारी सीमा पर अपने प्राणों से हाथ धोए या जिनको अनेक चोटें आयी हैं, अपना हार्दिक धन्यवाद दूं।

मैं सदन के समक्ष यह उल्लेख करना चाहता हूं कि यह जो संकटकालीन स्थिति हमारे देश के सामने आयी है इसके सम्बन्ध में अनेकों वर्ष पूर्व हिन्दू महासभा ने दो बातें कही थीं, मैं उनकी ओर आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं। महासभा ने कहा था कि हिन्दू-आइज्ड पालिटिक्स और मिलिटराइज्ड हिन्दू होने चाहिएं। यदि इन शब्दों की ओर शासन ने ध्यान दिया होता तो मैं विश्वास दिलाना चाहता हूं कि देश के सामने आज यह समस्या ही न आती। आज जो संकट समारे सामने है उसके मैं चार मौलिक कारण मानता हूं। मैं उनकी ओर आपका और सदन का ध्यान दिलाना चाहता हूं और बतलाना चाहता हूं कि आखिर यह बात हमारे सामने कैसे आयी और क्यों आयी।

इसका पहला कारण यह है कि हमारी सैनिक तैयारी नहीं थी। आज से चन्द दिन पहले हमारे आदरणीय प्रधान मंत्री ने कहा कि हमने सेना के सम्बन्ध में जो गलतियां की हैं उनकी जांच करने के लिए एक कमेटी बिठाएंगे। मैं अपने माननीय प्रधान मंत्री जी से इस सदन के द्वारा कहना चाहता हूं कि इधर उधर एनक्वायरी करने की जरूरत नहीं है, वे स्वयं अपना निरीक्षण करें कि सारे देश ने उनसे क्या कहा था। देश ने कहा था कि देश के बारडर को मजबूत करो, हमारे देश में यह कमी है। मगर हमारे आदरणीय प्रधान मंत्री तो शान्ति और पंचशील के दूत हैं, उन्होंने कभी भी इस बात को स्वीकार नहीं किया, और उसीका यह नतीजा है कि स्वयं प्रधान मंत्री जी अपने श्रीमुख से कहते हैं कि हमने क्या गलती की है इसकी जांच की जाएगी।

---

†मूल अंग्रेजी में

[श्री बिशन चन्द्र सेठ]

मैं बड़ी विनम्रता से कहना चाहता हूं कि दूसरे की ओर देखने के बजाए पंडित जी स्वयं को देखें और अपने हृदय से सोचें कि यह गलती किस की है।

दूसरी गलती इस सम्बन्ध में मैं यह मानता हूं कि जिस समय भारत स्वतंत्र हुआ यदि उसी समय से पाकिस्तान के साथ उचित बरतावा किया जाता तो कभी भी इस प्रकार की परिस्थिति का निर्माण न हुआ होता जैसाकि हम आज देखते हैं। हमारी तो यह स्थिति है कि, जैसा पंडित जी ने कहा, पाकिस्तान ने हमारे देश पर कोई दो हजार चुटपुट आक्रमण किए हैं। यह बात कहे एक साल के लगभग हो गया और तब से सौ, दो सौ चार सौ और आक्रमण पाकिस्तान कर चुका होगा। इसका नतीजा यह है कि आज सारी दुनिया यह समझती है कि भारत को चाहे कोई भी दबा ले, भारत का काम दबना है और इसी नीति का फल चीनी आक्रमण के रूप में हमारे सामने है।

तीसरी गलती मैं यह मानता हूं कि सन् १९५१ में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने चीन को तिब्बत का दान कर दिया। वह हमारा बफर स्टेट था। अगर हम तिब्बत को सुरक्षित रखते तो आज जो यह सवाल देश के सामने आया है न आता। तिब्बत की ओर से बड़ी उदासीनता बरती गयी और उसे चला जाने दिया गया। उसमें हमारे मानसरोवर जैसे महान तीर्थ स्थान थे। इस बारे में अनेकों बातें माननीय मित्रों ने सदन में कही हैं। मैं कहना चाहता हूं कि यदि तिब्बत हमारे पास होता तो यह स्थिति जो आज हमारे सामने है न होती।

इसके बाद मैं चौथी बात कहना चाहता हूं। सन् १९५१ में तिब्बत का दान हुआ और सन् १९५५ में भारत पर चीन का हमला हुआ। एक तरफ भारत पर चीन का हमला होता है और दूसरी ओर चीन के प्रधान मंत्री इस देश में पधारते हैं, और सन् १९५९ में यह बात लोक सभा में बतलायी जाती है कि चीन का हमला सन् १९५५ में हुआ था। मैं बड़े अदब के साथ यह प्रश्न करना चाहता हूं कि इस प्रजातंत्र का अर्थ क्या है? सारे देश के चुने हुए प्रतिनिधियों में से कुछ सज्जन प्रधान मंत्री तथा मंत्री चुने जाते हैं। फिर क्या कारण था कि देश को इस विषय में अंधेरे में रखा गया। अगर सन् १९५९ के बजाए चार साल पहले, यानी सन् १९५५ में ही आदरणीय प्रधान मंत्री ने देश को बतला दिया होता कि चीन ने हम पर हमला किया तो देश में चीनी हिन्दी भाई भाई का नारा न लगता। अगर जनता को इस बात की जानकारी होती तो देश में उस आदमी के लिए जिसने हमारे देश पर हमला किया है किसी प्रकार का स्वागत का स्थान न होता। सम्भव है कि मेरे कुछ मित्र कहें कि मैं कुछ गलत सी बात कह रहा हूं। लेकिन मेरी आत्मा में जो भावना है उसको मैं व्यक्त करना चाहता हूं।

मैं आपसे कहना चाहता हूं कि हमारी नीति के कारण ही चीन हमारे साथ यह बरतावा कर सका। हमारे नेताओं ने तो शान्ति का और चरखा चलाने का पाठ पढ़ा है। लेकिन दुनिया का काम इन चीजों से नहीं चल सकता। आज दुनिया के सामने अनेक मुसीबतें आ रही हैं। ऐसी स्थिति में हमारी आंख खोलने का काम चीन ने किया है।

मैं यह बड़ी जिम्मेदारी के साथ कहना चाहता हूं कि सारे देश ने और इस हाउस ने अनेक बातें श्री कृष्ण मेनन के सम्बन्ध में कही हैं, परन्तु मैं उनको बिल्कुल मानने को तैयार नहीं। क्योंकि जो कुछ हुआ है उसके लिए हमारी सारी कबिनेट ज्वाइंटली रेसपांसिबिल

है। कोई भी कार्य किसी भी विभाग के द्वारा हो उसके लिए सारी कैबिनेट जिम्मेदार होती है। कैबिनेट का यह काम होता है कि वह प्रधान मंत्री को ठीक प्रकार की सलाह दे। परन्तु आज भारत का यह दुर्भाग्य है कि हमारे मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू की आंख तोला करते हैं। किसी में इतनी जुरत नहीं कि ईमानदारी से पंडित जी को बतलाए और उनसे झगड़ा करे कि देश के ऊपर इस प्रकार की स्थिति आने वाली है। आज इस तरह की दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति में मैं सारे मिनिस्टरों को जिम्मेदार मानता हूं, केवल श्री कृष्ण मेनन को दोषी नहीं मानता।

आज मैं एक बात सारे संसार के सामने कहना चाहता हूं। मैं इस लड़ाई को चीन और भारत की लड़ाई नहीं मानता। यह लड़ाई सारे संसार के प्रजातांत्रिक शासन प्रणाली के मानने वालों और कम्युनिस्ट विचारधारा के मानने वालों के बीच है। ऐसी स्थिति में अगर प्रजातांत्रिक पद्धति को मानने वाले देश हमारे देश को आर्थिक और शस्त्रों की सहायता देते हैं तो हमें उस सहायता को बिला शक लेना चाहिए और उनको इसके लिए धन्यवाद देना चाहिए। आज इस प्रकार की सहायता संसार की आवश्यकता है। संसार दो पहियों की गाड़ी पर चल रहा है, आज संसार में दो विचारधाराएं चल रही हैं, एक साम्यवादी विचारधारा है और दूसरी प्रजातांत्रिक विचारधारा। हमको उन देशों से मदद लेने में संकोच नहीं करना चाहिए जिनकी विचारधारा हमारे समान है।

हमारे कुछ मित्र कहते हैं कि अगर हमने अमरीका की सहायता ली तो हमको पाकिस्तान की तरह उसका दासत्व स्वीकार करना पड़ेगा। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि ऐसी बात बिल्कुल नहीं है। पाकिस्तान ने जिस स्थिति में मदद ली वह दूसरी विचारधारा थी। उसने अपनी आत्मा को अमरीका के हाथ में बेचा था। परन्तु आज तो संसार के सामने दो विचार-धाराओं की लड़ाई है। ऐसी स्थिति में हमको मदद अवश्य लेनी चाहिए।

●

मैं एक बात इस सम्बन्ध में आपके सामने और रखना चाहता हूं। जिस समय जार को रूस पर संकट दिखायी दिया और जिस समय कम्युनिस्ट, स्टालिन आदि, रशिया पर अपनी विचाराधारा थोपना चाहते थे तो जार ने एक स्टेटमेंट निकाला और उसमें कहा था कि हम सारे संसार से प्रार्थना करना चाहते हैं कि हमारे पास पैसे की कमी है। दुनिया के सारे देश जो प्रजातंत्र में या राज शासन में विश्वास करते हैं हमारी मदद करें। कि उस समय सारी दुनिया में रशियन बौंड बिके और अरबों रुपया लोगों ने दिया। मैं उस बात में और ज्यादा नहीं जाना चाहता। इतना ही निवेदन है कि यह विचारधारा की लड़ाई है। मैं तो मानता हूं कि यह लड़ाई केवल भारत और चीन की ही नहीं बल्कि प्रजातन्त्र और साम्यवाद के बीच है अतः प्रजातन्त्री भारत जो कि अपने देश की आजादी की हिफाजत के लिये लड़ रहा है उसको सभी प्रजातान्त्रिक देशों का सहयोग और समर्थन मिलना ही चाहिए और यह हर्ष का विषय है कि हमें उनका समर्थन और सहयोग मिल भी रहा है। जिन देशों ने इस संकटकालीन अवसर पर हमारी ओर सहायता का हाथ बढ़ाया और जिस रूप में वे हमारी सहायता कर रहे हैं उनके लिए हम हृदय से आभारी हैं। लेकिन इतना मैं अवश्य निवदन करूंगा कि ऐसा करके वे कोई इस मुल्क पर खास अहसान नहीं कर रहे हैं क्योंकि जैसा मैंने पहले कहा यह संघर्ष भारत और चीन के बीच में हो न हो कर साम्यवाद और प्रजातन्त्र की लड़ाई भी है और इस नाते सभी प्रजातन्त्री देशों का कर्तव्य हो जाता है कि प्रजातन्त्र की रक्षा करें और साम्यवादी विचारधारा को उस पर अधिकार न करने दें।

[श्री बिशन चन्द्र सेठ]

एक बड़ी सीधी सी बात मैं निवेदन कर देना चाहता हूं कि आज हिन्दुस्तान की पोज़ीशन क्या है ? हम बिल्कुल बैलेंसिंग पोज़ीशन में हैं । अगर आज हम रूस की तरफ़ बढ़ जायें तो संसार का बैलेंस उनकी ओर चला जाएगा और अगर आज हम अमरीका की तरफ दिल खोल कर चले जायें तो अमरीकन गुट का बैलेंस बढ़ जायेगा । ऐसी परिस्थिति में अमरीका, इंग्लैंड, कनाडा आदि देशों ने जो हमारी मदद की है उनके लिये मैं कोई ऐसी बात नहीं मानता हूं कि उन्होंने बड़ी उदारता की है । जिस सज्जनता का व्यवहार उन्होंने हमारे साथ किया और हमें सहायता व समर्थन दे रहे हैं वह उनसे अपेक्षित है और प्रजातन्त्र की रक्षा के लिए उन्हें अधिक से अधिक हमारी मदद करनी ही चाहिए ।

हमारे प्रधान मंत्री महोदय ने कई मर्त्तबा यह बात कही है कि लड़ाई लम्बी चलेगी । मैं बिलकुल इसको मानने को तैयार हूं । लेकिन मैं चाहता हूं कि जहां वह चीन के साथ लम्बी लड़ाई चलने का संकेत करते हैं तो उसमें एक शब्द पाकिस्तान जोड़ना वह भूल न जायें । मैं निवेदन करना चाहता हूं कि इस लड़ाई को केवल भारत और चीन की लड़ाई मानना बड़ी भूल होगी । पाकिस्तान भी समय पाते नया मोर्चा बनावेगा । किसी भी वक्त मौका मिलते ही वह भारत के विरुद्ध नया फ्रंट खोल सकता है । पाकिस्तान पर अमरीका द्वारा दबाव डाले जाने के कारण कुछ लोग ऐसा सोचते हैं कि पाकिस्तान नया फ्रंट नहीं खोलेगा । मेरी इस सम्बन्ध में प्रधान मंत्री जी से कोई बातचीत नहीं हुई तो भी मैं उनकी मानसिक स्थिति को तोल कर बतलाना चाहता हूं कि उनके मन में यह भावना रही कि रूस भारत-चीन झगड़े में इंटरवीन करेगा लेकिन यह कल्पना असत्य साबित हुई और जो लोग ऐसी कल्पना करते थे कि रूस के बीच में पड़ने के कारण यह संघर्ष लम्बा नहीं खिंचेगा, उनकी कल्पना भी गलत साबित हुई । जिस तरह से चीन ने रूस का कोई प्रभाव नहीं माना उसी तरह मैं सदन को बतलाना चाहता हूं कि पाकिस्तान पर भी अमरीका कोई प्रभाव नहीं डाल सकेगा और उपयुक्त मौका मिलते ही पाकिस्तान हमारे सामने एक नया फ्रंट खोल देगा । जितने भी माननीय सदस्य विराजमान हैं उनका ध्यान मैं इस ओर दिलाते हुए कहना चाहता हूं कि हमें केवल चीन से ही नहीं वरन् चीन और पाकिस्तान दोनों से लड़ना पड़ेगा । इस बात को आपको ध्यान में रखना चाहिए ।

मैं यहां पर कर्नल नासर और क्यूबा की छोटी सी मिसाल देना चाहता हूं । कर्नल नासर के उस छोटे से राष्ट्र ने, स्वेज कैनाल, जिसमें कि संसार की महान शक्तियां निहति थीं, जिसमें सारे संसार का इंटरैस्ट लगा हुआ था, एक छोटी सी शक्ति ने सारे संसार को आंख दिखा कर उस पर कब्जा कर लिया । ऐसा हो सकने का एक ही कारण था कि वह दिलेरी के साथ, हिम्मत के साथ और शक्ति के साथ दुनिया के सामने आया ।

क्यूबा की मिसाल भी मैं देना चाहता हूं । क्यूबा की चार दिन की बात है कि अगर अमरीकन फौरन उनके चारों तरफ घेरा न डाल दिये होते और रूस को यह पता नहीं लग जाता कि यह सौदा महंगा पड़ेगा तो वह पीछे कदम हटाने वाले नहीं । लेकिन दुनिया ने देखा कि वही रूस जिसको कि दुनिया इतना बड़ा तूफान समझ रही थी, अपनी आबरू दबा कर सारे के सारे अपने जहाज बखैरियत वापिस मोड़ ले गया और उसकी अमरीकनों का सामना करने की हिम्मत न हुई । मेरा कहना यह है कि **माइट इज राइट** । जब तक शक्ति की पूजा आप नहीं करेंगे संसार में आपको मान्यता प्राप्त न होगी । ऐसी स्थिति में हमारे देश को जो चेतावनी चीन की तरफ से मिली है उस का पूरा लाभ उठा कर सारे देश को हमें पूरी तरह से तैयार करना है ताकि कितनी भी बड़ी से बड़ी लड़ाई इस देश में क्यों न आवे हम उसका कामयाबी के साथ मुकाबला कर सकें ।

जैसा कि अन्य मित्रों ने कहा है मैं भी कहूंगा कि कोई कारण नहीं है कि हम इस संघर्ष में विजयी न हों। यह तो ठीक है कि हम जीतेंगे लेकिन इसका ध्यान रखना होगा कि बगैर तैयारी के हम नहीं जीत सकते।

यहां पर मैं एक बड़ी जरूरी चीज़ निवेदन करना चाहता हूं। सन् १९५९ में मने एक पत्र पंडित जवाहरलाल नेहरू को भेजा था। उन्होंने मुझे उसका २१ दिसम्बर सन् १९५९ में जवाब दिया। मैं उस जवाब का एक पैराग्राफ आपके सामने रखना चाहता हूं। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने जवाब में मुझे लिखा कि आपने जो कुछ लिखा है उस में अक्सर वाकयात सही नहीं हैं और अक्सर और भी ग़लतफहमियां हैं लेकिन उनकी सफसील में मैं एक पत्र में नहीं जा सकता। हो सकता है कि आपके विचार और मेरे विचारों में काफ़ी अन्तर हो। लेकिन यह आपका गलत ख़याल है कि सरहद के मामले में कोई हमारी तरफ़ से कमज़ोरी हुई है या होने वाली है। सन् १९५९ में हमारे प्राइम मिनिस्टर ने यह पत्र मुझे लिखा था .....

†**श्री रघुनाथ सिंह** (वाराणसी): मेरे मित्र एक निजी पत्र की ओर निदेश कर रहे हैं। क्या वे इसे पढ़ सकते हैं ?

†**श्री प्रिय गुप्त** (कटिहार): यह निजी पत्र नहीं है। यह सरकार या प्रधान मंत्री ने लिखा है।

†**अध्यक्ष महोदय** : अन्य सदस्य ने विनिर्णय दे दिया है अतः मुझे कुछ नहीं कहना है।

†**विधि मंत्री (श्री अ० कु० सेन)** : एक औचित्य प्रश्न है। क्या मैं यह निवेदन कर सकता हूं कि प्रधान मंत्री के पत्र का उल्लेख किया जा सकता है यदि वह प्रसंग संगत हो और यह सारा पत्र-व्यवहार सभा पटल पर रखा जाय क्योंकि फिर यह कार्यवाही का अंग बन जाता है।

†**अध्यक्ष महोदय** : मैं माननीय सदस्य से कहूंगा कि वे पत्र-व्यवहार सभा पटल पर रखें।

†**श्री बिशनचन्द्र सेठ** : मैंने पूरी चिट्ठी नहीं पढ़ी केवल उसका एक पैराग्राफ पढ़ा है और जो मैंने सदन को बतलाया है वह कोई नयी चीज नहीं है। मने उसको अगर यहां रेफर कर दिया तो क्या मुसीबत खड़ी हो गयी।

†**श्री स० मो० बनर्जी** (कानपुर) : एक औचित्य प्रश्न है। सभा की यह प्रथा रही है कि प्रधान मंत्री के पत्र पढ़े जाते हैं किन्तु उसके लिए उसे प्रधान मंत्री की अनुमति लेनी होती है।

†**अध्यक्ष महोदय** : अनुमति लेना तो सदस्य के लिए है। पत्र-व्यवहार सभा पटल पर रखने की मांग सभा* कर सकती है।

श्री बिशन चन्द्र सेठ : ठीक है मैं पूरी चिट्ठियों को सदन की मेज पर रख दूंगा। अपनी चिट्ठी भी रख दूंगा और पंडित जी ने जो चिट्ठी भेजी है वह ओरीजनल उनके दस्तख़त शुदा चिट्ठी हाउस की मेज़ पर रख दूंगा।

मैं यह निवेदन कर रहा था कि पंडित जी ने अपने पत्र में ही नहीं वरन् सैकड़ों बार इस पार्लियामेंट में और पार्लियामेंट के बाहर यह ऐलान किया है कि हमारी सरहदें बिलकुल मजबूत हैं लेकिन

---

†मूल अंग्रेजी में

*पुस्तकालय में रखा गया। देखिये संख्या एल० टी० ५३३/६२।

[श्री बिशन चन्द्र सेठ]

आज जो इस दिशा में हमारी कमज़ोरी साबित हुई उसका मूल कारण क्या रहा ? केवल एक ही कारण रहा कि पंडित जी ने कभी भी ईमानदारी के साथ महसूस नहीं किया कि हमारे देश पर कोई भी ख़तरा आने वाला है । आज पंडित जी की उस भावना और दयालुता का फल हमारे सामने है । दुनिया ने कहा और सारा देश चिल्लाया कि देश को मिलैटिराइज करिये, उसको शक्ति सम्पन्न करिये परन्तु हमारे देश के बड़े बड़े नेताओं ने, मैं उनके नाम नहीं लेना चाहता क्योंकि इस पर फिर एतराज किया जाएगा, हमारे उन नेताओं ने इसी सदन में कहा और अखबारों में भी उनके बक्तव्य मैंने पढ़े कि हमारे देश को सेना की आवश्यकता ही नहीं है । अब आज मैं अपने उन माननीय नेताओं से क्या पूछ सकता हूं कि आज देश को यह सैन्य शक्ति की आवश्यकता कैसे पड़ी रही है ? सर्वमान्य सिद्धान्त है कि लोहे से लोहा ही कटता है । हमारे पंडित जी ने इसी सदन में कुछ दिन पहले कहा था कि हम एटम बम बना सकते हैं परन्तु हम जो एटम् बनायेंगे उनका व्यय शान्ति के मार्ग में करेंगे । लेकिन मैं बतलाना चाहता हूं कि संसार में बिन भय होय न प्रीति का सिद्धान्त चलता है । जब तक शक्ति नहीं हैं तब तक आप की कोई भी बात नहीं सुनेगा । कमजोर व्यक्ति अथवा राष्ट्र कभी शान्ति का दूत नहीं बन सकता । अगर आप शक्तिशाली हैं तभी आपकी बात का दुनिया में प्रभाव पड़गा । इसलिए शान्ति की बात करने से पहले आपको अपने को शक्तिशाली बनाने का यत्न करना चाहिए ।

इसके बाद मुझे अपने कुछ कम्युनिस्ट सज्जनों के बारे में निवेदन करना है । श्री हीरेन मुकर्जी ने कुछ दिन पहले यह बात कही थी कि जिस प्रकार दो भाइयों में जमीन का झगड़ा होता है ठीक उसी प्रकार दो देशों के बीच में यह ज़मीन का झगड़ा है । परन्तु आज वही ब्लाक यह कह रहा है कि नहीं चीनी ऐग्रैसर हैं, मैं अपने आदरणीय मित्रों को कहना चाहता हूं, मैं टौंटिंग्ली नहीं कह रहा हूं, बल्कि वस्तुतः कह रहा हूं, मैं चाहता हूं कि आप उस पर विचार करें । ऐसा नहीं होना चाहिए कि जो एक दफे सोच लिया बस उससे टस से मस न हुआ जाय । आज आप चीन को एग्रसर कह रहे हैं उस पर विचार कीजिये । दूसरे आदमी भी आपके साथ आ सकते हैं । इसमें विचार करने की बात यह है कि यह मौरेल प्रैशर का आप पर प्रभाव है । सारा देश जाग चुका है । मैं नेशनल इंटैग्रेशन कौंसिल और दूसरी नेशनल इंटैग्रशन कम कम्युनल सब कमेटी है उसका मेम्बर हूं । मैंने उसमें जाकर रेज़ोल्यूशन रक्खा कि अब इस कमेटी की ज़रूरत नहीं है कि सारा देश एक लहर के साथ में बंध कर खड़ा हो गया है ।

आज जिस प्रकार हमारा देश चाइना के सामने इतनी हिम्मत और शक्ति के साथ पंडित जवाहरलाल नेहरू के पीछे खड़ा हुआ है, दुनिया में ऐसी कोई मिसाल नहीं मिलेगी । लेकिन इसके साथ ही मैं बड़े अदब और प्यार के साथ कम्युनिस्ट मेम्बरों को कहना चाहता हूं कि पंडित नेहरू के पक्ष में उनके जाने से ऐसा प्रतीत होता है कि देश के ज़बर्दस्त मारेल प्रैशर से उनकी स्थिति इतनी खराब हो गई और उनकी आत्मा इतनी कमजोर पड़ गई कि फेस सेविंग के लिये वे बाध्य हो कर पंडित नेहरू के पास पधारे हैं ।

अध्यक्ष महोदय, आपने शुरू में कहा था कि आप इस डिसकशन में लीडर्ज़ को तीस मिनट देंगे । मैं भी एक छोटा-मोटा लीडर हूं और मैं सिर्फ जरूरी बातें ही कह रहा हूं ।

अध्यक्ष महोदय : मेरी मुश्किल यह है कि माननीय सदस्य सिर्फ़ लीडर ही हैं, उनकी फ़ालोइंग कोई नहीं है ।

श्री बिशन चन्द्रसेठ : अब मैं एक महत्वपूर्ण बात आपके सामने रखना चाहता हूं और मैं समझता हूं कि जो माननीय सदस्य इस सदन में विराजमान हैं, वे गम्भीरतापूर्वक इस पर विचार करेंगे। १९६० में संसार भर के कम्युनिस्टों की एक कांफ्रेंस मास्को में हुई थी, जिसके प्रैज़िडेन्ट श्री अजय घोष थे। उस कांफ्रेंस में यह तय हुआ कि चाइना के द्वारा लड़ाई करके भारतवर्ष को कब्ज़े में लिया जाये।

श्री दाजी (इन्दौर) : बिल्कुल नहीं।

श्री बिशनचन्द्र सेठ : मैं जिम्मेदारी से बोल रहा हूं।

एक माननीय सदस्य : क्या माननीय सदस्य वहां गये थे ?

श्री बिशनचन्द्र सेठ : मैं वहां नहीं गया था, लेकिन मैं प्रधान मंत्री के पास कुछ कीजें ले जा रहा हूं, जिनका महत्व मेरे अपने जाने से ज्यादा है।

इस संदर्भ में मैं यह बात निवेदन करना चाहता हूं कि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने संसार के कम्युनिस्टों को भारत की ओर आकर्षित करने के लिए तीन बातें सोचीं। एक, तिब्बत पर चाइना का निर्विरोध कब्ज़ा, दूसरे भारत की नान-एलाइनमेंट कमजोर पालिसी और तीसरे, भारत के भीतर भाषा, प्रान्तीयता और जातिवाद आदि पर आधारित झगड़े जिन के कारण, कम्यूनिस्टों के अनुसार, भारत संगठित हो कर हमले के विरुद्ध खड़ा नहीं हो सकेगा।

लेकिन कम्युनिस्टों की ये सारी बातें और भावनायें आज कल्पना में उड़ गईं और वे मजबूर हो कर इस परिस्थिति में खड़े हैं कि उन को इस आशय की घोषणा करनी पड़ी है कि हम पंडित जवाहरलाल नेहरू के साथ चाइना को एग्रैसर मानते हैं। यह कम्युनिस्टों की मानसिक स्थिति का चित्र है, जोकि मैं ने इस सदन के सामने रखा है।

स्वतंत्र और प्रजा सोशलिस्ट नेताओं ने एक बात कही है, जोकि मुझे बहुत खली। उन्होंने कहा है कि हमें पाकिस्तान के साथ नेगोसियेशन्ज़ कर के उसे अपनी तरफ़ लाना चाहिए। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि कांग्रस का जन्म हुए काफ़ी लम्बा समय बीत चुका है। वह अब ७७ बरस की बूढ़ी है।

†**एक माननीय सदस्य** : ७७ बरस का जवान।

श्री बिशनचन्द्र सेठ : ७७ बरस का लड़का कह लीजिये।

इस ७७ बरस के जीवन में कांग्रेस ने कितनी जगह मुंह की खाई, लेकिन आज फिर हमारे ये दोस्त, जोकि कांग्रेस से निकल कर दूसरी जगह बैठे हुए हैं, यह सजस्टियन दे रहे हैं कि पाकिस्तान से नेगोसियेशन्ज़ किये जायें। मैं इस का टोटल विरोध करता हूं। पाकिस्तान के साथ किसी किस्म के नेगोसियेशन्ज़ की ज़रूरत नहीं। अगर हम ने चाइना को फ़तेह कर लिया, तो, मैं हाउस को विश्वास दिलाना चाहता हूं, आज पाकिस्तान जिस कल्पना और भावना में उड़ रहा है, वह अपने आप ख़त्म हो जायेगी। हमें केवल सीधे तरीके से चाइना से निपटना है और उस के साथ ही इस बात की पूरी प्रोटेक्शन और तैयारी करनी है कि कहीं पाकिस्तान की तरफ़ से नया फ्रंट न बना दिया जाये।

अन्त में मैं कुछ सजेस्टियन्ज़ देना चाहता हूं मुझे आशा है कि इस हाउस के माननीय सदस्य उन पर गम्भीरता से विचार करेंगे।

---

†मूल अंग्रेजी में

[श्री बिशन चन्द्र सेठ]

राष्ट्रपति इस देश के सुप्रीम कमांडर हैं और सारी सेनाओं की शक्ति उन में निहित है। मेरा सुझाव है कि हमारी तीनों सेनाओं के तीन जनरल, राष्ट्रपति जी और केवल रिटायर्ड जनरलों की एक कमेटी बना दी जाये——उस में ज्यादा भीड़-भाड़ न हो——जो कि लड़ाई संचालन के सम्बन्ध में निर्णय करे कि किस स्थान पर क्या कदम उठाना है, कहां से विदड्रा करना है, कहां आगे बढ़ना है, आदि।

बहुत से लोगों ने कहा है कि हमारी फ़ौजों को पीछे हटना पड़ा है। मैं उन को बताना चाहता हूं कि पिछले महायुद्ध में जब ब्रिटिश सेनायें पीछे हटती थीं, तो ब्रिटिश कहा करते थे कि हम अमुक स्थान पर बड़ी योग्यता से पीछे हट गये। फ़ौजों के इस प्रकार हटने से घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है। मैं हटने के माने समझता हूं कि हमें आगे बढ़ने की तैयारी करनी है।

अगर राष्ट्रपति जी की अध्यक्षता में छः सात जनरलों का एक सैनिक मंत्रिमंडल बना दिया जाये और उसी के द्वारा युद्ध सम्बन्धी सब महत्वपूर्ण निर्णयों की घोषणा हो, तो सारे देश में बहुत विश्वास की भावना पैदा होगी और लोग सोचेंगे कि यह सैनिकों के द्वारा किया गया निर्णय है। आज स्थिति यह है कि माननीय मंत्री अपने विषय के एक्सपर्ट नहीं हैं। अगर यह सैनिक मंत्रिमंडल बना दिया जाय, तो देश की समस्त जनता सरकार के साथ होगी।

मैं फिर निवेदन करना चाहता हूं कि जहां से भी शस्त्र, हवाई जहाज़ और लड़ाई की अन्य सामग्री मिले, उस को फ़ौरन ले लेना चाहिए और माननीय प्रधान मंत्री के हृदय में इस बारे में जो हिचक और डर है, उस को निकाल देना चाहिए, क्योंकि यह एक संकट कालीन स्थिति है।

वर्तमान स्थिति को दृष्टि में रखते हुए हमें अपनी पंच-वर्षीय योजना में ऐसा परिवर्तन कर देना चाहिए, जिस से हमारी सैनिक आवश्यकता में कोई कमी अथवा अन्तर न पड़े।

अठारह बरस से लेकर चालीस बरस तक के जवानों को अनिवार्य सैनिक शिक्षा देनी चाहिये। इसके अतिरिक्त गवर्नमेंट सवेन्ट्स को भी अनिवार्य सैनिक शिक्षा देनी चाहिए। इस युद्ध में भाग लेने के लिए सारे देश को तैयार करना चाहिए। मैं एक छोटी सी मिसाल आप के सामने रखना चाहता हूं। पिछले महायुद्ध में जर्मनी के पास पैंतीस लाख सैनिकों की एक रेगुलर आर्मी थी और उसके अतिरिक्त पैंसठ लाख नागरिकों की एक सहायक सेना भी थी। अगर पांच, साढ़े पांच करोड़ की जन-संख्या का देश, जर्मनी, एक करोड़ की सेना रख सकता है, तो ४२ करोड़ के इस देश को दो करोड़ की सेना तो ज़रूर रखनी ही चाहिए। क्योंकि सेना पर इतना ख़र्च हमारा देश बर्दाश्त नहीं कर सकता, अतः रेगुलर सेना तो तीस चालीस लाख रखी जाये और उसके साथ सारे देश को मिलिटराइज़ किया जाये, ताकि आवश्यकता पड़ने पर देश के सब नागरिक हमले का मुकाबला कर सकें और लड़ सकें।

हम देखते हैं कि आज़ाद काश्मीर की एक सरकार बनी हुई है। उस का कुछ भी मूल्य, माकट वैल्यू, नहीं है, यह जानते हुए भी मैं यह सुझाव देना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान में दलाई लामा की सरकार कायम की जाये और उस को मान्यता दी जाय। इस के साथ ही दलाई लामा का केस य० एन० ओ० में भेजा जाये, ताकि चाइना के सामने एक हिंडरेंस पैदा की जा सके।

भारत सेवक समाज, महिला मंडल और सोशल वैलफ़यर बोर्ड आदि अनेक इंस्टीट्यशन्ज़ गवर्नमेंट आफ़ इंडिया चला रही है।

एक माननीय सदस्य : फ़ेमिली प्लानिंग बोर्ड।

श्री बिशनचन्द्र सेठ : उन पर ख़र्च किये जाने वाले सारे के सारे ख़र्च को बचाने की ज़रूरत है। आज की स्थिति में इन विभागों की कोई आवश्यकता नहीं है। लड़ाई से निपट कर साल, दो साल में हम फिर सारे काम शुरू कर सकते हैं।

८ सितम्बर की स्थिति के आधार पर बात-चीत करने का प्रश्न उठा कर प्रधान मंत्री जी ने एक नई बात देश के सामने रख दी है। मैं समझता हूं कि हमारे सामने ऐसा कोई भी सवाल नहीं होना चाहिए। हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए कि जब तिब्बत से चाइना हट जायगा, उस के बाद हम चन लेंगे।

इन शब्दों के साथ मैं माननीय अध्यक्ष महोदय को धन्यवाद देते हुए अपना आसन ग्रहण करता हूं।

अध्यक्ष महोदय : पार्टीज़ तो तमाम हो चुकी हैं। यह आखिरी पार्टी थी।

श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती (झज्जर) : एक रह गई . . . .

अध्यक्ष महोदय : अगर एक एक आदमी की एक एक पार्टी है तब तो बहुत मुश्किल हो जाता है।

अब मुझे इतना ही कहना है कि मैं दस मिनट से ज्यादा किसी को नहीं दूंगा और इस रूल को स्ट्रिक्टली एनफोर्स करूंगा। सात मिनट के बाद घंटी बजा दूंगा और दस मिनट के बाद स्पीच को बन्द कर दूंगा।

†**श्री दि० ना० सिंह** (मुजफ्फरपुर) : एक समय आता है जब प्रत्यक राष्ट्र के जीवन की अप्रत्याशित खतरे द्वारा परीक्षा ली जाती है। वैसा ही समय आज हमारे सामने है। यदि हम आक्रांताओं को निकालने के लिए देश के उत्साह को उपयोग न कर सके तो इतिहास हमारे सम्बन्ध में कटु निर्णय देगा।

चीनी अपने आक्रमण को संगत बताने के लिये जैसा झूठा प्रचार कर रहे हैं वैसा झूठ इतिहास में अभूतपूर्व है। भले ही हमें पहले पहल हारों का मुंह देखना पड़ा है किन्तु अन्त में विजय हमारी ही होगी।

चीनियों ने यह आक्रमण केवल कुछ वर्ग मील भूमि लेने के लिए नहीं किया बल्कि उस में कुछ गहरी बात है। इस में कोई आश्चर्य नहीं कि व हमारी चावल की पैदावार पर आंख गड़ाये हों और इस प्रकार समस्त एशिया पर अधिकार जमाना चाहते हों।

यदि यह लड़ाई वर्षों तक चले तब भी हमें भयभीत नहीं होना चाहिये। हम अपने राष्ट्रवाद और देशभक्ति का ह्रास नहीं होने देंग।

मुझे विश्वास है कि श्री नेहरू के नेतृत्व में हम अवश्य विजय पायेंगे और न केवल लड़ाई जीतेंग बल्कि शान्ति भी।

संसद् का अधिवेशन निरन्तर जारी नहीं रखा जा सकता। इसलिए मैं सरकार को और आप को यह सुझाव देता हूं कि आपातकाल की अवधि में संसद् के वरिष्ठ सदस्यों की एक समिति बनाई जाये, जिसका सरकार के साथ सम्पर्क रहे और जो विभिन्न आपातकालीन विधानों के बारे में सरकार को सलाह देती रहे। ताकि युद्ध की कोशिशों में बाधा न पड़े और लोगों की आज़ादी पर भी रोक न लगे।

---

†मूल अंग्रेजी में

[श्री दि० ना० सिंह]

इन शब्दों के साथ मैं इस संकल्प का समर्थन करता हूं।

†श्री दे० द० पुरी (कैथल) : अधिकांश सदस्यों के सामने पहला प्रश्न यह है कि चीन ने भारत पर जो खुला आक्रमण किया है, वह किस प्रकार का है और उसका उद्देश्य क्या है ? क्या यह अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवाद का एक चमत्कार है, जो कि भारत को एशिया में इसका पहला शिकार बनाया जा रहा है या यह चीन की फैलने की नीति का परिणाम है, जो कि एक साम्यवादी देश है ?

यदि स्थिति को ध्यान से देखा जाये, तो स्पष्ट होगा कि बड़े प्रजातांत्रिक देश स्वच्छा से हमारी सहायता को आये हैं। तटस्थ देश भी धीरे धीरे हमारे पक्ष में होने लगे हैं।

बड़ा प्रश्न यह है कि साम्यवादी गुट के देशों का रवैया क्या है ? इस समय तक यह रवैया स्पष्ट नहीं हुआ। युद्ध के समय में यह अत्यन्त आत्मघातक होगा कि उनके रवैये को भली प्रकार जाने बिना ही हम यह कहने लगें कि वे हमारे शत्रु हैं। हमें रूस को नाराज नहीं करना चाहिये बल्कि उसे प्रसन्न रखना चाहिये। हमें ऐसी कोई बात न कहनी या करनी चाहिये जो उसे अथवा साम्यवादी गुट को चीन की ओर ले जाये। हमें ऐसी कोई कर्यवाही नहीं करनी चाहिये जिस से हमें रूस या अन्य साम्यवादी देशों से मिलने वाली सहायता बन्द हो जाये।

तटस्थता की नीति की आलोचना की गई है और इस के बारे में काफी गलतफहमी है। यह बात चिन्ता की है कि हम स्वयं उस नीति को समझने में ऊपर की सतह से काम ले रहे हैं। हमारा इस समय भी यह विश्वास है कि सैनिक गुटों में शामिल होने से हम युद्ध के निकट हो जाते हैं तथा अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों को पिटाने के लिये युद्ध कोई स्वीकार्य ढंग नहीं है।

एक माननीय सदस्य ने सुझाव दिया है कि चीनी आक्रमण के प्रश्न को राष्ट्र संघ में ले जाया जाये। मैं ऐसा करना बुद्धिमत्ता नहीं समझता। हमें काश्मीर के मामले में कटु अनुभव पहले ही प्राप्त हो चुका है। हमें यह भी नहीं समझना चाहिये कि चीन को राष्ट्रसंघ का सदस्य बनाने से चीन का रवैया बदल जायेगा और वह राष्ट्र संघ या पंचशील के सिद्धांतों की कद्र करने लगेगा।

अमेरिका और ब्रिटेन से जो अपने आप इतनी सहायता मिली है, भारत उसके लिये उनका कृतज्ञ है। हम व्यर्थ में उसे व्यापारिक सौदे का रूप देने का प्रयत्न कर रहे हैं। ८ सितम्बर की लाइन को युद्ध विराम लाइन मान लेना भी गलती होग. क्यों कि ऐसी लाइनें स्थायी हो जाती हैं जैसा कि पाकिस्तान के साथ हमें अनुभव हो चुका है। ऐसी हालत में यह आशा करना कि ऐसी अवस्था में चीनियों को बाहर निकाल दिया जायेगा केवल कल्पना मात्र होगा।

†श्री तिरुमल राव (काकिनाडा) : स्थिति इतनी गम्भीर है कि इस समय सारे देश को प्रधानमंत्री का समर्थन करना चाहिये। वे ४० करोड़ लोगों के देश का निर्माण करने का प्रयत्न कर रहें है वह भी प्रजातन्त्रात्मक ढंग से। वे चीनी नेताओं की शक्ति के लिये एक चुनौती है। भारत एशिया की एक बड़ी शक्ति है। चीनी चाहते हैं कि इस पर आक्रमण कर के इस की पंच वर्षीय योजनाएं बन्द कर दी जाये और भारतीय विकास पर रुपया न खर्च कर के युद्ध, सेना और शस्त्रों पर खर्च करें।

चीन के नेता अपने दर्शन और राजनैतिक सामयिकता को इस प्रकार का बना रहे हैं जिससे वे एशिया पर छा सकें। उनकी आंख सियाम, वियतनाम, बर्मा, और बंगाल के चावल उपजाऊ क्षेत्र

†मूल अंग्रेजी में

पर है। भारत उसके इस इरादे की पूर्ति में रुकावट है। चीन के इरादों के सम्बन्ध में कोई गलत-फहमी नहीं होनी चाहिये। इस समय ब्रिटेन और अमेरिका हमारी सहायता कर रहे हैं। भारत समाजवादी देश अवश्य बनेगा। यदि प्रतिक्रियावादी शक्तियां देश के शासन पर अधिकार जमाना चाहती हैं, तो एक और क्रांति का होना अनिवार्य है।

†**श्रीमती शारदा मुकर्जी** (रत्नगिरि) : इस समय हमें अपने देश के मान और अखंडता की रक्षा करनी पड़ रही है। यद्यपि हम एक शांतिप्रिय राष्ट्र हैं, फिर भी यदि हमें पूरा युद्ध भी लड़ना पड़ा, तो हम लड़ेंगे।

भारतीय सैनिक विश्व के बहादुर सैनिकों से पीछे नहीं हैं। इसमें संदेह नहीं कि इस संकट की घड़ी में इस के कदम नहीं डगमगायेंगे और वह हार नहीं मानेगा।

चीनी सेना युद्ध की सेना है, जब कि हमारी सेना शांति के समय के लिये बनाई गई थी। हम ने कभी सोचा भी नहीं था कि इस प्रकार के चीनी आक्रमण का सामना करना पड़ेगा।

हमारे सशस्त्र बल की बड़ी आवश्यकतायें क्या हैं? पहली आवश्यकता यह है कि उन्हें अच्छे हथियार दिये जायें। उस के साथ साथ सैनिकों को अच्छे कमांडर भी मिलने चाहिये, जिनपर जवान पूरा भरोसा कर सकें। सामान और हथियार तो पश्चिमी देशों से आ रहे हैं। यह देखना सरकार का कर्तव्य है कि कमांडर ऐसे हों, जो सनिकों का पथ-प्रदर्शन करते हुये विजय प्राप्त कर सकें।

मैं प्रधान मंत्री को बधाई देती हूं कि सेवा निवृत्त जनरलों को प्रतिरक्षा परिषद में ले लिया गया है। वे अनुभवी जनरल हैं और भारतीय सेना में उन को आदर से देखा जाता है।

लड़ाई के दिनों में, विशेषकर नेफा और लद्दाख के क्षेत्रों में हमारे जवानों को बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। इसलिये यह देखना हमारा कर्तव्य है कि उनके पास पूरा सामान हो और उनके कमांडर अच्छे हों। उनको यह भी भरोसा दिलाया जाना चाहिये कि लड़ाई के बाद भी सरकार उनकी तथा उनके परिवारों के हितों का ध्यान रखेगी।

जब तक एक भी चीनी सैनिक हमारे राज्यक्षेत्र में रहता है, तब तक चीनियों के साथ कोई बातचीत नहीं की जानी चाहिये।

श्री बड़े (खारगोन) : माननीय अध्यक्ष महोदय, इस वक्त में बड़ी गम्भीर और भीषण परिस्थिति में हाउस के सामने खड़ा हूं। २० अक्तूबर को जब रेडियो से यह कहा गया कि चाइना ने हम पर हमला किया है तो साधारण जनता को बड़ा धक्का लगा और शंका भी उत्पन्न हुई कि चीन ने हम पर हमला क्यों किया। रेडियो से यह भी कहा गया कि लाजिस्टिक्स की दृष्टि से उन की स्थिति हम से अच्छी है, उन की जियोग्राफिकल पोजीशन, भौगोलिक परिस्थिति हम से ज्यादा फेवरेबल है, उन के पास सेना और शस्त्र ज्यादा और अच्छे हैं।

आज सारी जनता यह पूछती है कि अगर हमारे पास सेना कम है और चाइना के पास ज्यादा है, तो इस का जवाबदार कौन है। अगर उसके पास हम से ज्यादा और अच्छ शस्त्र हैं तो उसका जवाबदार कौन है? अगर उस की भौगोलिक परिस्थिति हम से फेवरेबल है तो उस परिस्थिति को फेवरेबल करने के लिये जवाबदार कौन है? इन प्रश्नों का जवाब यह है कि जिस ने पन्द्रह बरस तक इस देश में शासन किया वही जवाबदार है। लेकिन उस जवाबदारी की बात न करते हुये आज सारी जनता

---

†मूल अंग्रजी में

[श्री बड़े]

और मेरी पार्टी एक होकर पंडित जवाहरलाल नेहरू के पीछे हैं और उनके हांथ पांव दोनों मजबूत करने के लिये तैयार हैं, जिन्होंने पिछले पन्द्रह बरस तक शासन किया है और देश को आगे बढ़ाया है। आज काश्मीर से लेकर कन्या कुमारी तक सारी जनता प्रधान मंत्री का समर्थन कर रही है और उन को अपना लीडर मान रही है। उन को अपना लीडर मानने में पार्टी का कोई प्रश्न नहीं है, बल्कि उसका कारण यह है कि आज देश को खतरा है और देश हमारे लिये सब से बड़ा है और पंडित जवाहर-लाल नेहरू आज देश के महान् नेता हैं, इस लिये हम उनका समर्थन करते हैं और उन के पीछे हैं। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि यह मौका नुक्ताचीनी करने का नहीं है कि वर्तमान परिस्थिति के लिये कौन जवाबदार है। आज हम सबको इस सवाल पर विचार करना चाहिये कि आज हम को क्या करना चाहिये।

मैं अपनी कांस्टीट्युएन्सी में गया। मैंने वहां देखा कि जनता ने सभायें और जलूस निकाल कर यह प्रकट किया कि वह प्रधान मंत्री के पीछे है। आज मध्य प्रदेश का पूरा क्षेत्र प्रधान मंत्री का समर्थन कर रहा है।

कम्युनिस्ट भाइयों ने कहा है कि हम हमेशा चाहते हैं कि पंडित जवाहर लाल नेहरू के स्थान पर कोई दूसरा लीडर रहे। हम ने तो कभी ऐसी घोषणा नहीं की है। हम कहते हैं कि हम पंडित जवाहर-लाल नेहरू के पीछे हैं और देश की रक्षा के लिये वह जो कुछ भी कहेंगे, वह हम करने के लिय तैयार हैं। यहां पर तीन कम्यूनिस्ट माननीय सदस्यों ने भाषण दिये। उन्होंने प्रधान मंत्री के बहुत गुण गाये। चीन के आक्रमण के बारे में उन्होंने दिल्ली में एक प्रस्ताव पास किया, जिस पर बारह दिन डिस्कशन हुआ। ६० या ६३ आदमी उस प्रस्ताव के पक्ष में थे, ३० विरोध में थे, १७ एबसेंट थे और ९ आदमियों ने एब्स्टेन किया, अपना मत नहीं दिया। फिर भी वे इस हाउस में कहते हैं कि महाराष्ट्र में हमारे लोगों को क्यों पकड़ा गया है। यह कितने खेद की और आश्चर्य को बात है कि जिन लोगों ने "भारत माता की जय" कहने से इन्कार किया, जो पंडित जवाहर लाल नेहरू का समर्थन करने के लिये तैयार नहीं हैं, जिन के बारे में शासन को शंका है, हमारे माननीय सदस्य उन की वकालत करते हैं और कहते हैं कि उन को क्यों पकड़ा गया। अगर जनसंघियों को इस आरोप में पकड़ा जाये कि उन से देश को खतरा है, तो मैं कहूंगा कि चूंकि हम से देश को खतरा महसूस किया जाता है, इस लिये हम जेल में बैठे रहने के लिय तैयार हैं क्योंकि वह भी देश की सेवा है। कम्युनिस्टों को भी ऐसा ही करना चाहिये, लेकिन वे उन लोगों की वकालत करते हैं, जिन के बारे में शासन को आशंका है।

पिछले दिनों जब इन्दौर और भूपाल में चीनी आक्रमण के विरोध में जलूस निकाले गये, तो कम्यूनिस्टों ने इस बात को ले कर वहां पर मारपीट की कि हम को उन में शामिल क्यों नहीं किया गया। मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि कांग्रेस के लोगों ने अपना अलग प्रोसेशन निकाला और हम को अपने साथ नहीं लिया, लेकिन हम ने तो इस आधार पर धींगा-मुश्ती नहीं की। मैं उन को कहना चाहता हूं कि कम्यूनिस्ट सदस्यों ने अपने भाषणों में इस सदन में जो विचार प्रकट किये हैं, अगर वे उन्हीं के अनुसार काम भी करेंगे, तो कोई आपत्ति की बात नहीं है, क्यों कि भारतवर्ष अपनी टालरशेन के लिये मशहूर है—यहां पर आस्तिक भी हैं और नास्तिक भी, यहां पर बोध, मुसलमान, ईसाई सब रहते हैं, सब तरह के विचारों को मानते वाले लोग रहते हैं। उन की तरह वे भी रहें और अपना प्रचार करें, लेकिन अगर वे कहेंगे कि हम तो रूस और चीन को मानेंगे और हम भारत माता की जय" कहने के लिये तैयार नहीं हैं, तो फिर देश उन को सहन करने के लिये कभी तैयार नहीं होगा।

उन के एक लीडर, श्री मोहन कुमारमंगलम् ने एक वक्तव्य दिया है, जो कि मैं आप के सामने रखना चाहता

"मोहन कुमारमंगलम ने जो तामिल के प्रमुख साम्यवादी हैं सरकार को चेतावनी दी है कि यदि साम्यवादियों को सुरक्षा समितियों में शामिल न किया गया, तो युद्ध की तैयारी में बाधा पड़ेगी ।"

मैं निवेदन करना चाहता हूं कि हम ने तो कभी नहीं कहा कि हमको नेशनल डिफ़ेंस कौंसिल में ज़रूर लिया जाये । हम ने कहा कि हम को उस से बाहर रखा जाये या अलग रखा जाये, लेकिन हम देश की रक्षा करेंगे और पंडित नेहरू के पीछे रहेंगे, जो कि देश के नेता हैं ।

आगे उन्होंने कहा :

"साम्यवादियों को प्रतिरक्षा समितियों से बाहर रखना राष्ट्र के लिए खतरनाक होगा" उन का कहना यह है कि उन को डिफ़ेंस कमेटीज़ में लेना चाहिए और अगर नहीं लिया जायेगा, तो नेशन को पेरिल हो जायगा । वे इस तरह की दहशत देने वाले कौन हैं । इस तरह की दहशत यह देश और हम कभी भी सहन नहीं करेंगे । इसीलिए हम कम्यूनिस्टों के ख़िलाफ़ बोलते हैं । मैं कम्यूनिस्टों के साथ काम करने के लिए तैयार हूं । परसों माननीय सदस्य, श्री बनर्जी, ने मेरे सिग्नेट्यर ले लिए । वह उन की पार्टी में बैठते हैं और उन के बारे में कहा जाता है कि वह फ़ेलो-ट्रेवलर हैं । फ़ेलो-ट्रेवलर से बचना चाहिए । जो खुल्लम-खुल्ला शत्रु है,वह अच्छा है, लेकिन फ़ेलो-ट्रेवलर्ज़ बहुत ख़तरनाक होते हैं । लेकिन फिर भी मैंने उन को सिग्नेट्यर दे दिया कि मैं आप के साथ मरने के लिए तैयार हूं ।

इस के बाद मैं यह कहना चाहता हूं कि हमारे आदिवासी क्षेत्र में २६ लाख आदिवासी हैं । सैकंड वर्ल्ड वार में ब्रिटिश गवर्नमेंट ने एक भील रेजिमेंट तैयार की थी और महू और इन्दौर को सवन्थ सेफ़्स्ट ज़ोन बनाया गया था । वे लोग ब्लड, सोना, यहां तक कि अपना सर्वस्व देने के लिए तैयार हैं, लेकिन हमारे सामने कोई योजना नहीं रखी गई है । इसलिए मैं निवेदन करना चाहता हूं कि चीनी आक्रमण का सामना करने के लिए आदिवासियों का सहयोग लेना चाहिए । वे लोग तीर चलाने में बहुत दक्ष हैं । हमारे देश में कोई डिफ़ेंस लाइन नहीं है, इस लिए यह आवश्यक है कि जितने नौजवान हैं, उन सब को राइफ़ल चलाने की ट्रेनिंग दी जाये । मध्य प्रदेश में सब लोग तैयार हैं । मैं कहना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान में एक भी प्राणी ऐसा नहीं है, जो कि पंडित नेहरू के पीछे नहीं है । जहां तक कम्यूनिस्टों का सम्बन्ध है, जब उन पर बहुत प्रेशर पड़ा, तो उन को अपना यह रेज़ोल्यूशन पास करना पड़ा । उन की स्थिति ऐसी हो गई थी कि वह कोई दूसरा रेज़ोल्यूशन पास ही नहीं कर सकते थे । अगर वह कोई और प्रस्ताव पास करते, तो इस देश में शंकर जी का तीसरा नेत्र खुल जाता । इसी लिए उन्होंने दिल्ली में ऐसा प्रस्ताव पास कर दिया ।

हमारे रेडियो से सब पार्टियों के नेताओं के भाषण प्रसारित करने की व्यवस्था करनी चाहिए, ताकि लोगों को इन्स्पीरेशन मिले । पंडित नेहरू पर हमारा कान्फ़ीडेंस ज़रूर है, लेकिन दूसरे नेताओं पर भी हमारा कान्फ़ीडेंस है । लोगों को इन्स्पीरेशन देने के लिए उन के भाषण भी प्रसारित किये जाने चाहिए, लेकिन अभी तक ऐसा नहीं किया गया है । पीकिंग और पाकिस्तान रेडियो से इस प्रकार के प्रसारण होते हैं । इस लिए हमारे रेडियो से भी इस प्रकार के गाने, भाषण वक्तव्य और दूसरे कार्यक्रम प्रसारित किये जाने चाहिए, जिन से लोगों का उत्साह और जोश बढ़े ।

नेशनल डिफ़ेंस कौंसिल में ३३ मेम्बर रख दिए गए हैं । इस प्रकार तो वह एक प्रकार की डीबेटिंग सोसायटी हो जायगी । इस लिए यह आवश्यक है कि रिटायर्ड जनरलों की एक डिफ़ेंस

[श्री बड़े]

कौंसिल बनाई जाए । हम ने सुना है कि श्री चव्हाण यहां पर डिफ़ेंस मिनिस्टर बन कर आ रहे हैं । यह बड़ी अच्छी बात है । हम देखेंगे कि वह क्या काम करते हैं । वह मराठा हैं और आज सारा महाराष्ट्र देश के लिए मरने के लिए तैयार है । शिवाजी महाराज के फ़ालोअर, श्री चव्हाण, यहां पर आ रहे हैं । वह बहुत अच्छे आदमी हैं । मैं आशा करता हूं कि वह अच्छा काम करेंगे ।

मैं प्रधान मंत्री से निवेदन करूंगा कि अपनी हवाई शक्ति को बढ़ाने का तेज़ी से प्रयत्न करना चाहिए ।

हम तटस्थता की नीति के फ़ेवर में हैं । अगर हम इस नीति को छोड़ दें, तो फिर थर्ड वार हिन्दुस्तान में होगी और यह रण-क्षेत्र हो जायगा । हर देश की नीति यह रहती है कि युद्ध-क्षेत्र दूसरे देशों में ही हो, तो अच्छा है । अगर हिन्दुस्तान ने तटस्थता की नीति छोड़ दी, तो हिन्दुस्तान अमरीका और रूस का युद्ध-क्षेत्र बन जायगा । हां, तटस्थता की नीति को इस तरह मोल्ड करना चाहिए कि जहां से भी हम को शस्त्र मिलें, हम को लेने चाहिए और अपनी तटस्थता को कायम रखना चाहिए ।

श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती : थोड़े से समय में मैं कुछ सुझाव आपके सामने रखना चाहता हूं । मैं समझता हूं कि आज भारत की राजनीति की अवस्था ऐसी है कि प्रधानमंत्री श्री नेहरू को आगे करके ही चला जा सकता है और हमें चलना चाहिये । लेकिन उनके चारों तरफ जो खुशामदी लगे रहते हैं, उनकी बातों से उनको बचना चाहिये । मैं समझता हूं कि राजनीति में विश्वास करना परले दर्जे की भूल है । विश्वास करने के बारे में जो कुछ राजनीति में कहा गया है वह मैं आपको बतलाना चाहता हूं । सारा बाजू अगर तेल में डाला जाए और उसके बाद उसको तिलों में डाला जाए तो कितने तिल लग जाते हैं उस बाजू में, इतनी बार भी शत्रु का विश्वास नहीं करना चाहिये । हमने शत्रु का विश्वास किया और नतीजा हमारे सामने है ।

दूसरी चीज़ मैं यह कहना चाहता हूं कि यह बड़ी अच्छी चीज़ है कि हमारी बहन इंदिरा जी ने अपने आभूषण दिए हैं । इसका अनुकरण जितने भारत भर में मंत्री हैं, चाहे भूतपूर्व मंत्री हैं या वर्तमान मंत्री हैं, या एक्स-चीफ मिनिस्टर्ज़ हैं, उनको भी करना चाहिये । जिस क्षेत्र से मैं आता हूं वहां इस चीज़ की मांग की जा रही है । मेरा क्षेत्र सारा मिलिट्री का क्षेत्र है । उसको हरियाना प्रान्त कहा जाता है । वहां के लोग यह कहते हैं कि इंदिरा जी अपने लख्ते जिग्र राजीव को सिपाही बना कर सेना में भेजें, नेफा में भेजें । उसको सिपाही बना कर ही भेजें, अफसर बना कर नहीं। सिपाहियों में ही वह रहे, उन्हीं के साथ खायें, उन्हीं के समान जियें और वैसा ही काम काज करें जैसा वे सिपाही करते हैं। अगर ऐसा होता है तो आप देखेंगे कि कितने सैनिक . . .

श्री दी० चं० शर्मा (गुरदासपुर) : उसकी उम्र बहुत छोटी है ।

†**श्री कमलनयन बजाज** : उसे बहुत गर्व होना चाहिये, किन्तु वे बहुत छोटे हैं ।

श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती : प्रतिरक्षा का जहां तक सम्बन्ध है, जो काउंसिल बनाई जाती है, इसके अन्दर सैनिक होने चाहियें, जनरल होने चाहियें । मैंने मई महीने में कहा था कि मिलिट्री का बाजा ढम ढम बजना चाहिये । आज वह बजता है । पहले ही सोच समझ कर अगर आप कर

†मूल अंग्रेजी में

लेते तो आज इतनी खराबी पैदा न होती । आज हमें रक्षा समिति की आवश्यकता है । हम ने दुधमुही बच्चे इकट्ठे कर रखे हैं । इनसे क्या होगा । आप वहां फौजी जनरल रखें, फौजी रखें, छः छः फुटे नौजवान रखिये । शाहनवाज़ खां जैसे लोग रखिये ।

हमारे इलाके के सब से ज्यादा सिपाही आपके पास हैं । वे नेफा में लड़ रहे हैं । उन्होंने वहां बहुत कुर्बानियां दी हैं । सब से ज्यादा मेरे इलाके के बहादुर सिपाहियों ने कुर्बानियां दी हैं । एक भाई ने कल जनरल कौल के लिए कहा । मेरे सारे इलाके की यह मांग है कि जनरल कौल का पहले कोर्ट मार्शल किया जाए । उसने सिपाहियों को धोखा दिया है, उनके पास हथियार नहीं थे । उसने उनको माइंज़ के ऊपर से आगे गुज़रने के लिए कहा । उसने यह भी कहा कि अफसर पीछे रहें, जवान आगे जायें । जवान गए और उनको भून दिया गया । वही जनरल कौल अपने नाक की छींक मिटाने के लिए अगले दिन दिल्ली वापिस आया ।

†**श्री बाकर अली मिर्ज़ा** : औचित्य प्रश्न के हेतु । सदन में निर्णय किया गया था कि सैनिक अधिकारियों का नाम नहीं लिया जायेगा । किसी ऐसे व्यक्ति पर आक्षेप करना जो सदन में है, वांछनीय नहीं । मेरे विचार में ये वाक्य कार्यवाही से निकाल देना चाहिये ।

†**अध्यक्ष महोदय** : माननीय सदस्यों से नाम नहीं लेने चाहिये । यदि कोई चीज़ निकालने योग्य है, तो मैं विचार करुंगा ।

श्री जगदेव सिंह सिद्धांती : किसी को भी डायरेक्टली अफसर ने बनाया जाए । पांच साल तक उसको रंगरुट रखा जाए । मेरे से पहले श्री शाम नाथ सराफ ने कमिशंड अफसरों का ज़िक्र किया । मैं कहना चाहता हूं कि कम से कम पांच साल तक वे सिपाही रहें, इस अर्से में उनको एक सिपाही की तनख्वाह मिले । उसको डायरेक्टली कमिशंड अफसर की तनख्वाह नहीं मिलनी चाहिये ।

रिजर्व फोर्स के अन्दर क्या होता है, यह मैं अब आपको बतलाना चाहता हूं। दो महीने के लिए उनको बुलाया जाता है और दस महीने छोड़ दिया जाता है । इस अर्से में वे दूसरी सर्विस भी नहीं कर सकते हैं । उनके लिए भी सरकार को कोई न कोई प्रबन्ध करना चाहिये,उनको बाकी दस महीनों के लिए भी कोई काम दिया जाना चाहिये । जितना काम काज है, वह पहले इनको दिया जाना चाहिये । एम्प्लायमेंट एक्सचेंजिज़ जो आपने बना रखी है, उनको चाहिये कि दफ्तरों के लिए पहले मिलिट्री वालों को नौकरी के लिए भेजें । साथ ही साथ जितने हमारे नागरिक हैं, इनको भी हथियार दिए जायें ताकि जिस समय बड़े पैमाने पर युद्ध हो तो उसके अन्दर वे भी हिस्सा बटा सकें, पूरी तरह से काम कर सकें ।

अब मैं एक कड़वी बात आपसे कहना चाहता हूं । कांग्रेस का यह उत्तरदायित्व है कि दूसरे जितने भी दल हैं, राजनीतिक दल, उनका वह संतोष करे ताकि पूरी तरह से आपको सहयोग दे सकें । हम नेहरू जी को नेता मान कर सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए तैयार हैं । जब हम इस हद तक जाने के लिए तैयार हैं तो क्या यह कांग्रेस का फर्ज़ नहीं हो जाता है कि जितने भी दूसरे दल हैं, उनको भी वह सभी कामों में शामिल करे ।

अभी कल की बात है बेरी, जिला रोहतक में राष्ट्र रक्षा सम्मेलन हुआ था । वहां से पचास हज़ार रुपया आया है और हमारी बहनों ने आभूषण दिए हैं । साथ ही बारह सौ बीघे धरती दी है । वे लोग फौज में भरती होने के लिए तैयार हैं । उन्होंने नेहरू जी को चिट्ठियां भी लिखी हैं ।

---

†मूल अंग्रेजी में

[श्री जगदेव सिंह सिद्धांती]

ये मेरे पास हैं। अगर कायदा हो तो मैं इनको सुना सकता हूं और अगर नं हो तो नहीं सुनाता। एक में यह लिखा है :

"मैं अपने को और अपने एक लड़के को सेना में सेवा के लिए पेश करता हूं। मेरे तीन लड़के पहले ही सेना में हैं।"

इस तरह की एक और चिट्ठी है। इसमें यह लिखा है कि अपने दोनों नौजवान लड़कों को देती हूं और जब तक लड़ाई जारी रहती है, इनको तनख्वाह भी न दी जाए। एक दर्जी जो कपड़े सीता है, उसने कहा है कि जो भाई फौज में भरती होंगे उनके परिवार के कपड़े बिना मजदूरी के वह सीने के लिए तैयार है। हर बिरादरी के लोग इस तरह से बलिदान करने के लिए तैयार हैं। लेकिन आज बिरादरी का कोई सवाल नहीं है। मेरा सारा इलाका सैनिकों का है। इस नाते मुझे उनकी बात कहना जरूरी है, फिर चाहे वह किसी को अच्छी लगती हो या न लगती हो।

यहां पर पार्लियामेंट में, एंग्लो-इंडियन के लिए सीट मुकर्रर है और नाच गाने वाले जो लोग है, जिसको सांस्कृतिक नाम दिया जाता है, उनके लिए भी सीट मुकर्रर है, लेकिन सैनिकों के लिए कोई सीट मुकर्रर नहीं है। सैनिकों के लिए भी एक सीट होनी चाहिए। जिसमें दो महीने के लिये राजनीतिक तिलक लगा लिया, उसको तो सरकार पोलिटिकल सफरर करार दे देती है लेकिन जिसने अपनी जान लड़ाई में झोंक दी, लड़ाई में जिसने अपने प्राण दे दिये, वह कोई पोलिटकल सफरर नहीं है। उनको भी पोलिटिकल सफरर करार दिया जाना चाहिये और उनके बच्चों को सहूलितें मिलनी चाहियें, वैसी ही जैसे पोलिटिकल सफरर्ज के बच्चों को मिलती हैं।

बाजार भाव का भी सवाल है। बाजार भाव में जो उतार चढ़ाव करता है, उसको देश द्रोही माना जाना चाहिये। बाज़ार भाव चढ़ाने वालों के लिए सख्त सज़ा होनी चाहिये। यह जो मिलिट्री आपरेशन का काम है, यह वैसे ही नहीं चलता है, शासन वैसे ही नहीं चलता है, शासन डंडे से चलता है। नेहरू जी के हाथ में डंडा है, उसका वह प्रयोग करें। जो भी कोई राष्ट्र-रक्षा के काम में बाधक बनता है, उसके साथ आप निर्ममता का व्यवहार करें और उसको कठोर दंड दीजिये। बिना इस प्रकार की प्रवृत्तियों पर रोक लगाये, तथा बिना ऐसे लोगों को कठोर दंड दिये कभी देश की रक्षा नहीं हो सकती है।

हमारे लिये केवल युद्ध की चिन्ता ही उत्पन्न नहीं हुई है, बल्कि दूसरी कार्रवाइयां भी चिन्ता का विषय हैं। अभी एक भाई ने कहा कि पाकिस्तान का भी विश्वास नहीं करना चाहिये। मैं पहले कह चुका हूं कि धर्म के अन्दर तो विश्वासघात हो जाए तो उसको माफ भी किया जा सकता है लेकिन राजनीति में कभी माफ नहीं किया जा सकता। क्यों कोई राजनीति में किसी पर विश्वास करे और धोखा खाये। ऐसे लोग जो कहते हैं कि उन्होंने धोखा खाया है, उनका स्थान शासन में नहीं होना चाहिये, उनका स्थान सींखचों के पीछे होना चाहिये।

जो मुझे सुझाव देने थे, वे मैंने आपको दे दिये है। बाकी जो मेरे मिनट बचे हैं, वे किसी और को आप दे दीजिये।

†**श्री वीरेन्द्र बहादुर सिंह** (राजनन्दगांव) : तटस्थता की नीति वास्तव में सही नीति है। यदि हमने वह नीति न अपनाई होती, तो हमें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता।

---

†मूल अंग्रेजी म

हमें अपने विचार व्यक्त करने में सावधानी बरतनी चाहिये। हमें यह प्रयत्न करना चाहिये कि हमारे जवानों का नैतिक साहस कायम रहे। जवानों ने हमें कभी निराश नहीं किया है और न भविष्य में ही वैसा करेंगे।

आशा है कि प्रधान मंत्री ८ सितम्बर की लाइन के सम्बन्ध में हमारी स्थिति का स्पष्टीकरण करेंगे ताकि जनता के दिमाग में कोई गलतफहमी न रहे।

राष्ट्रीय प्रतिरक्षा परिषद् में कुछ और विख्यात व्यक्ति होने चाहियें। सेनाध्यक्ष और प्रतिरक्षा मंत्रालय के सलाह देने के लिए राष्ट्रीय प्रतिरक्षा परिषद् के अन्तर्गत सेवा निवृत्त जरनेलों को एक संचालन समिति बनाई जानी चाहिये।

जनता के उत्साह को सही दिशा में लगाना आवश्यक है। समस्त स्थानों में भरती बोर्ड बनाये जाने चाहियें। आपातकालीन कमीशन तुरन्त शुरू किया जाना चाहिये और स्कूलों तथा कालेजों में सैनिक प्रशिक्षण अनिवार्य बना देना चाहिये।

हमारे जवानों की सेवा की शर्तें सुधारी जानी चाहियें। सरकार को उनकी भूमि की रक्षा करनी चाहिये और उनको आवश्यकता पड़ने पर पंचायती कोष अथवा किसी अन्य कोष से सहायता दी जानी चाहिये। उन के बच्चों की शिक्षा की भी पर्याप्त व्यवस्था की जानी चाहिये।

प्रत्येक राज्य में सेवा निवृत्त सैनिक अधिकारियों को प्रतिरक्षा परामर्शक बना कर मुख्य मंत्रियों के साथ लगाया जाये। इससे हमें राष्ट्रीय परिषद द्वारा किये गये निर्णयों को क्रियान्विति में सहायता मिलेगी।

कृषि उत्पादन में कमी न होने दी जाये।

†श्री व० गो० नायडु (तिरुवल्लूर) : मुझे हर्ष है कि इस समय देश में एकता है और सब लोग सदन के समक्ष पेश संकल्प का समर्थन करते हैं।

यह सत्य है कि हमें कई स्थानों पर पीछे हटना पड़ा है किन्तु हमें आशा है कि समय आने पर हम चीनियों को पछाड़ देंगे, क्योंकि न्याय और धर्म हमारे पक्ष में है। हमें अमेरिका, ब्रिटेन और कनाडा जैसे मित्र देशों का आभारी होना चाहिये जिन्होंने बिना शर्त के हमारी मदद करना मंजूर किया है।

चीनियों ने हमारा कई हजार वर्ग मील क्षेत्र कब्जे में कर लिया है। इसलिये हमें बहुत होशियार रहने की आवश्यकता है।

जैसा कि प्रधान मंत्री ने कहा है। यह युद्ध है संभव है लम्बे समय तक जारी रहे। इसलिए हमें हर तरह से तैयार रहना चाहिये।

यह हमारा कर्तव्य है कि हम देश के अन्दर भी अपने आपको मजबूत बनायें। इसके लिए हर एक व्यक्ति को जवान की तरह काम करना चाहिये। कृषि उत्पादन बढ़ाना अत्यावश्यक है। इस के लिए किसान को सब सुविधायें दी जायें। उनको बिजली और उर्वरक समय पर दिये जाने चाहियें। मूल्यों की रेखा ऐसे निश्चित की जायें कि उत्पादक का लागत व्यय पूरा करने के बाद कुछ बचत हो सके। इसलिए मूल्य निर्धारित करते समय उन्हें किसानों से सलाह लेनी चाहिये ट्रेक्टरों का उत्पादन बढ़ाया जाना चाहिये।

चीन के मामले को संयुक्त राष्ट्र संघ में भेजने का कोई लाभ नहीं होगा।

---

†मूल अंग्रेजी में

[श्री व० गो० नायडु]

मैं सरकार से सिफ़ारिश करूंगा कि जो देश के विरुद्ध प्रचार करे उसके विरुद्ध कड़ी कार्यवाही की जाये।

श्री दे० शि० पाटिल (यवतमाल) : उपाध्यक्ष महोदय, देश के और संसद के हमारे पूज्य नेता पंडित जवाहरलाल नेहरू ने राष्ट्रपति द्वारा जारी की गयी आपात की उद्घोषणा का अनुमोदन करने का, और भारत की पुण्य भूमि से, चीनी हमलावर को खदेड़ देने के लिए, भारतीय जनता के दृढ़ संकल्प का समर्थन करने का, जो प्रस्ताव रक्खा है और प्रस्ताव रखते वक्त जो दृढ़ विश्वास और जो भावना प्रकट की है उसका मैं हृदय से समर्थन करता हूं। जिन्होंने अपनी मातृ भूमि के गौरव तथा अखंडता की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी है उन शहीदों के प्रति सम्मानपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। प्रस्ताव में और प्रस्ताव प्रस्तुत करते नेहरू जी ने जो संकल्प बताया है वह संकल्प जनता का है। यह मानी हुई बात है कि अपने भारत में लोक सभा और ग्राम सभा यह दो महत्वपूर्ण संस्थाएं हैं। भारत पर चीनी आक्रमण से और सशस्त्र सेनाओं के भारी हमले से उत्पन्न गम्भीर स्थिति के कारण राष्ट्रपति महोदय ने जिस आपात कालीन स्थिति की घोषणा की है और श्री नेहरू और अन्य नेताओं ने राष्ट्र की सुरक्षा के लिए जनता से मातृ भूमि की रक्षा के लिए आवाहन किया है उसका सर्वत्र स्वागत हुआ है। देश में आक्रमणकारी को खदेड़ बाहर करने के लिए अपूर्व जोश है और जनता में देश की रक्षा के लिए बड़े से बड़ा त्याग करने की होड़ लगी हुई है।

हमारे महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री श्री यशवन्त राय चव्हाण जो कि शीघ्र ही भारत के सुरक्षा मंत्री का पद सुशोभित करने वाले है उन्होंने २९ अक्तूबर के दिन को तमाम महाराष्ट्र में प्रतिज्ञा दिवस के रूप में मनाया। उस दिन चीनी आक्रमणकारियों को भारत भूमि से खदेड़ने का संकल्प लिया गया और शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई। उस दिन जनता ने वहां पर भारत की रक्षा के लिए यह शपथ ग्रहण की। बलिदान की और सुरक्षा के प्रयासों के लिए हर जिले तथा देहात में नागरिक सुरक्षा समिति का गठन किया गया। नागरिक समितियों का काम धन और स्वयं सेवक जुटाना होगा। मेरे अपने निर्वाचन क्षेत्र में मैंने देखा है कि चीनी आक्रमण को लेकर जनता में गहरा रोष है और भारत की रक्षा करने में जनता के मन में बहुत उत्साह और बलिदान की भावना है।

आपने देखा होगा कि भारत में चीनी आक्रमण तथा सशस्त्र हमले से उत्पन्न गम्भीर परिस्थिति के कारण जो आपातकालीन घोषणा की है और नेहरू जी तथा अन्य नेताओं ने उस ओर जो देश का ध्यान आकृष्ट किया है, उसके कारण देश में अपूर्व जोश है। जनता को मातृ भूमि की रक्षा के लिए जो आवाहन किया गया है उसको लेकर प्रत्येक राज्य में उत्साह की लहर है और जनता उत्साह के साथ उसमें योगदान दे रही है। राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए जनता तन मन धन से तैयार है और प्रत्येक व्यक्ति मातृभूमि की रक्षा के लिए बलिदान करने को तैयार है। देश के प्रत्येक स्त्री, पुरुष और बच्चे के दिल में यह अरमान है कि चीनी दरिन्दे देश की सीमा से बाहर निकाले जायें। इसमें हमारी जीत निश्चित है परन्तु हमारे वर्तमान उत्साह को बनाये रखने की जिम्मेदारी नेताओं पर है।

देश के सामने महात्मा गांधी ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये एक कार्यक्रम रक्खा था। मैं चाहता हूं कि सरकार कुछ उसी तरह का कार्यक्रम जनता के सामने रखे। यह सिद्ध हो चुका है कि देश की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए जनता हर प्रकार का त्याग कर सकती है। अब यह गवर्नमेंट का और आयाजकों का कर्तव्य है कि वह सब साधन सही दिशा में लगायें। आज जो हमें चुनौती मिली है उसका सफलतापूर्वक सामना करने के लिये हमें औद्योगिक और कृषि उत्पादन बढ़ाने के क्षेत्र में युद्ध स्तर पर काम करना होगा।

उपाध्यक्ष महोदय, भारत की विदेश नीति सर्वथा सही है और ऐसी कोई बात नहीं हुई है जिसके कि कारण उसे बदल दिया जाय। शान्ति के समय भारत की तटस्थता की नीति थी उसे अब आपत काल में रखने की ज्यादा आवश्यकता है।

मैं कुछ सुझाव रखना चाहता हूं। हमें व्यर्थ के सब खर्चे बन्द कर देने चाहिएं। भारत सेवक समाज, भारत साधु समाज, भारत युवक समाज और सन्तान नियंत्रण आदि के प्रचार पर इस समय कुछ भी व्यय नहीं करना चाहिये। आपात काल स्थिति घोषित करने पर सबसे प्रथम केन्द्रीय मंत्रि-मंडल की संख्या कम करना चाहिए ताकि युद्ध का संचालन सुचारू रूप से चल सके। जब तक संकट हल नहीं होता तब तक सभी संसद् तथा विधान मण्डल के सदस्यों के वेतन तथा भत्ते बन्द करके संसद के लम्बे अधिवेशनों का अन्त कर देना चाहिये। संसद का विशेष अधिवेशन केवल युद्ध स्थिति पर विचार करने के लिये बुला लेना चाहिय। इससे लाखों रुपयों की बचत होगी और उस बचत का प्रयोग राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में किया जाना चाहिये। प्रान्तीय धारा सभाओं के लिए तो युद्ध काल में बहुत कम कार्य शेष रहा है। इन्हें तुरन्त निलम्बित या उनके मंत्रिमंडलों की संख्या में कमी कर देना आवश्यक है। बैंकों तथा साधारण बीमा कम्पनियों का इस समय राष्ट्रीयकरण कर देना चाहिये और इससे सुरक्षा को दृढ़ करना चाहिये।

सरहद राष्ट्र से और पाकिस्तान से काश्मीर के सम्बन्ध में कोई समझौता करना चाहिये। ऐसे मौके पर यह आवश्यक है कि धार्मिक परम्पराओं के इस देश में जहां करोड़ों और अरबों रुपये की भी सम्पत्ति मंदिरों, मस्जिदों तथा धार्मिक संस्थाओं में पड़ी हुई है वह राष्ट्र को समर्पित कर दी जाये। सरकारी और गैर-सरकारी व्यक्तियों की आय पर निश्चित रूप से काम से कम एक दशांस कटौती कर के राष्ट्रीय रक्षा कोष में जमा की जाय। हर एक व्यक्ति के निजी धन से कम से कम एक दशांस रुपया और सोना राष्ट्रीय रक्षा कोष में जमा किया जाये। देश के तमाम बड़े औद्योगिक प्रतिष्ठानों का संचालन राष्ट्रीय मंत्रालय अपने हाथ में रखे। खेती और उद्योग के उत्पादन को हमें बढ़ाना ही चाहिये। मैं सदन् को विश्वास दिलाता हूं कि ऐसा करने से हमारी सरकार को किसानों और मजदूरों का पूरा सहयोग प्राप्त होगा। हमें पूरा विश्वास है कि नेहरू जैसे सेनापति के रहते हुए यह देश विजय और समृद्धि की ओर बढ़ता ही जाएगा। हम जानते हैं कि युद्ध की स्थिति में सब से ज्यादा मुसीबत गरीब किसान तथा मजदूर पर बरसती है। युद्ध मोर्चे पर जहां जवानों पर हमला होता है वहां देश के भीतर गरीब के रहन सहन पर छापा मारा जाता है। लेकिन हम बड़ी से बड़ी कुर्बानी देने को तैयार हैं। हमें पूरा विश्वास है कि जन-साधारण के लिए नेहरू जी के दिल में जो जगह है उसकी वजह से हमें कीमतें बढ़ाने वालों से और मुनाफा खोरों से जो ऐसे मौके का नाजायज फायदा उठाते हैं, पूरा संरक्षण मिलेगा। मेरी यह प्रार्थना है कि कृषि की उपेक्षा न की जाए और किसानों को यह भरोसा दिलाया जाए कि उसका व्यवसाय लाभकारी है। हम अपनी स्वतंत्रता, अपने सम्मान की रक्षा के लिए, अपने संविधान में स्वीकृति लोक तंत्रीय जीवन की रक्षा के लिये आज लड़ रहे हैं। और अपने को समर्पित करते हैं। न्याय हमारे साथ है। "सत्यमेव जयते" पर हमारा पूरा भरोसा है। इसलिए जैसाकि प्रधान मंत्री श्री नेहरू ने कहा है कि लड़ाई में अंतिम जीत हमारी होगी, इस पर हमें भरोसा रखना है।

मैं ने जो प्रस्ताव उपस्थित किया गया है, इसका हार्दिक समर्थन करते हुए अपने भाषण को समाप्त करता हूं।

श्री ज० ब० सिंह (घोसी) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं उन जवानों के प्रति जिन्होंने अपने को देश रक्षा के लिए न्यौछावर किया है, अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

[श्री ज० ब० सिंह]

आज पूरा राष्ट्र गुस्से, संकल्प और अफसोस से भरा हुआ है। गुस्सा इसलिए है कि चीन ने हमारे मुल्क पर हमला किया है। संकल्प यह है कि हम उन्हें अपने देश से भगायेंगे, निकालेंगे, और अफसोस इसलिए है कि हमें चीनियों के सामने कुछ पीछे हटना पड़ा है। जो हमारे सामने परिस्थिति है, उस से ये तीन बातें पैदा हुई हैं। इन तीनों बातों के पैदा होने से आज बहुत से हमारे साथी, बहुत से हमारे दोस्त, संकल्प की तो बात करते हैं, लेकिन साथ ही साथ जो राष्ट्र के अन्दर, जनता के अन्दर गुस्सा पैदा हुआ है, अफसोस पैदा हुआ है, उसको अपने राजनीतिक उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल करना चाहते हैं। इससे मुझे अफसोस है। मिसाल के तौर पर कहना चाहता हूं कि वहां पर सभी पार्टियों के लोग खड़े हो कर कह रहे हैं कि मैं नेहरू जी के पीछे हूं, उनका समर्थन करता हूं और जो आज्ञा देंगे, उसका पालन करूंगा और अपने मुल्क की धरती से इन चीनी दरिन्दों को भागाऊंगा। एक मिसाल है जो मैं आपके सामने रखना चाहता हूं। आप गुरु को तो बहुत अच्छा कहते हैं और कहते हैं कि वह बहुत अच्छा है और आप गुरु की सब बातें मान लेंगे। लेकिन गुरु के मंत्र की क्या हालत है। गुरु के मंत्र को लीजिये, देखिये वह क्या है। वह है, नान-एलाइनमेंट। उसके बारे में आप कहते हैं कि नहीं साहब हम इस नान-एलाइनमेंट को नहीं मानते हैं यह नहीं होगा। उनका मंत्र है। को-एग्जिस्टेंस का। उस के बारे में आप कहते हैं कि यह नहीं होगा। ये चीजें देश को तबाह करेंगी। दूसरी पार्टियों की तरफ से यह कहा जाता है कि यह पालिसी गलत है, यह नीति गलत है, यह धारणा गलत है। मेरी समझ में नहीं आता कि यह जो इंटरनेशनल पालिसी है, वह गलत कैसे आप कहते हैं। अब आप राष्ट्रीय पालिसी को देखिये। हमारी राष्ट्रीय नीति कहती है कि हम यहां समाजवाद लायेंगे और उस के लिए हम लड़ेंगे और लड़ रहे हैं। देश में प्लांड इकोनोमी हमने बनाई है और उस के जरिये हम देश को आगे ले जाना चाहते हैं, आगे बढ़ाना चाहते हैं। इस के बारे में भी आप कहते हैं कि नहीं साहब, समाजवाद को हम नहीं चाहते हैं, वह नहीं हो सकता है। आप समाजवाद की बात न कीजिये, उस में हमारा विश्वास नहीं है। इतना सब कुछ कह कर भी वे कहते हैं कि नेहरू जी हमारे नेता हैं। इस तरह की बात को सुन कर बड़ा अफसोस हुआ। लेकिन जब कम्युनिस्ट पार्टी के लोग कहते हैं कि नेहरू जी हमारे नेता हैं तो कहा जाता है कि वे चापलूसी करते हैं। मैं कहना चाहता हूं कि चापलूसी की यह बात नहीं है। हम सच्चे दिल से कहते हैं कि हम उन के पीछे हैं। हम न्यूट्रैलिटी में विश्वास करते हैं, हम नान-एलाइनमेंट में विश्वास करते हैं, हम समाजवाद में विश्वास करते हैं, हम प्लान्ड इकोनोमी में विश्वास करते हैं, हम को-एग्जिस्टेंस में विश्वास करते हैं और इसलिए आज और मजबूती के साथ उनका समर्थन कर रहे हैं।

हमारी समझ में नहीं आता है कि क्यों बहुत से लोग, बहुत सी पार्टियां कहती हैं कि कम्युनिस्ट पार्टी देश भक्ति का सबूत दे तो दे और देश भक्ति का सबूत क्या दे कि चीनी एम्बेसी के सामने जा कर प्रदर्शन करे। जब कम्युनिस्ट पार्टी डंके की चोट पर कहती है कि हम चीनीयों को अपनी जमीन से गोलियों से मार कर हटा देंगे और तभी हम दम लेंगे तो फिर बच्चकानी राजनीति और इस तरह की बातें क्यों की जाती हैं।

कुछ माननीय सदस्य : झूठ है।

श्री ज० ब० सिंह : झूठ नहीं सही है। प्रूफ आफ पूडिंग इज इन दी ईटिंग।

†**श्री रा० शि० पांडेय** (गुना) : कम्युनिस्ट पार्टी का अध्यादेश क्या था। १९४२ में कम्यु-पार्टी ने देश के साथ धोखा किया।

---

†मूल अंग्रेजी में

†श्री प्रिय गुप्त : उस समय वे शायद कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य नहीं थे।

श्री ज० ब० सिंह : बकवास में सबूत नहीं होगा, मैदान में सबूत होगा और मैदान में जाने पर ही सबूत देना सही होता है। मैं कहता हूं कि ज़रा धीरज से आप मेरी बात को सुनिये, आप चाहे कम्युनिस्ट हों या वे-कम्युनिस्ट।

मेरा यह कहना है कि इस तरह की जो लोग बातें करते हैं वे किस तरह नेहरू जी का समर्थन करते हैं। मैं कहता हूं कि नेहरू जी का इस प्रकार से समर्थन नहीं हो सकता है। यह तो वैसा ही समर्थन है जिस प्रकार का कि एक रस्सी एक कंडेम्ड प्रिज़नर को स्पोर्ट करती है।

श्री रा० शि० पाण्डेय : १९४२ में क्या किया था ?

श्री ज० ब० सिंह : चौदह बरस की जेल काटी थी। अंग्रेज़ों की गोलियों से लड़ा था, खाली सत्याग्रह ही नहीं किया था (अन्तर्बाधाएं)। सब्र से इनको मेरी बात को सुनना चाहिये। इनको चाहिये कि कलेजे पर हाथ रख कर मेरी बात को सुनें। जिस तरह से यहां लोग स्पोर्ट कर रहे हैं, उसपर आप जरा ध्यान दीजिए। आप इन की मीटिंगों की कार्यवाही को देखिये। वहां पर तीन चौथाई बातें इस प्रकार की की जा रही है जिन से पता चलता है कि नेहरू जी खराब हैं, मेनन खराब हैं, प्लान खराब है, निकम्मा है। क्या इस तरह से राष्ट्र में एकता स्थापित हो सकती है और क्या ये एकता स्थापित करेंगे ? क्या ये हमारे जवानों में भरोसा पैदा कर सकेंगे, क्या ये हिन्दुस्तान की जनता को एकता की तरफ ले जायेंगे, उसको मज़बूत करेंगे, चीनी दरिंदों को भगा पायेंगे ? यह तरीका नहीं है, यह ढंग नहीं है, यह अपनी राजनीति बनाने का ढंग है। आज राष्ट्र की मांग क्या है ? आज राष्ट्र चाहता क्या है आज राष्ट्र की पुकार क्या है .....

डा० मा० श्री अणे (नागपुर): चीनियों को यहां से भगाओ, उन को यहां से निकालो, यही आज की मांग है।

श्री ज० ब० सिंह : यही राष्ट्र चाहता है और इस के लिए क्या करना चाहिये, यह मैं आपको बतलाना चाहता हूं। हमें चाहिये कि जो किसान की, जो मज़दूर की तथा जो दूसरों लोगों की पिछली कतार है, उसको हम ज्यादा से ज्यादा मजबूत करें। इस के लिये यह जरूरी है कि राष्ट्रीय एकता मजबूत हो, हर एक हिन्दुस्तानी चाहे वह किसी भी दल का हो, अपने भेद भाव को भुला कर के पार्टी बाज़ी को छोड़ कर के, अपनी राजनीति को दूसरों पर लादने की कोशिश न कर के, देश के लिये त्याग करने के लिये तैयार हो जाए, देश की एकता को बढ़ावे और चीनियों को यहां से निकाल बाहर करे।

मैं एक दो सजेशंज़ आपके सामने रखना चाहता हूं। जो इस तरह का प्रचार चल रहा है कि मरने के लिये चलो, इस तरह का प्रचार बन्द होना चाहिये। आप ज़िन्दा रहने के लिये चलिये, चीनियों से लड़ने के लिए चलिए। उनको अगर हम मार भगायेंगे तभी हम जिन्दा रह सकेंगे, हमारा राष्ट्र जिन्दा रह सकेगा, हम सभी जिन्दा रह सकेंगे। इस तरह का प्रचार हमको राष्ट्रीय पैमाने पर करना चाहिये।

---

†मूल अंग्रेजी में

[श्री ज० ब० सिंह]

हम सभी जिन्दा रहेंगे और इसलिये इस तरह के प्रचार को हमें देश के अन्दर राष्ट्र के पैमाने पर करना चाहिये कि राष्ट्र को जिन्दा रखने के लिये, अपने को जिन्दा रखने के लिये, हर एक व्यक्ति को जिन्दा रखने के लिये मोर्चों पर चल रही लड़ाई में हम चीनियों को भगायेंगे ।

मैं आप के जरिये इस सदन को विश्वास दिलाता हूं कि मैं गरीब पूर्वी जिलों से आता हूं लेकिन हमारे पूर्वी जिलों का इतिहास, चाहे वह सन् १६४२ का हो, चाहे कभी का हो, हमेशा उज्जवल रहा है । और इस वक्त चीनियों ने हम पर जो हमला किया है, हमारे ऊपर जो एग्रेशन किया है उसमें भी मैं विश्वास दिलाता हूं कि पूर्वी जिले के लोग धन, जन और सभी दूसरे तरीकों से लड़ेंगे और चीनियों को अपने देश से बाहर निकालेंगे ।

[उपाध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए]

†**उपाध्यक्ष महोदय :** अब, श्री प० ला० बारूपाल माननीय सदस्य अनुपस्थित हैं । अब श्री सिद्ध-नजप्पा ।

श्री शिव नारायण (बांसी) : उपाध्यक्ष महोदय, क्या परसों की ३४ नामों की लिस्ट में मेरा नाम नहीं है ? मैं यहां पता नहीं कब से बैठा हूं लेकिन मुझे नहीं बुलाया गया ।

†**उपाध्यक्ष महोदय:** मेरे पास यह परसों की ही लिस्ट है ।

†**श्री जोकीम आल्वा** (कनारा) : जो सदस्य चार दिनों से बैठे हैं उनकी क्या स्थिति है ?

†**उपाध्यक्ष महोदय** : मेरे सामने सूची में ६० नाम हैं । हम अधिक से अधिक सदस्यों को मौका देने की कोशिश कर रहे हैं ।

†**श्री जोकीम आल्वा** : हम चार दिन से बैठे रहे हैं । अतः हमें बोलने का मौका दिया जाए ।

†**श्री हेम राज** : जो सदस्य सीमान्त क्षेत्रों से आते हैं उनको बोलने का मौका नहीं दिया गया है ।

†**उपाध्यक्ष महोदय** : प्रत्येक व्यक्ति को मौका मिलेगा और उस काम के लिये हम यथासम्भव देर तक बैठेंगे ।

†**श्री सिद्धनंजप्पा** (हसन) : चीन के भारत पर आक्रमण से न केवल भारत के लोगों को आश्चर्य हुआ है, परन्तु संसार के सभी सभ्य देशों पर प्रभाव पड़ा है ।

यह बात ठीक है कि भारत पर चीन के आक्रमण के लिये सरकार तैयार नहीं थी । चीन अति-क्रमण की बातें पांच वर्ष से कर रहा है । और भारत के लिये इन बातों को समझने के लिये काफी समय था । परन्तु इस समय इन बातों में नहीं जाना चाहिये । इस समय हमें चीनियों को खदेड़ बाहर निकालने पर विचार करना चाहिए ।

सरकार को चीनियों के साथ लड़ रहे जवानों के परिवारों की देखभाल के लिये कदम अवश्य उठाने चाहियें ।

यह बड़ी अच्छी बात है कि वर्तमान संकट में समस्त जनता एक स्वर से प्रधान मन्त्री का समर्थन कर रही है । हमें अन्ततः विजयी बनाने में उनकी योग्यता के सम्बन्ध में कोई सन्देह नहीं किया जाना चाहिए । इस समय हमें उनके हाथ मजबूत करने चाहियें ।

---

†मूल अंग्रेजी में

बीर पूजा के प्रश्न को हटा कर हमें दुश्मन को बाहर खदेड़ने के लिये कोशिश करनी चाहिये।

श्री बाल्मीकी (खुर्जा) : उपाध्यक्ष महोदय, भारी तपस्या के बाद जो समय मुझे प्राप्त हुआ उसके लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूं।

यो नो द्वेषत् पृथिवि यः पृतन्यात योऽभिदासान्मनसा यो बधेन।
तं नो भूमे रन्धय पूर्वकृत्वरि ।।

इस पृथिवीसूक्त के मन्त्र में शत्रु के कुचलने की ओर उद्बोधन है। जो हमसे द्वेष करते हैं, जो से ा लेकर हमें सताने आते हैं, जो मन से भी हमारी बुराई चाहते हैं और जो हमें मारने को तैयार हैं, उन्हें हे शत्रु मर्दनी हम विनष्ट कर देंगे।"

यावया वृवयं वृकं यवयस्तेन भूम्ये
अथा नः सुतरा भव ।।

इस ऋग्वेद के मन्त्र में शत्रु को भगाने का संकल्प है, हमारी धरती पर ये जो 'भेड़िये हैं' ये जो चोर हैं उन्हें दूर भगा, हे रात्रि। तू हमारे लिये ार जाने योग्य बन।' हमारा यह संकल्प पूरा ही होगा।

आज सदियों के बाद ह जब हम स्वतन्त्र हैं, हमारी उत्तरी सीमाओं पर रण दुन्दुभि बजी है। इस रणभेरी को सुन कर रण वीर, बांकुरे, योद्धाओं की नसों में मां का आर्य रक्त उबल उठा है। आज एक बार फिर मां की लाज ने पुकारा है, हिमालय जो हमारी सभ्यता व संस्कृति तथा परम्पराओं का प्रतीक है, और हमारा रक्षक रहा है, पुकार उठा है, आज हमारी खुद की गैरत ने पुकारा है।

हमारे फौजी जवानों ने संसार में ख्याति प्राप्त की है, और आज भी उनकी ख्याति में चार चांद लग रहे हैं जबकि वे अपनी भूमि की रक्षा कर रहे हैं।

इससे पहले कि मैं आगे बढ़ूं मैं उन जवानों को श्रद्धांजलि समर्पित करता हूं जो हिमालय की गोद में देश की रक्षा के लिये शक्तिशाली शत्रु से जूझते हुए वीरगति को प्राप्त हुए हैं। उनकी शूरता तथा बहादुरी ने शत्रु के दांत खट्टे कर दिये हैं। मैं उन बहादुरी से लड़ने वाले जवानों को बधाई देता हूं जो दुश्मन के कदमों को रोके हुए हैं और इस पवित्र धरती से उनको उखाड़ फेंकने के लिये वीरता से लड़ रहे हैं ऽ

वीर एक ही बार मरना जानते हैं, कायर बार बार मरते हैं। मैं सद्गुरु कबीर के शब्दों में कहना चाहता हूं।

सूरा सोई सराहिए, लड़े धनी के हेत।
पुरजा पुरजा कट मरे, तऊ न छाड़े खेत ।।
मरते मरते जग मुआ, मरण न जाना कोय।
ऐसे मरना को मुए, फेर न मरना होय ।।

साम्राज्यवादी चीन ने विस्तारवादी लिप्सा तथा पाशविक धृष्टता के साथ हमारे शान्तिप्रिय देश पर वर्बरतापूर्ण हमला किया है। हमारी मित्रता तथा संसार के राष्ट्र संघ में हिमायत का यह बदला दिया है। चीन की यह धोखेबाजी और चालबाजी की कलई खुल गई है, लेकिन हमारी शान्ति नीति का यह मतलब नहीं है कि कोई शत्रु हमारे सिर पर चढ़ आए तो उसे सिर झुका कर बर्दाश्त कर लें। ऐसा नहीं है। हम उसका जवाब डट कर देंगे। हमें इस चुनौती का जवाब देना है।

दुनिया ने देखा है कि घमण्ड का सिर नीचा होता है। बड़े बड़े पाशविक घमण्डी हिटलर और मुसोलिनी जैसे तानाशाही दैत्यों के सिर कुचल डाले गए। किन्तु आज भारत पर चीन के साम्यवादी घमण्ड का फुंकारता हुआ तीन सिर वाला (चाऊ, माऊ, शाहू) वाला चीनी ड्रेगन महा अजगर हमें

[श्री वाल्मीकी]

बसने के लिये आगे बढ़ा है। हमारा यह दृढ़ निश्चय है कि इस महा अगर के दांत ही नहीं तोड़ने हैं बल्कि इसका विनाश कर डालना है।

इस निश्चय में कि शत्रु को उखाड़ फेंकना है, सारा देश राष्ट्र के कर्णधार पंडित जवाहरलाल नेहरू के पीछे है। जो यह कहते हैं कि आज हमें हीरो कल्ट की जरूरत नहीं है वह गलत कहते हैं। राष्ट्र की कठिन घड़ी में एक नेता चाहिये और वे नेता पंडित जवाहरलाल नेहरू हैं।

सध्रीचीनान् वः समनसः कृणोम्येकश्नुष्टीन्।
संवनेन सहृदः अथर्व वेद

'समान मार्ग पर चलने वाले, सब को एक मन वाला बनाता हूं, जिससे आप परस्पर प्रेमपूर्वक समान भावों के साथ, एक नेता के पीछे चल सको।'

देश में आज इस चीनी हमले के बाद बलिदान की भावना जाग्रत हुई है। इस व्यापक भावना से देश के जन जन को बल मिला है और साहस प्राप्त हुआ है। अचानक देश में जो भावात्मक, विचारात्मक, क्रियात्मक एकता पैदा हुई है, उसमें देश की विषमता तथा वैमनस्यता डूब गयी है। आज चीनी हमले का मुकाबला करने के लिये, देश एक है, राष्ट्र एक है और सब एक मत से देश तथा प्रभुसत्ता की रक्षा के लिये तैयार हो गए हैं और कहते हैं कि

वयम् तुभ्यम् बलिहृतः स्याम्।

'हम तेरे लिये जान हथेली पर लेकर प्राणों की बाजी लगा कर, सब कुछ त्यागने के लिये तैयार हैं। प्रधान मन्त्री जी का यह कहना सत्य है कि :—

"सब के लिये एक ही काम है। प्रत्येक को जीवन देना है। स्वतन्त्रता खोए जाने पर कौन बच सकता है। जब भारत जीवित है तो कौन मर सकता है।"

हम दृढ़ विश्वास के साथ कहते हैं कि ऐसी कठिन घड़ी में एक एक बच्चा बलिदान के लिये तैयार है। अन्तिम विजय हमारी ही होगी क्योंकि हमारा मार्ग शान्ति तथा न्याय का है।

भारत आज यदि लड़ रहा है तो अपनी रक्षा के लिये नहीं बल्कि प्रजातांत्रिक परम्पराओं के लिये तथा संसार की शान्ति के लिये, क्योंकि चीन के इस हमले से एशिया की ही नहीं, संसार की शान्ति भंग हुई है। हम हर हालत में शान्ति के शत्रु से लड़ेंगे और देश की रक्षा करेंगे।

वैसे हम शान्ति में विश्वास करने वाले रहे हैं। भारत की नान एलाइनमेंट की नीति की उपयोगिता को मानना ही होगा। इससे देश को लाभ पहुंचा है और अन्ततोगत्वा पहुंचेगा। दो बड़े गुटों में शामिल न होकर और शान्ति पूर्वक सब राष्ट्रों से मित्रता बनाए रखने से, हम कुछ कर सके हैं। हमारी योजनाएं और कल्याणकारी कार्यक्रम आगे बढ़ा है, देश का उत्पादन बढ़ा है। इस नीति को अब भी बनाए रखना है क्योंकि इस तनाव के वक्त में और कोई रास्ता नहीं है।

लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि अपने को कमजोर बनाये रखें। पिछली असावधानी से हमने सीखा है और सम्भल कर सीखा है। इस हमले के बाद देश में कुछ जान आयी है। अब हमारे रक्षा के प्रयत्न तेजी से आगे बढ़ने चाहियें। हमारी तैयारियां फौजी ढंग से चलनी चाहियें। ढीलापन छोड़ कर चुस्ती आनी चाहिये। खुशी है कि बाहर से आधुनिक अस्त्र-शस्त्र मंगाए गए हैं और आ भी रहे हैं। उन मित्र राष्ट्रों को हम हृदय से धन्यवाद देते हैं। लेकिन हमें अपनी तैयारी घर में करनी है और दिन रात एक करके दूने, चौगुने, नहीं अठगुने दस गुने स्वचालित हथियार बनाने हैं। हवाई जहाज और बम वर्षक बनाने हैं या मंगाने हैं।

सारे देश में फौजी चाल की तेजी बढ़नी चाहिये। राइफिल ट्रेनिंग और दूसरे हथियारों की ट्रेनिंग नौजवानों, विद्यार्थियों तथा एबिल बाडीज इन्सानों को देनी है जिससे मालूम पड़े कि हम कुछ करना चाहते हैं। ठीक है, भरती चल रही है, उसमें सभी को सहयोग देना है। चीन ने जो तैयारी की है वह अजीब है, लेकिन हमको भी अजब तैयारी करनी है। यदि कोरिया के आधार पर चीन बराबर फौजी दस्ते झोंकता चला गया तो उनको रोकने के लिये हमारी वैसी तैयारी होनी चाहिये। तीन महीने के अन्दर एक करोड़ आदमी फौजी तैयार होने चाहियें।

वैसे मुझे इस ओर कहते हुए संकोच होता है। कुछ साथियों ने मिलिटरी में भेदभाव की ओर इशारा किया है। मैं ऐसा नहीं मानता हूं। हमारी फौज एक है, और एक भारतीय आत्मा तथा नैतिकता की प्रतीक है। बहादुरी कोई एक जाति विशेष का अधिकार नहीं है, राष्ट्र के सभी अंगों का है। यह समय सदियों के बाद आया है कि हम एक होकर लड़ रहे हैं।

यों तो इस संकट में सभी का सहयोग है किन्तु देश के दरिद्र नारायण अकिंचनों, विशेषकर हरिजन, बाल्मीकी, सफाई मजदूर, रिक्शा वाले, पालिश वाले आदि का सहयोग विचित्र है, और राष्ट्र की एकता का द्योतक है। उन्होंने साफ साफ जाहिर कर दिया है कि अब तक पीछे रहे हैं और रखे गये हैं, लेकिन अब किसी हालत में पीछे नहीं रहेंगे। जान की बाजी लगा देंगे, राष्ट्र की रक्षा का भार अब गरीबों पर आ गया है। गरीब इसमें पीछे नहीं हैं और न रहेंगे।

वयम् राष्ट्रे जागृयाम् पुरोहिताः।

हम राष्ट्र के चौकीदार बन कर जागते रहेंगे। हमारी निष्ठा कर्तव्य परायणता, किसी प्रकार हल्की नहीं रहेगी। तन, मन धन का यह गरीबों का सहयोग चल रहा है। धनीमानी सोना और धन दे रहे हैं लेकिन गरीब भी थोड़ा धन देकर और अपना जीवन देकर योगदान दे रहे हैं। उनके बच्चे फौज में सीना तान कर आ रहे हैं।

यह समय छिद्रान्वेषण का नहीं है, आज किसी भी प्रकार की विभिन्नता, भेद प्रभेद, तोड़ फोड़ घात की बात करना देश के साथ अन्याय है। आज कुछ लोग हिटलर के पांचवें दस्ते की तरह से मातमी तथा उतरी हुई सूरत लेकर कमजोरी की बात करते हैं। उनसे देश को बचाना है। आज देश के प्रति शुद्ध भक्ति एक कसौटी पर है, उसमें कौन खरा उतरता है। आज हमें उतना खतरा साम्यवाद से नहीं है जितना साम्यवादियों से है, उनसे होशियार रहना है। वैसे आदमी की शक्ल एक है, लेकिन अपने कर्म से वे दो बना लेते हैं, यह बात साम्यवादियों पर चरितार्थ होती है। उन्हें अपनी भारतीयता और राष्ट्र निष्ठा का परिचय देना है। लेकिन हम उन्हें क्या दोष दें, देश में अनेक छिपे रुस्तम, आस्तीन के सांप जयचन्द तथा माहिल हैं जिनसे होशियार रहना है और देश को बचाना है। इस ओर कानून का पंजा सख्त करना है। अब मैं कोई ज्यादा समय नहीं लेना चाहता। श्री कृष्ण मेनन का इस्तीफा मंजूर करने से एक अच्छी बात हुई है किन्तु प्रधान मन्त्री पर बड़ा भार आया है। इस कण्ट्रोवर्सी को मैं ज्यादा नहीं बढ़ाना चाहता क्योंकि उसके बारे में इन्क्वायरी का वायदा किया जा चुका है। अब मैं कुछ सुझाव देकर समाप्त करता हूं। मेरे सुझाव इस प्रकार हैं:—

१. जवानों के परिवारों को जमीन तथा धन की शीघ्र सहायता देनी चाहिये, हर काम में. उनको प्राथमिकता देनी चाहिए।

२. देश की रक्षा का व्यय बढ़ा है, इसलिये सरकारी अनावश्यक अपव्यय रुकना चाहिये। धन बचा कर इधर लगाना चाहिए।

३. विकास तथा सामुदायिक योजनाओं का अपव्यय रोक कर और कुछ योजना के कामों को हटा कर धन बचाना चाहिये, जीपों का प्रयोग कम होना चाहिये।

[श्री वा म कों]

४. अनेक कल्याणकारी योजनाओं में आवश्यक कटौती होनी चाहिये और समाज कल्याण का विभाग समाप्त करके धन इधर लगाना चाहिये ।

५. नशाबन्दी का काम आगे नहीं बढ़ना चाहिये । उसका धन भी इधर लगाना चाहिये ।

६. कीमतें बढ़ने से रुकनी चाहियें और अधिक लाभ उठाने वाले तथा चोर बाजारी करने वालों को रोकना चाहिये और कड़ा दण्ड देना चाहिए ।

७. जीवन में सादगी तथा बचत को प्राथमिकता देनी चाहिये ।

†**उपाध्यक्ष महोदय** : श्री सुमत प्रसाद ।

†**श्री ब० का० भट्टाचार्य** (रामगंज): जो सदस्य बोलेंगे पहले सुझाव दे दें, फिर बाद में बोलें।

†**उपाध्यक्ष महोदय**: यह तो माननीय सदस्यों की मर्जी पर है । कई सदस्य बोलना चाहते हैं किसी सदस्य को १० मिनट से अधिक नहीं लेने चाहियें ।

†**श्री सुमत प्रसाद** (मुजफ्फरनगर) : सारा देश प्रधान मन्त्री के पीछे है । वह शान्ति के महान् नेता थे । अब युद्ध के भी महान् नेता होंगे ।

तटस्थता की नीति हमारे लिये भूतकाल में हितकर रही है । भविष्य में भी वैसी ही रहेगी । परन्तु उसमें देश की आवश्यकता के अनुसार समायोजन किया जा सकता है ।

कुछ मित्र देशों ने हमारी सहायता की है । उनके हम कृतज्ञ हैं । हमें प्राप्त शस्त्रास्त्रों का मूल्य चूकाने पर जोर नहीं देना चाहिये ।

आपातकाल के इस समय में हम अपनी योजनाओं को नहीं छोड़ सकते । देश को खाद्यान्न के मामले में आत्म-निर्भर बनाना है । उद्योगों को भी गतिशील बनाना है ।

देश में पर्याप्त उत्साह है । इसे सही दिशा में लगाना आवश्यक है । इस कार्य के लिये ठोस कार्यक्रम बनाया जाना चाहिये ।

व्यर्थ के व्यय को कम किया जाए तथा समस्त क्षेत्रों में मितव्ययता से काम लिया जाय । सांस्कृतिक कार्यक्रमों को बन्द किया जाए ।

यह लोकतन्त्र के संरक्षण के लिये युद्ध है । सारे संसार की आंखें हमारी ओर हैं । हमें स्वतन्त्रता के लिये कीमत देनी है ।

†**श्री प्रिय गुप्त** (कटिहार) : मैं वर्तमान संकट को रेलवे कर्मचारियों तथा श्रमिक सरकार के अपने पूर्ण समर्थन का आश्वासन देता हूं ।

यह बात सन्तोषजनक है कि प्रधान मन्त्री ने गैर-तैयारी के सम्बन्ध में जांच करने का आश्वासन दिया है । इसके लिये सारे मन्त्रीमण्डल का दोष था, परन्तु श्री कृष्ण मेनन को ही इसकी सजा मिली है । उस सारी मनोवृत्ति में परिवर्तन की आवश्यकता है जो अभी तक हमारी प्रतिरक्षा की नीति के बारे में पथप्रदर्शन करती रही है ।

---

†मूल अंग्रेजी में

रेलवे मन्त्रालय को उन कर्मचारियों के साथ सहानुभूति का व्यवहार करना चाहिये जो युद्ध प्रयत्नों को सहायता देने के लिये दिन रात काम कर रहे हैं। उन को समय पर वेतन इत्यादि मिलने चाहियें ।

समाज विरोधी तत्वों को कठोरता से दबाया जाये, विशेषतः उत्तर प्रदेश, बिहार, आसाम पश्चिमी बंगाल तथा पंजाब के क्षेत्रों में ।

श्री शिव नारायण (बांसी) : मैं आपका बड़ा अनुग्रहीत हूं कि आपने मुझे बोलने का अवसर दिया है । मुझे खुशी है कि प्रधान मन्त्री जी इस समय यहां मौजूद हैं और साथ ही साथ रंगा साहब भी मौजूद हैं । मैं रंगा साहब से कुछ निवेदन करना चाहता हूं । उन्होंने कहा कि जब गांधी जी मौजूद थे तब जवाहरलाल जी से हमें प्रेरणा मिलती थी, आज नहीं मिलती है । वह समय और था और आज समय और है । मैं उनको बतलाना चाहता हूं कि आज देश का बच्चा बच्चा नेहरू जी से प्रेरणा प्राप्त करता है । डा० सिंघ अपर हाउस में हैं, और मेरे दोस्त हैं। उनका आठ बरस का बच्चा चलते समय कहता है कि एक रुपया हमारा यह नेहरु चाचा को भेंट कर दीजिये । यह प्रेरणा बच्चा उनसे प्राप्त करता है, लेकिन उनको वह प्राप्त नहीं होती है । मैं बच्चों की प्रशंसा करता हूं, तारीफ करता हूं । रंगा साहब बड़े विद्वान् हैं, १९४६ में मैंने उनका नाम सुना था, बड़ा नाम था उनका । बड़ी मुझ में तमन्ना थी कि मैं उनको देखूं, उनसे प्रेरणा लूं । परन्तु जो कुछ मैंने अब देखा है, उनको देख कर उनको उनकी बुद्धि पर ही छोड़ सकता हूं ।

मैं प्रधान मन्त्री जी से प्रार्थना करना चाहता हूं कि बोर्डर डिस्ट्रिक्ट जो हैं, उन की तरफ वह खास ध्यान दें । मेरा बोर्डर डिस्ट्रिक्ट है । वह नेपाल बोर्डर से करीब पचास मील पर है । वहां विशेष प्रबन्ध की जरूरत है । उधर ट्रेंचिज़ खोदी जा रही हैं । हमारे जिले के लोगों का नेपाल से सम्बन्ध है । रानी जो बांसी की है वह नेपाल की बेटी हैं और हमारे यहां बयाही हुई हैं । हमारे और नेपाल के बीच अच्छे सम्बन्ध होने चाहियें । आई० सी० एस० लोग जोकि राजदूत बना कर विदेशों में भेज दिये गये हैं, उनको वापिस बुला कर एडमिनिस्ट्रेशन को चलाने के काम में लगाया जाना चाहिये । आप पोलिटिकल आदमियों को राजदूत बना कर बाहर भेज सकते हैं । आपको याद होगा कि श्री चर्चिल ने श्री हालीफाक्स को वाशिंगटन में राजदूत बना कर भेजा था । यह समय की पुकार है ।

जहां तक दलित वर्ग का सम्बन्ध है, वह आपके पीछे हैं । हमारे प्रेजीडेंट ने अपील की है और कहा है कि हम पार्लियामेंट में उनका सन्देश पहुंचा दें । उन्होंने कहा है कि हमारा एक एक हरिजन बच्चा, हर घर से एक एक जवान लड़ाई में जाने के लिये तैयार है । उन्होंने पांच हजार की थैली भी अपनी फर्स्ट इंस्टालमेंट के रूप में दी है, इस पवित्र कार्य में ।

हम उन शहीदों की भी याद करते हैं और उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं जिन्होंने नेफा में तथा लद्दाख में अपने आपको बलिदान किया है । उन्होंने मुल्क की खातिर ये कुर्बानियां दी हैं और उनकी कुर्बानियों को मुल्क कभी नहीं भूल सकता है। हमारे सैनिक अंग्रेजों के वक्त में जर्मनों से लड़े हैं, जापानियों से लड़े हैं । वे किसी से कम बहादुर नहीं हैं। आज तो देश का बच्चा बच्चा नेहरू बना हुआ है और देश के कौने कौने से आज यह पुकार उठ रही है कि वे देश के लिये मर मिटने के लिये तैयार हैं ।

लोग यहां छोटी छोटी बातें खड़े होकर करते हैं । लोग क्रिटिसिज्म भी करते हैं । वे यह नहीं समझते हैं कि विदेशों में जब यह चीज़ फैल जाती है तो इसका क्या प्रभाव पड़ता है । आज दुनिया में हमारी क्या पोजीशन है। हमारे पीस मिशन का क्या मतलब है। इसका मतलब यह है कि हम दुनिया

[श्री शिव नारायण]

वें पीस चाहते हैं। हमारी नान-एलाइनमेंट की पालिसी बड़ी ऊचांन पर है। अमरीका तक ने कहा है है कि नेहरू जी का जो मिशन है, उनकी जो नान-एलाइनमेंट की पालिसी है, वह सुन्दर है, उत्तम है। मैं उनकी इस पालिसी का समर्थन करता हूं। हमारी तटस्थता की नीति में कोई गड़बड़ी नहीं है। वही लोग आज सावधान हैं जो कच्चे धागे पर चल रहे हैं। सत्य और अहिंसा का सन्देश संसार को भारत ने दिया है। नेहरू जी आज ७३ साल के हैं लेकिन ३७ बरस के जवान नजर आते हैं, और जवानी उनके चेहरे पर झलकती है। जो संकट आज हमारे सामने उपस्थित है, उसके प्रति हम पूर्ण जागरूक हैं और गफलत में नहीं हैं। हमारी यह पालिसी रही है कि हम दूसरों पर अटैक नहीं करेंगे लेकिन साथ ही साथ हमारी यह भी पालिसी रही है कि अगर दूसरे हम पर अटैक करेंगे तो उसका जवाब हम पूरी ताकत से देंगे और अपनी रक्षा करेंगे। आज हम अपना तन, मन, धन सब कुछ देश रक्षा के लिये न्यौछावर करने के लिये तैयार हैं।

मैं एक गरीब आदमी हूं और खेती करता हूं। मैं किसान का बेटा हूं। देश से मेरी जान ससती है है और मैं देश पर मर मिटने के लिये तैयार हूं। हमारे नौजवान आज जाग उठे हैं और सभी ने नेहरू जी के पीछे हैं। यहां पर श्री चह्वाण डिफेंस मिनिस्टर होकर आ रहे हैं और मैं समझता हूं कि वह आने के के बाद चीनियों का नक्शा ढीला कर देंगे। हम किसान खेती में काम करेंगे, मिलों में हम काम करेंगे और उत्पादन बढ़ायेंगे। हम स्कूलों में काम करेंगे और अपने बच्चों को ट्रेनिंग दिलायेंगे। उनको अच्छी शिक्षा दिलवायेंगे ताकि वे देश सेवा कर सकें, देश के लिये अपनी जान न्यौछावर कर सकें। हम देश को ऊंचान पर ले जायेंगे। चालीस करोड़ में से कम से कम पांच करोड़ हम बलिदान कर देंगे। ये थोड़े नहीं हैं। (अन्तर्बाधाएं) हम उनमें से नहीं हैं जो कहेंगे कुछ और करेंगे कुछ और ही।

मैं आपको चन्द सजैशन्ज देना चाहता हूं। वे इस प्रकार हैं :—

आपात काल के लिये निजी भत्ते बन्द कर दो। उचित्त तरीकों से छिपाए हुए सोने को निकालना चाहिये। गर प्रतिरक्षा कामों के लिये पैटरोल की खपत दस गैलन कर दी जाए। दस गैलन से अधिक न दिया जाए।

आज देश रक्षा के काम में हर गरीब मदद दे रहा है, धन दे रहा है। मैं पूंजीपतियों से पूछना चाहता हूं उनसे पूछना चाहता हूं जो अखबार चला रहे हैं और प्रधान मन्त्री की भांति भांति के फोटो निकाल कर हमारे देश की तौहीन करते हैं, कि उन्होंने क्या किया है। वे आज भी जिन्दा हैं और मखौल कर रहे हैं। वे इस चीज़ को तब रीयलाइज़ करेंगे जब चीन उनको खत्म कर देगा, पूंजीपतियों को खत्म करके वह दम लेगा। गरीब अपनी एक दिन की मजदूरी दे रहा है, अपना खून दे रहा है। हमें चाहिये कि हम सभी गरीब, किसान, मजदूर और पूंजीपतियों समेत सरकार की धन से भी मदद करें। हमें चाहिये कि हम एक रस्सी में बंध जायें। एक बूढ़ा बाप जब मरने लगा तो उसने एक रस्सी फेंकी और अपने बेटों से कहा कि इसको तोड़ो। जब वे उसको नहीं तोड़ सके तो बाप ने कहा कि इसको ज़रा ढीला कर दिया जाए और जब उसको ढीला कर दिया गया तो वह बड़ी आसानी से टूट गई। हमें अपनी एकता को कमज़ोर नहीं होने देना है, ढीला नहीं होने देना है, तभी हम देश रक्षा कर सकेंगे। अगर यह कमज़ोर पड़ गई तो देश रक्षा नहीं हो सकेगी। आज हंसने का समय नहीं है, आंसू बहाने का समय नहीं है, तैयार होने का दिन है। आज देश कुर्बानी मांग रहा है और हमें समय रहते कुर्बानी देनी है। दिल्ली हमें बहुत प्यारी है। हम पर चंगेज़खां ने आक्रमण किया, तैमूरलंग ने किया लेकिन भारत इतना विशाल है कि वह सब को अपने में हज्म कर गया।

मैं कम्युनिस्टों से कहना चाहता हूं कि वह सच्चे दिल से देश रक्षा के काम में योगदान करें। हमें भाषा के झगड़े को खत्म करना होगा, पार्टीबाजी को खत्म करना होगा। यही वक्त की पुकार है। आपस के मतभेदों को भूल जाना चाहिये। एक दूसरे की नुक्ताचीनी नहीं करनी है। आज तो हमारे सामने यही नारा होना चाहिये :

आज हिमालय की चोटी से हमने फिर ललकारा है
दूर हटो ए दुनिया वालो, हिन्दुस्तान हमारा है।

आज यह नारा हमारे देश का बच्चा बच्चा लगा रहा है। पार्लियामेंट के मेम्बर नहीं, नन्हे नन्हे बच्चे जवान हमारे गांव गांव में इस बात को सुनाने के लिये डटे हुए हैं। आई० एन० ए० के पुराने कमाण्डर्स मौजूद हैं। मैं उनको इन्वायट करता हूं और उन जनरल्स से यह डिमाण्ड करता हूं कि आओ, आज देश की पुकार है, तुम गांवों गांवों में लोगों को ट्रेनिंग दो। आज अगर तुम मिलिटरी फ्रण्ट पर नहीं जा सकते क्योंकि तुम ६३ वर्ष के हो गये हो, तुम मोर्चों को नहीं सम्भाल सकते हो, तो हमारे नौजवानों को गांव गांव में ट्रेनिंग दो।

मैं अपनी सरकार से भी यह निवेदन करूंगा कि वह नेपाल के बार्डर पर सावधान रहें। आज अगर चीन हमारे नेफा पर हमला करता है, लद्दाख पर हमला करता है तो हम को भी सोचना चाहिये कि हम किस तरह से उन पर हमला कर सकते हैं। मैं तो कहता हूं कि हम को भी उन पर हमला करना चाहिये। राजनीति में कोई किसी का दोस्त नहीं होता है। मैं कहना चाहता हूं कि मेनन साहब और नेहरू जो दोनों ही रूस गए। रूस ने हमारे सामने में वीटो इस्तेमाल किया इस लिये उस के चक्कर में फंस गये। वे दोनों ही ईमानदार हैं, बेईमान नहीं हैं। आज जो लोग उन पर उंगली उठाते हैं उनको जानना चाहिये कि हमारे डिफेन्स मिनिस्टर और प्राइम मिनिस्टर दोनों ही की पालिसी ईमानदारी की थी क्योंकि हमको कोई खतरा दिखलाई नहीं देता था। लेकिन कभी कभी लोग पालिटिक्स में चूक भी जाया करते हैं। यहां पर "अश्वत्थामा हतो नरो वा कुंजरो वा" की पालिसी नहीं चलनी चाहिये। मैं प्रधान मन्त्री जी से कहना चाहता हूं कि वे ईमानदाराना ढंग से देश को सम्भालें, देश उनका साथ देने को तैयार है। मैं समझता हूं कि आज इसके कहने की जरूरत नहीं है कि देश तैयार है, पब्लिक तैयार है। गवर्नमेंट के लिये जरूरत है कि यह अपने ऐडमिनिस्ट्रेशन को ठीक करे, करप्शन को दूर करे। हमारे एक बुजुर्ग साथी ने मुझ से कहा था कि तुम जा रहे हो, प्राइम मिनिस्टर को एक सन्देश देना कि समय बड़ा सुन्दर है। जितने ब्लैक मार्केटिअर्स हैं, चोरबाजार करने वाले हैं, उनको पकड़ ले क्योंकि आज आर्डिनेन्स लगा हुआ है। इस आर्डिनेन्स के समय आप किसी को भी पकड़ सकते हैं। आज हमारा काम ३,००० जवानों से नहीं चल सकता है, इस के लिये ३ लाख आदमी चाहियें। आज अपने बार्डर पर हम को हर समय तैयार रहना चाहिये क्योंकि किसी भी समय हम पर अटैक हो सकता है। कल राजा महेन्द्र ने कहा है कि हम दो सांडों के बीच में बलि का बकरा नहीं बनना चाहते। इस भाषा को हमें समझना चाहिये।

मैं तो एक गरीब खानदान से आया हूं, गरीब का बच्चा हूं। उस कम्युनिटी से आया हूं जो हमेशा काम करके दूसरों को खिलाती है जो कि सफेदपोश हैं। हमने कमाया है और जो हंसते हैं हम पर उन लोगों ने मौज की है। मैं आज भी कहता हूं कि हम देश के नाम पर सब काम करेंगे और देश की रक्षा करेंगे।

अन्त में मैं उन शहीदों के नाम पर जिन्होंने देश के लिये अपनी जानें दी हैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

[श्री शिव नारायण]

†**वैदेशिक कार्य मंत्री के सभा-सचिव (डा० ऐटिंग)**: चीनियों के कब्जे से पहले मैं तवांग गया था। नेफा पर जो अतिक्रमण हुआ है इस का नेफा के लिए ही खतरा नहीं है, परन्तु सारे भारत को खतरा है। इसलिए सारे भारत में इतना जोश है। हम अमेरिका, ब्रिटेन तथा कनाडा के उन की सहायता के लिए आभारी हैं।

मैं सीमा पर लड़ रहे जवानों को बधाई देता हूं। जिन जवानों ने सीमा पर लड़ाई में अपना बलिदान दे दिया है मैं उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

मैं २० अक्तूबर को तवांग गया था। मैं सब सरकारी संस्थाएं और प्रसिद्ध तवांग मठ में गया। इस मठ में हिन्दु देवी देवताओं की हजारों मूर्तियां हैं जो कि उन्होंने मुझे दिखाईं। उन्होंने हजारों धार्मिक पुस्तकें सोने में लिखी गईं हस्तलिपियां दिखाईं। ये हस्तलिपियां २५०–३०० वर्ष पहले लिखी गई थीं।

तवांग के लोगों ने मेरे से प्रार्थना की कि प्रधान मंत्री को उन का उन के प्रति आदर प्रकट करूं। उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें चीनियों से लड़ने के लिए हथियार और बारूद दिए जाएं। वे लोग हमेशा हमारे साथ रहे हैं और हमारे साथ रहना चाहते हैं।

जब तवांग के लोगों को अचानक नगर को खाली करने के लिये कहा गया तो उन्होंने सब कुछ छोड़ कर ऐसा ही किया। वहां के लोग चिन्तित हैं और हमारी सहानुभूति उन्हें मिलनी चाहिए।

जब मैं २२ तारीख को वापस आ रहा था तो बड़े ज़ोर की बन्दूकों इत्यादि के चलने की आवाज़ आ रही थी। हमारे बहादुर जवान 'महात्मा गांधी की जय' 'जवाहर लाल नेहरू की जय' पुकार रहे थे। मेरे ऊपर इस का बहुत प्रभाव पड़ा। सीमान्त सड़क संगठन है जिस के सभापति प्रधान मंत्री जी हैं। नेफा बड़ा कठिन क्षेत्र है, लोग वहां बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। उन्होंने १४,००० फुट की ऊंचाई पर बहुत अच्छी सड़क बनाई है।

भारतीय वायु सेना के लोग बहुत अच्छा काम करते रहे हैं। रात को देर तक, रात दिन बिना सोए हुए वे रसद फैंकते रहे हैं।

मैं इस बात से सहमत हूं कि सभा के वर्तमान सत्र को कम अवधि का किया जाए ताकि संसद सदस्य अपने अपने निर्वाचन क्षेत्रों में जा कर देश की प्रतिरक्षा का कार्य कर सकें।

न केवल नेफा में अपितु अन्य सीमान्त क्षेत्रों में फौज इत्यादि ले जाने के लिए सड़कें बनाने का काम शीघ्र किया जाए तथा उन क्षेत्रों के हवाई अड्डों को समस्त ऋतुओं के लिए उपयोगी बनाया जाए।

मैं रेलवे मंत्री से प्रार्थना करता हूं कि जोनाई को पासीघाट को जोड़ने के काम को शीघ्र करें।

सतर्कता के काम को और अच्छा करना चाहिये।

पुराने समय से हम आसाम के लोगों के साथ रहे हैं। पता नहीं चीनी कैसे कहते हैं कि नेफा उन का है।

---

†मूल अंग्रेजी में

जब मैं तवांग से वापस आया तो पासीघाट में बहुत बड़ी बैठकें हो रही थीं। लोग दृढ़ निश्चय थे कि उन्हें हथियार दिए जाएं ताकि वे चीनियों को खदेड़ बाहर करें। वहां के लोगों को उस भूमि से परिचय है और गुरुला लड़ाई में वे बहुत अच्छे सिद्ध होंगे। हमारे लोग इस समय प्रधान मंत्री का पूर्णतया समर्थन करते हैं और वह चीनियों के साथ लड़ाई में आखिरी रक्त का बिन्दु भी बहाने के लिए त्यार हैं।

†**श्री शिवचरण गुप्त** (देहली सदर) : सभी दलों ने इस संकट में सरकार को समर्थन देने के लिए कहा है। आशा है कि सभी राजनैतिक दल सरकार के समर्थन को कार्यरूप में परिणत करेंगे। उन्हें सरकार विरुद्ध प्रचार भी नहीं करना चाहिए।

हमें भारत की कम्युनिस्ट पार्टी के उन सदस्यों की आलोचना करनी चाहिये जो उन की केन्द्रीय परिषद् के संकल्प से सहमत भी हैं। उन सदस्यों के विरुद्ध पार्टी को भी कार्यवाई करनी चाहिये। कोई भी व्यक्ति चाहे वह किसी भी राजनैतिक दल में रहो यदि वह देश के हितों के विरुद्ध काम करता है उसे सज़ा मिलनी चाहिए।

जो लोग युद्ध प्रयत्नों को कम करने की कोशिश करते हैं सरकार को उन के विरुद्ध कड़ी कार्यवाई करनी चाहिए।

हमारी तटस्थता की नीति ठीक नीति है। यह कोई भारत की नीति नहीं है। यह तो नीति देश के इतिहास में से पैदा हुई है। यह नीति ठीक रही है, ठीक है और ठीक रहेगी।

श्री तन सिंह (बाड़मेर): उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपका बहुत आभारी हूं कि लम्बी प्रतीक्षा करने के बाद आपने मुझे बोलने का अवसर तो दिया। इन दोनों प्रस्तावों पर तीन, चार रोज से जो बहस हो रही है वह मैं ने बहुत ध्यान से सुनी है। लेकिन मैं यह अवश्य कहूंगा कि बहुत से ऐसे भाषण हुए जिन्हें सुन कर मुझे निराशा हुई क्योंकि हम ने परिस्थितियों की गम्भीरता को जिस रूप में लेना चाहिए उस रुप में नहीं लिया। मैं सखेद निवेदन करूंगा कि मुझे ऐसा भास होता है, हो सकता है कि मैं गलती पर होऊं, लेकिन मुझे ऐसा आभास हुआ कि हम अभी तक अपने भाषणों में किसी दूरग.मी राजनीतिक हेतू की रक्षा के लिए प्रयत्न कर रहे हैं। मैं नहीं समझ सकता कि जब कोई आदमी कठिनाई में हो और यह बात राष्ट्र के लिए भी इसी रुप में लागू हो सकता है, यदि कोई आदमी पानी में डूब रहा हो उस समय किनारे पर कोई आदमी खड़ा होकर यदि केवल यही कहता रहे कि देखो मैं ने आज से चार वर्ष पहले कहा था कि तुम निश्चित रूप से डूबोगे और मैं ने तुम्हें निश्चित वार्निंग दी थी कि तुम बचोगे नहीं तो मेरा कहना यह है कि उस डूबने वाले शख्स को इस तरह के सरमंस और उपदेशों की जरूरत नहीं है उसे तो उस पानी से बाहर निकालने वाले हाथ की ज़रूरत है इसी तरह आज राष्ट्रीय संकट की घोड़ी में उपदेशों और आलोचनाओं की ज़रूरत नहीं है बल्कि उस हैलपिंग हैंड की ज़रूरत है जोकि पानी में डूबने वाले को बाहर निकालने के लिए चाहिये।

एक चीज़ मुझे और निवेदन करनी है और वह यह कि हमारे बहुत से भाषण जो होते हैं वे चीनियों के लिए लाभदायक सिद्ध होते हैं और उनका वह लोग ऐडवांटेज उठाते हैं। इसलिए हमें भाषण आदि देने में सतर्कता बर्तनी चाहिए कि हम उनके दौरान कोई ऐसी बात न कहें जो कि भारत के इंटरेस्ट के खिलाफ़ जाए और जिसका कि चीनी लोग फायदा उठायें।

---

†मूल अंग्रेजी में

[श्री तन सिंह]

नौन एलाइनमैंट की पालीसी के और श्री नेहरू के सम्बन्ध में भी सदस्यों ने बहुत कुछ कहा। लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि नौन एलाइनमेंट, नौन वायलेंस, और नौन कोआपरेशन की नीतियां जो कि हमने बहुत सुन रखी हैं और जानते हैं कि कौन सी उपयुक्त हैं, लेकिन आज में उन की सब की चर्चा बेकार है। जहां तक श्री नेहरू के व्यक्तित्व का सवाल उस के बारे में कोई दो राय हो ही नहीं सकती हैं। देश की जनता को उनके प्रति अगाढ़ श्रद्धा और विश्वास है। मेरा तो यहां तक कहना है कि यदि श्री नेहरू न हो कर दूसरा भी कोई नेता हो तो राष्ट्रीय संकट की इस घड़ी में हर एक देशवासी का कर्त्तव्य हो जाता है कि उसे पूर्ण समर्थन और सहयोग दे। आज राष्ट्र के सामने जो गम्भीर समस्या विद्यमान है मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह उस का सफलतापूर्वक सामना करने में समर्थ सिद्ध होगा।

इस के सिवाये जहां तक इस बात का निर्णय करने का प्रश्न है कि इस समय कौन सी नीति ठीक रहेगी और कौन सी ठीक नहीं रहेगी, मैं समझता हूं कि समय ही इस बात का निर्णय करता है। समय जिस बात को शिक्षा देता है, उस बात की शिक्षा कोई बहुत बड़ा साधु पुरुष या बहुत बड़ा ग्रन्थ भी नहीं दे सकता। जिस समय दिल्ली में "हिन्दी चीनी भाई भाई" का नारा लगाया जा रहा था, क्या उस समय किसी को यह साहस हो सकता था कि उस नारे के विरुद्ध आवाज उठा सके या कोई बात कह सके? यह तो समय ने बहुत सी बाते स्पष्ट कर दी हैं और समय ही अन्य ऐसी बहुत सी बातों को भी स्पष्ट करेगा।

जो लोग कहते हैं कि हम में ही देश-भक्ति की भावना है, मैं उन को कहना चाहता हूं कि देश-भक्ति और त्याग के लिए शब्दों की अपेक्षा कार्य की अधिक आवश्यकता है। हम ने क्या कहा है और क्या कहेंगे, इस का महत्व नहीं हैं। महत्व इस बात का है कि हम क्या कर रहे हैं और क्या करेंगे। यदि सत्तारूढ़ दल को इस बात में विश्वास है कि केवल उन का ही दृष्टिकोण ठीक है और केवल वही ठीक काम कर सकते हैं, तो मुझे खेद के साथ यह निवेदन करना पड़ेगा कि इस गम्भीर परिस्थिति में उन्हें इस पर फिर विचार करना चाहिए।

मेरा निवेदन है कि इस समय चाहे उन की नीति नान-एलाइनमेंट की हो और चाहे कोई दूसरी नीति हो, उन्हें विश्वास होना चाहिए कि उस नीति को कार्यान्वित करने में हम सब उनका साथ देंगे। यहां तक कि अगर वे नान-वायलेंस की नीति भी हमारे सामने रखें और कहें कि चीनियों का हृदय परिवर्तन करने के लिए हम को अनशन करना पड़ेगा, तो ऐसा करने के लिए हम और राष्ट्र के सारे व्यक्ति नेफा में सब से पहले जाने के लिए तैयार हैं। यदि इस के अलावा किसी दूसरी नीति का वह पालन करना चाहें, हैं, तो भी इस घड़ी में हम उन्हें पूरा सहयोग देंगे और उन के नेतृत्व की हर कीमत को चुकाने के लिए तत्पर रहेंगे। उन की नीति के जो भी परिणाम होंगे, युद्ध के बाद, शान्ति के समय, उन्हें भुगतने पड़ेंगे, परन्तु युद्ध के समय हमें उन के नेतृत्व की हर कीमत खुशी २ चुकाने के लिए तैयार हैं। आज राष्ट्र इस बात की मांग करता है, राष्ट्र को इस बात की आवश्यकता है कि हम सब भेदों को भुला कर, परस्पर एक हो कर राष्ट्र को मजबूत बनायें।

मुझे कोई सजेस्टियन नहीं देना है। मैं जानता हूं कि मैं बहुत कुछ सजेस्टियन्ज़ दे सकता हूं। उस के लिए अवसर है। मैं अपने सजेस्यिन्ज़ को किसी रूप में — लिखित रूप मे भी — भेज सकता हूं। इस सदन के निर्णयों के प्रति सम्पूर्ण श्रद्धा और विश्वास प्रकट करते हुए विनम्रतापूर्वक मैं निवेदन करूंगा कि इस बहसबाज़ी को अब समाप्त किया जाये और हमें अपने अपने क्षेत्रों में जाने का अवसर दिया जायं।

इस सदन में कम्यूनिस्ट पार्टी के बारे में बहुत कुछ कहा गया है। बहुत से लोग यह कहते हैं कि अमरीका से हमारे सम्बन्ध होने चाहियें। मेरी विनम्र मान्यता है कि यह तो संयोग की बात है कि चीन ने हमारी सीमा पर आक्रमण कर दिया। यह भी हो सकता था कि सीटो या नैटो का कोई पड़ौसी देश हम पर आक्रमण कर देता। तो उस समय अमरीका से प्रेरणा लेने वाले व्यक्ति क्या कहते? उस समय कम्यूनिस्ट भी यही बातें इन के लिए कह सकते थे। मेरा निवेदन है कि जो लोग सोचते हों कि चीन या अमरीका या कोई दूसरा राष्ट्र भारत की आत्मा को मजबूत बना सकता है, वे भ्रम में हैं। वास्तविक शक्ति तो हम में ही पैदा होगी। यदि कोई आदमी यह सोचता हो कि चीन भारत पर आक्रमण करके दिल्ली पर शासन कर सकता है, तो मैं कहूंगा कि यह एक असम्भव बात है। उस का कारण यह है कि शस्त्रों में वह ताकत नहीं है, उन की योग्यता में वह ताकत नहीं है, अपितु परतंत्रता के सामने सिर न झुकाने और सिर को ऊंचा उठाने की हमारे अन्दर कितनी ताकत है, यह बात देखने की है।

संकट की इस घड़ी में मैं सरकार को अपना पूर्ण समर्थन देता हूं और इस सम्बन्ध में कोई शर्त भी नहीं है। सिर्फ़ एक शर्त रखता हूं और वह यह है कि हमारा सम्मान नीचा नहीं होना चाहिये, हमारा राष्ट्रीय गौरव नीचा नहीं होना चाहिये, किसी के सामने हमारा सिर नीचा नहीं होना चाहिए। मैं निवेदन करूंगा कि अगर सत्तारूढ़ दल की नीतियों और कार्यों के बारे में कोई विरोध करना होगा, तो शान्ति के समय हम बहस करेंगे, उन को ललकारेंगे, उन को बुरा-भला कहेंगे, लेकिन कठिनाई के समय कोई दूसरा आदमी उनका सिर नीचा करे, और गन को लज्जित करे यह हम पसन्द नहीं करते। वे हमारे हैं, चाहे कैसे भी हों। परस्पर मत-भेद हो सकता है। हम उन को अपमानित कर सकते हैं, लेकिन कोई दूसरा उन को अपमानित करे, यह हम बर्दाश्त नहीं कर सकते। यही राष्ट्रीय भावना है।

इन चन्द शब्दों के साथ मैं पुन: प्रस्तावों का समर्थन करता हूं।

†**डा० क० ल० राव** (विजयवाड़ा) : चीन के पास जनशक्ति बहुत है। कृषि के मामले में वह हमारे से बहुत पीछे है। चीन जो अनाज पैदा करता है वह घटिया किस्म का है। कम मात्रा में होता है।

चीन ने विकास के लिए बहुत कम काम किये हैं। उन के इन्जीनियर हमारे इन्जीनियरों से कहीं कम योग्य हैं।

बिजली की शक्ति में भी वे हमारे से पीछे हैं। परिवहन के मामले में भी वे बहुत पीछे हैं। चीन में सड़कें बहुत घटिया हैं। चीन हमारे मुकाबले में बहुत गरीब है। आरम्भ में उन्होने जीत के लिए तैयारी अवश्य की हुई है। इस से भारत से नहीं उन के देश के अच्छा होने का पता तो चलता है।

भारत ने १९४७ से ही बहुत अच्छे काम किए हैं। किसी प्रकार की भी सैनिक प्रतिरक्षा बनाने की बुनियादी चीज़ों में हमने प्रगति की हुई है। हमारे यहां खाद्यान्न भी पहले से काफी पैदा होता है।

इन दो योजनाओं में हमें रूस तथा अन्य देशों के मुकाबले में बहुत ही कम समय मिला। परन्तु फिर भी हमने बहुत प्रगति की है। कहीं इधर उधर की कोई बात रह गयी हो तो दूसरी बात है। जो कुछ हमने किया इससे कोई बहुत बड़ी बात हम कभी नहीं कर सकते थे। पांच वर्ष

†मूल अंग्रेजी में

[डा० क० ल० राव]

पहिले सैनिक सामान इत्यादि बनाने की बात को ध्यान में ही नहीं थी। मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि यह कहना समय पर आधारित नहीं कि हमने प्रतिरक्षा इत्यादि की ओर ध्यान नहीं दिया। बात यह है कि विकास के क्रम पर विचार करते हुए हम विमानों जैसी महत्वपूर्ण सैनिक सामग्री का उत्पादन शुरू नहीं कर सकते थे।

हमें तीसरी योजना को शीघ्रति शीघ्र पूरा करने का प्रयास करना चाहिए ताकि हम उन चीजों का निर्माण कर सकें जिन की आज के युद्धकालीन हालात में बहुत जरूरत है। इंजीनियरिंग दृष्टिकोण से मैं यह सुझाव प्रस्तुत करना चाहता हूं कि प्रवीण टकनीकी विशेषज्ञों को विदेशों से बुलाया जाना चाहिए ताकि उनकी सहायता से सैनिक उपकरणों का निर्माण किया जा सके। इस आपातकालीन स्थिति में हमें अपने युद्ध पोतों को अपने प्रविधिज्ञों को प्रशिक्षित करने के लिए काम में लाना चाहिए, ताकि शस्त्रों के उत्पादन में हम आगे बढ़ सकें। हमें इस की वर्तमान परिस्थितियों में बहुत सख्त जरूरत है। इस मामले में बाहर से खरीदने और उधार लेने को हमें कुछ कम करना है। यह बड़ी महत्वपूर्ण बात है। हमारे देश भर में इस कार्य के लिए बहुत कारखाने अच्छा कार्य कर रहे हैं।

मैं तो यह भी सुझाव देना चाहता हूं कि हमें इंजीनियरों तथा वैज्ञानिकों की एक सामन्य प्रतिरक्षा विकास और गवेषणा परिषद् की स्थापना कर देनी चाहिए। और इस बात को देखना चाहिए कि कारखानों में जो काम हो रहा है उसका उचित समन्वय हो जाय। इसके अतिरिक्त कृषि फ्रेन्ट हैं। इस बारे में मेरा निवेदन है कि खाद्य उत्पादन को बढ़ाना चाहिए। इस दिशा में हमारे प्रयत्न बढ़ने चाहिएं। देश में जिस भूमि पर खेती नहीं हो रही, उसे खेती योग्य बना कर वहां खेती करनी चाहिए। किसानो को अधिक उत्पादन करने के लिए अधिक से अधिक प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। इस दिशा में यह भी उल्लेखनीय है कि सिंचाई की परियोजनाओं की ओर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए।

अन्त में मेरा कहना है कि आज की सब से अधिक आवश्यकता यह है कि हमें संगठित होकर बलिदान की भावना से काम करना चाहिये। यह तटस्थता और अतटस्थता की नीति की बातें करने का कोई लाभ नहीं। हमे देश की मित्रता का ध्यान रखना चाहिये। जो देश हमारे मित्र हैं उन से हम मैत्री कायम रखेंगे। पूरी शक्ति से हम इस बेशर्म चीन को अपनी धरती से बाहर निकालने के लिए दिन रात एक कर देंगे।

†**डा० गायतोंडे** (नामनिर्देशित—गोआ, दमन और दीव) : जो लोग आज देश की रक्षा के लिए लड़ रहे हैं उन्हें मैं अपनी श्रद्धा के फूल भेंट करता हूं। और जो संकल्प हमारे समक्ष है उसका पूर्ण रूप से समर्थन करता हूं। संकल्प को इस ढंग से प्रारूपित किया गया है कि किसी भी देश में इस का विरोध नहीं हो सकता। तटस्थता नीति के सम्बन्ध में कांग्रेस दल के माननीय सदस्यों ने जो कुछ कहा है वह काफी है। मेरा कहना है कि यह किसी दल अथवा व्यक्ति के बहस की बात नहीं है। इस के पीछे कुछ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि होती है। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि जो लोग आज इस नीति का विरोध करते हैं यदि उन्होंने सरकार सम्भाली होती तो वही नीति का अनुसरण करते जो आज हमारी सरकार कर रही है। मेरे मत में यह तटस्ता की नीति ही सर्वोत्तम नीति हैं।

तैयारी न करने की बात की गयी है। यह ऐतिहासिक तथ्य की बात है कि लोक तंत्रीय देश हमेशा ही इस दिशा में पीछे रहते हैं। 'पर्ल हारबर' के समय में अमेरिका तैयार नहीं था।

---

†मूल अंग्रेजी में

प्रथम विश्व-युद्ध के समय इंग्लैंड तैयार नहीं था, बल्कि द्वितीय विश्व युद्ध के समय भी इंग्लैंड तैयार नहीं था। अतः मेरा निवेदन यह है कि यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि समस्त प्रजातांन्त्रिक देश युद्ध के लिए तैयार नहीं होते। और जिस गैर तैयारी की हालत में हम हैं उसके सम्बन्ध में किसी जांच की आवश्यकता नहीं है।

इसी संदर्भ में मेरा यह भी कहना है कि आज की परिस्थिति के कारण भारत आयोजन को नहीं छोड़ सकता। हमें यह बात याद रखनी चाहिए कि अन्य देशों के समक्ष भी इस प्रकार की परिस्थितियां आई थीं, परन्तु उन्होंने अपनी योजनाओं को नहीं छोड़ा था। अतः हमें भी अपनी योजनाओं को छोड़ने की आवश्यकता नहीं। हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि इन योजनाओं के फलस्वरूप ही राष्ट्र आगे बढ़ेगा।

इसके साथ ही मैं इस बात पर जोर देना चाहता हूं कि हमें चीनी साम्यवाद की धारा पर विश्वास नहीं किया जा सकता। हमें अपना संगठन करना होगा। उत्पादन को प्रमापित करना होगा संस्थाओं की बहुसंख्या को घटाना होगा। स्थानीय उत्पादों की स्थानीय खपत द्वारा परिवहन पर बोझ हटाना होगा। भारत पर भी जन शक्ति को उचित रीति से प्रयोग में लाया जाना चाहिए। हमारे वैज्ञानिक जो इस समय विदेशों में हैं, उन्हें भी इस आपात कालीन स्थिति में बुला लिया जाना चाहिये।

प्रधान मंत्री जी के पत्र का उत्तर ४० देशों की ओर से प्राप्त हो चुका है। दूसरों को क्या हुआ है? बहुत से तो ऐसे हैं जिनकी हम ने स्वतंत्रता प्राप्ति में पूरी तरह सहायता की है। क्या हमारे कूटनीतिज्ञ कहीं असफल हो रहे हैं। हमें सभी देशों की मित्रता प्राप्त करने के उद्देश्य से वहां राजदूत भेजने चाहिए: आज हमारे सौभाग्य से हमारे पास ऐसा नेता है जिसने हमें स्वतंत्रता दिलाई है और आशा है कि वह इस युद्ध को भी जीतेगा।

†**श्री हिम्मतसिंह जी** (कच्छ): हमारी सीमाओं पर बर्बर चीन ने जो आक्रमण किया है, सारा संसार यह देखने की प्रतीक्षा में है कि हम क्या करते हैं। देश की सुरक्षा का प्रश्न है और स्थिति बड़ी गंभीर है। सारे विश्व और समस्त एशिया के स्वतंत्र देशों को खतरा पैदा हो गया है। यद्यपि मैं सदन में नया हूं परन्तु मैं अपने लोगों का प्रतिनिधित्व करने में पीछे नहीं रहूंगा। मेरे लोगों का यह मत है कि वर्तमान राष्ट्रीय सुरक्षा की व्यापक समस्या को देखते हुए हम सब को सभी प्रकार के दलीय विचारों को छोड़कर मातृभूमि की प्रतिरक्षा में एक हो जाना चाहिए। प्रश्न तटस्थता अथवा अतटस्थता की नीति का नहीं है, प्रत्युत यह है कि विश्व के साम्यवादी वेग को कैसे रोका जाय। उसे सुयोजित ढंग से फैलाने का प्रयत्न किया जा रहा है। इस के मुकाबले के लिए हमें शारीरिक तथा मानसिक दोनों तरह से तैयार करना है। केवल वीरता के शब्दों से काम चलने वाला नहीं है। बड़ी दृढ़ता से शत्रु का मुकाबला करना होगा, एक स्पष्ट नीति का निर्माण करना होगा।

चीन की धूर्तता के प्रति हम उदासीन रहे यह बहुत बड़ा राष्ट्रीय अपराध है जो हमने किया है। वह तो तैयारी करता रहा, तिब्बत तथा अन्य स्थानों पर सड़कें बनाता रहा परन्तु हम हाथ पर हाथ रखे बैठे रहे। मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि चीनियों से ८ सितम्बर, की लाइन के आधार पर समझौते की वार्ता का करना कमजोरी का चिन्ह है। यदि संगठित रूप से सरकार ने उचित कार्य-वाही की तो कोई सन्देह नहीं कि सरकार शत्र को निकाल फेंकेगी। सरकार को विरोधी दलों के सुझावों पर भी विचार करना चाहिये।

---

†मूल अंग्रेजी में

[श्री हिम्मत सिंह जी]

मेरा यह भी सुझाव है कि सरकार तथा प्रैस के बीच एक उचित सम्पर्क स्थापित होना चाहिए। राष्ट्रीय प्रतिरक्षा की दृष्टि से यह बहुत महत्वपूर्ण बात है। जिस से कई तरह की अफवाहों के फैलाने के कार्य को रोका जा सकता है। आज की परिस्थिति में चोर बाजारी तथा अन्य समाज विरोधी तत्वों का भी दमन किया जाना चाहिए।

†**श्री जोकीम आल्वा:** १५ अगस्त, १९४७ के बाद प्रथम बार हमारे देश पर इस प्रकार का भयंकर संकट आया है। इस संकट की स्थिति में हमें यह याद रखना चाहिए कि युद्ध को जीतने के लिये तीन चीजों की जरूरत होती है। साहस, नेतृत्व तथा सुदृढ़ सेना। युद्ध सोने चांदी से नहीं बलिदान की भावना से जीता जाता है। आज उसी तरह बलिदान देने की आवश्यकता है जिस तरह हमारे देश के लोगों ने गत १५० वर्षों में फांसी के तख्तों पर झूल कर दिये हैं। उन लोगों ने अपने नाम की कभी भी चिन्ता नहीं की।

हमें भारत की विशेष स्थिति को देखते हुए यह समझना चाहिए कि देश का नैतिक साहस बहुत ऊंचा है। मातृभूमि की रक्षा के लिये प्रत्येक व्यक्ति कोई भी त्याग करने को तैयार है। इस के साथ ही आज की स्थिति में न हम अपना नेतृत्व बदल सकते हैं और न अपनी तटस्थता की नीति का ही परित्याग कर सकते हैं यदि हम ने अपनी इस नीति को छोड़ने की भूल की तो इसका परिणाम यह होगा कि भारत दोनों गुटों के बीच रणक्षेत्र बन कर रह जायगा।

[**अध्यक्ष महोदय** पीठासीन हुए]

हमें अपने विमान बल को संगठित कर के सुसज्जित चीनियों का जोरदार सामना करना चाहिए। हम चीनियों से किसी भी प्रकार की बात चीत नहीं कर सकते क्योंकि उन्होंने हमारे साथ विश्वासघात किया है। मूल्य वृद्धि को भी रोका जाना चाहिए। हमारा प्रचार का काम प्राय: बहुत ढीला रहा है। हमें अपने प्रचार की व्यवस्था सुधारनी चाहिए। और जासूसी की भी पर्याप्त व्यवस्था करनी चाहिए। हमारी छात्राओं और छात्रों को चीनी भाषा भी अवश्य सीखनी चाहिए। इस अस्त्र का प्रयोग भी उनके विरुद्ध किया जा सकता है। दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों से हमें अपने सम्बन्ध सुदृढ़ करने चाहिए।

†**श्री ब्रजेश्वर प्रसाद** (गया): आज जिस स्थिति का निर्माण हुआ है उसे देखते हुए मेरा निवेदन यह है कि चीनियों ने हमारे क्षेत्र में तिब्बत को शिक्यान से मिलाने वाली जो सड़क बनाई है उसका अन्तर्राष्ट्रीयकरण कर दिया जाय।

मैं इस पक्ष में नहीं हूं कि चीन के साथ राजनीतिक सम्बन्ध तोड़ लिए जाएं। यदि ऐसा किया गया तो इस से पूर्ण रूप से युद्ध आरम्भ हो जायेगा। हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। हमें राजनीतिक सम्बन्ध तोड़ने की जिम्मेदारी चीन पर डालनी चाहिए। मेरे विचार में तो यह बात गलत है कि चीन से बिल-कुल बात चीत ही नहीं करनी चाहिए। इस बारे में हमें प्रधान मंत्री को अधिकार देना चाहिए कि वह जब भी चाहे इस बारे में बाचचीत कर लें। हमें इस बात को भूलना नहीं चाहिए कि हमारी विदेश नीति बड़ी सफल रही है। हमें किसी भी गुट में शामिल नहीं होना चाहिए और चीन से अच्छे सम्बन्ध रखने चाहिए।

†**श्री जयपाल सिंह** (रांची पश्चिम): सब से पहले मैं रेलवे कर्मचारियों को बधाई देना चाहता हूं जिन्होंने इस संकट के समय में १८ से २० घटे तक लगातार काम किया है। चाहे हम मानें

†मूल अंग्रेजी में

या न माने, यह पूरी जंग है। यातायात नियंत्रण की केन्द्रीय व्यवस्था करके रेलवे लाइनों की वाहन क्षमता बढ़ाई जा सकती है।

प्रधान मंत्री को इस बात पर विचार करना चाहिये कि युद्ध के कारण उन के साथियों पर जो जिम्मेदारी आन पड़ी है क्या वे उसको निभाने के योग्य हैं। क्या उन्होंने अपने आप को युद्ध के प्रयत्नों के योग्य बना लिया है अथवा वे अभी शान्तिकाल के हीं योग्य हैं? मुझे बहुत आश्चर्य हुआ है कि विभिन्न वक्ताओं ने कुछ दलों पर आक्षेप किया है। बहुत सा समय यह बताने पर लगाया गया है कि चीन साम्यवादी है, जिस ने हम पर आक्रमण किया है? यदि कोई गैर-साम्यवादी देश हम पर आक्रमण करता, तो क्या वह दूसरी बात होती? आक्रमण करने वाले देश का स्वरूप देखने का कोई अर्थ नहीं है।

चीन के आक्रमण से हमारे चाय उद्योग को बड़ा आघात पहुंच सकता है। हमें कोई ऐसी विध्वंसात्मक कार्यवाही नहीं करनी चाहिये जिस से चाय के उत्पादन को नुक्सान पहुंचे। क्योंकि हम जितनी अधिक चाय पैदा करें, उतनी विदेशी मुद्रा हमें अधिक मिलेगी। चाय बागान के मजबूर बधाई के पात्र हैं, जिन्होंने अपना काम नहीं छोड़ा।

१९५६ में देश में स्वचालित राइफलें बनाने का सुझाव दिया गया था। मैं जानना चाहूंगा कि इसे स्थगित क्यों कर दिया गया था।

मैं यह भी जानना चाहूंगा कि क्या हवाई हमले से बचने के लिये तैयारियां की गई हैं या नहीं।

मेरा अपना विचार है कि यदि इस समय राष्ट्रीय सरकार होती, तो अच्छा होता, ताकि दल-बन्दी की भावना बन्द हो जाती और हम एक होकर मुकाबला कर सकते।

†**श्री बालकृष्ण वासनिक** (गोंडिया) : प्रधान मंत्री ने दो दिन पहले घोषणा की थी कि रूस भारत को मिग विमान देने के वचन से फिरेगा नहीं और उन्हें भारत में बनाने के लिए एक कारखाना भी खोला जायेगा। जब हम रूस क एक मित्र के साथ युद्ध लड़ रहे हैं, रूस का इस तरह हमारी सहायता करना क्या हमारी तटस्थता की नीति की सफलता नहीं है? इस संकट के समय दो गुट हैं और दोनों हमारी मदद को आ रहे हैं। मैं समझ नहीं सका कि हमारे कुछ मित्र रूस के इरादों पर संदेह क्यों करते हैं।

प्रो० रंगा ने प्रधान मंत्री के नेतृत्व की आलोचना की है। मैं उन्हें बताना चाहता हूं कि इस समय प्रधान मंत्री ही एक ऐसे व्यक्ति हैं जिस पर सारा देश विश्वास कर सकता है। संकट के समय उन के नेतृत्व की आलोचना करना उचित नहीं है। उन के नेतृत्व में ही सारा देश संगठित हो सकता है।

प्रतिरक्षा के मामलों में जो गलतियां हुई हैं उनकी जांच के लिए आदेश देने में प्रधान मंत्री को विलम्ब नहीं करना चाहिये। ऐसा करने से सारा विवाद समाप्त हो जायेगा।

†**श्री गजराज सिंह राव** (गुड़गाव) : चाहे इसकी घोषणा की गई है या नहीं, वर्तमान लड़ाई एक युद्ध है,। इस लिए सारे देश को जवानों का समर्थन करना चाहिए। हम सब को अपने कार्यों से साबित कर देना चाहिये कि हम सब सिपाही हैं और लड़ने के लिए तैयार हैं।

---

†मूल अंग्रेजी में

[श्री गजराज सिंह राव]

इस समय हमें अमेरिका, ब्रिटेन, , फ्रांस, और अन्य राष्ट्रों का, जिन्होंने बिना शर्त के हमारी सहायता की है, आभारी होना चाहिये। हमारे पास आधुनिक हथियारों की कमी है।

हमारे होम गार्ड, एन० सी० सी० और अन्य संगठनों को केवल नाममात्र नहीं बनाये रखना चाहिये। उन्हें वास्तविक प्रशिक्षण दिया जाना चाहिये ।

यदि हम अपने सैनिकों की हर प्रकार से सहायता करें और उन्हें हर प्रकार की सुविधाओं दें, तो वे चीन की लड़ाई जीत लेंगे । हमें जवानों और उन के परिवारों की मदद करने के लिए मिल कर शक्ति लगा देनी चाहिये ।

संकल्प को सर्वसम्मति से पास किया जाना चाहिये ।

†**श्री देशपांडे** (नासिक) : मुझे कोई संदेह नहीं कि दृढ़ संकल्प के साथ राष्ट्र चीनियों को शीघ्र निकाल फेंकेगा, क्योंकि राष्ट्र आज हर प्रकार का बलिदान करने के लिये तैयार है ।

साम्यवादी दल ने जो संकल्प स्वीकार किया है उस से इस के बहुत से सदस्यों का मतभेद है। बम्बई में ऐसे आपत्तिजनक पर्चे जनता में बांटे गये जिन में लोगों को यह कहा गया है कि देश पर हमला नहीं हुआ है । परन्तु साम्यवादी दल ने इस बारे में कुछ नहीं किया । सीमान्त क्षेत्रों तथा बम्बई के औद्योगिक नगर में देश के अन्दर जो हजारों पंचमांगीय अपने कार्य कर रहे हैं, उन से सरकार को सावधान रहना चाहिये ।

मैं इस सुझाव को उचित समझता हूं कि केन्द्र तथा राज्यों में मंत्रिमंडलों में मंत्रियों की संख्या कम कर दी जाये। इस पर विचार किया जाना चाहिये ।

योजना मंत्री ने मूल्य को स्थिर रखने के लिए जो कार्यवाही की है, उस के लिए वे बधाई के पात्र हैं। उन्हें समाज विरोधी तत्वों के विरूद्ध और भी कड़ी कार्यवाही करनी चाहिये ।

देश भर में सैनिक प्रशिक्षण का बड़े पैमाने पर प्रबन्ध किया जाना चाहिये ।

†**श्री मोहन स्वरूप** (पीलीभीत) : अध्यक्ष महोदय, बहुत अरसे के बाद मुझे बोलने का अवसर दिया गया है, इस के लिये आप का बहुत धन्यबाद ।

आज देश के सामने भयंकर ख़तरा मौजूद है। वह ख़तरा इतना भयंकर है कि उस ने हमें "करो या मरो" के रास्ते पर डाल दिया है । खुशी की बात है कि ऐसे खतरे के मौके पर सारा देश एक हो गया है और ऐसा लगता है कि सारा देश एक आवाज़ से बोल रहा है । लेकिन मुझे भय है कि देश जितना तैयार है, सरकार उतनी तैयार नहीं है। वह पहले भी तैयार नहीं थी और जितनी तेज़ी से वह तैयार होनी चाहिये थी, वह तेज़ी नहीं आ रही है ।

आज देश का बच्चा बच्चा पूछना चाहता हू है कि , जिन २५०० जवानों ने अपने खून से हिमालय पहाड़ की चट्टानों पर अपनी बीरता की कहानियां लिखी हैं, उन की आत्मायें पूछना चाहती हैं कि जब लद्दाख में हमारे बारह हज़ार वर्गमील के इलाके पर कब्ज़ा कर लिया गया जब वहां चीन ने अपनी फ़ौजें डाल दीं, तो क्यों तैयारी नहीं की गई, क्यों इस हाउस को धोखे में रखा गया कि तैयारी मुक्कमल है और हम हर तरीके से दुश्मन का मुकाबला कर सकते हैं, यह बात क्यों छिपा कर

†मूल अंग्रेजी में

रखी गई, इस बात का पता क्यों नहीं लगाया गया कि चीन ने तिब्बत में चालीस, पैंतालीस डिविज़न रखे हुए हैं और वह पूरी तैयारी कर रहा है। मैं समझता हूं कि इन बातों का जवाब मिलना चाहिए। यह खुशी की बात है कि प्राइम मिनिस्टर ने राज्य सभा में इस तरह का एलान किया है कि वह इस की तहकीकात करायेंगे। लेकिन वह तहकीकात निष्पक्ष लोगों के द्वारा होनी चाहिए और उस के नतीजों के अनुसार कार्यवाही की जानी चाहिए।

जो हमला हमारे देश पर किया गया है कि, वह एक योजना के अन्तर्गत हुआ है। वह योजना यह है कि चाइना पूरे एशिया को कम्यूनाइज़ करना चाहता है। १९५४ में चीन ने एक किताब छापी थी, जिस का नाम है "आधुनिक चीन का संक्षिप्त इतिहास"। उस में यह नक्शा दिया गया है जिस में रूस के ताजकिस्तान और पामीर, तिब्बत, नेपाल, भूटान, सिक्किम, आसाम, बर्मा, इंडोनेशिया, पूरे कोरिया वगैरह को चीन में शामिल दिखाया गया है। कभी कभी चीन मंगोलियों की भी मांग करता है। वह रूस के अधिकृत क्षेत्र, साइबेरिया, की भी मांग करता है। इस की विस्तारवादी नीति है, जिस के तहत वह एक व्यापक योजना के अनुसार पूरे एशिया पर कब्जा करना चाहता है।

आज की यह स्थिति है कि चाइना का रवैया यह है कि जिस की लाठी उस की भैंस। चाइना कहता है कि या तो सुलाह कर लो, या जंग के लिए तैयार हो जाओ और वह हर तरह से हम पर हावी है। हम को रास्ता चुनना है कि क्या हम अमन और सुलाह चाहते हैं, या अपने सिद्धान्तों की कुर्बानी करना चाहते हैं। यह खुशी की बात है कि इस मुल्क ने यह तहैया कर लिया है कि वह अपने सिद्धान्तों को कुर्बान नहीं होने देगा, उस के लिए चाहे मरना ही क्यों न पड़े। आज सारा देश चाइना के हमले का मुकाबला करने के लिये तैयार है।

जहां तक नान-एलाइनमेंट पालिसी का ताल्लुक है, ठीक है, हम उस पालिसी को चाहते हैं और हम पंचशील के सिद्धान्तों को भी चाहते हैं, लेकिन आज जो जंग है, वह दो सिद्धान्तों के बीच में है —कम्यूनिज्म और डेमोक्रेसी के बीच में। इस लिए हम को उन लोगों, उन तत्वों, उन देशों से घनिष्ट सम्बन्ध रखने होंगे, जो कि डेमोक्रेटिक वे को मानते हैं, जो कि डेमोक्रेसी में विश्वास करते हैं। उन लोगों से हम को गहरे ताल्लुकात कायम करने होंगे।

हमें अफ़सोस है कि पड़ौसी देशों से हमारे सम्बन्ध अच्छे नहीं हैं। हम साउथ ईस्ट एशिया के छोटे छोटे देशों की अवहेलना करते रहे हैं। अभी साइप्रस के प्रैज़िडेंट, आर्चबिशप मैकेरियस, यहां आए, तो प्रधान मंत्री ने कहा कि साइप्रस एक छोटा सा ज़जीरा है और वह हमारी क्या मदद कर सकता है। इसी तरीके से साउथ ईस्ट एशिया के छोटे छोटे देशों के मुताल्लिक भी प्राइम मिनिस्टर और सरकार की नीति यह रही है कि ये छोटे देश हैं, ये हमारी क्या सहायता कर सकते हैं? उनकी हमेशा अवहेलना की गई है।

एक माननीय दसदस्य : नहीं, नहीं।

श्री मोहन स्वरूप : हमेशा ऐसा ही कहा गया है।

मैं कहना चाहता हूं कि अब समय आ गया है कि हमारी वैदेशिक नीति में यह परिवर्तन हो कि इन छोटे छोटे देशों में हम अपने प्रति मित्रता और दोस्ती की भावना पैदा करें, उनको यह अनुभव करायें कि हम सब एक हैं। साउथ ईस्ट एशिया के छोटे छोटे देशों को हिन्दुस्तान के मुताल्लिक आस्था है, लेकिन हमें दुख है कि हमारे पड़ौसी भी हम से नाराज़ हैं।

[श्री मोहन स्वरूप]

जहां तक पाकिस्तान का सम्बन्ध है, वह यह प्रापेगेंडा कर रहा है कि चीन के साथ भारत का कोई झगड़ा ही नहीं है, ख़ाली झड़प है । जो साहब उस का रेडियो सुनते हैं---मैं सुनता हूं---वे जानते होंगे कि पाकिस्तान यह कह रहा है कि जो हथियार अमरीका और दूसरे देशों से हिन्दुस्तान को दिये जा रहे हैं, वे पाकिस्तान के ख़िलाफ़ इस्तेमाल हो सकते हैं।

रूस की दोस्ती के मुताल्लिक बहुत चर्चा की जाती है । अभी रामलीला मैदाम में प्रधान मंत्री ने कहा कि हम को रूस से मिग विमान मिलने वाले हैं और रूस दिसम्बर तक अपना वादा पूरा कर देगा । मैं निवेदन करना चाहता हूं कि जो मुल्क चीन को अपना भाई और हम को अपना दोस्त समझता है, वह कैसे हमारी मदद करेगा । २४ अक्तूबर तक तो रूस चीन के हमले के बारे में ख़ामोश रहा और फिर उस ने चीन की समझौते की शर्तों का समर्थन किया । उस ने चीन का पक्ष लिया और कहा कि वे शर्तें मुनासिब हैं और उन के आधार पर बात-चीत की जा सकती है । आज जो क्राइसिस हमारे सामने है, उसका सामना करने के लिये हम पूरे तरीके से तैयार हों । जयपाल सिंह जी ने कहा है कि एयर रेड हो सकते हैं । यह जरूरी नहीं है कि खाली नेफा में और लद्दाख में ही जंगहो, वहीं पर छुटपुट हमले हों । हवाई हमले भी हो सकते हैं और बड़े पैमाने पर जंग छिड़ सकती है । चीन के पास कहा जाता है कि दुनिया की सब से बड़ी फौज है और उसकी संख्या करोड़ों में बताई जाती है । जब वह हमला करने पर अमादा है, जब उसकी नीति विस्तारवादी है, तो वह बड़े पैमाने पर भी लड़ाई छेड़ सकता है और एक बड़ी से बड़ी कलेमेटी हमारे सामने आ सकती है । एयर-रेड प्रिकाशंज़ के जो तरीके हैं वे कम से कम बड़े बड़े शहरों में और इंडिस्ट्रियल टाउंज में तो लोगों को समझाये ही जाने चाहियें, वहां पर तो बरते ही जाने चाहियें । जो बड़े बड़े शहर हैं, और जहां पर जंग हो रही है, जो हमारे बेसिस हैं, जो सरहदी इलाके हैं, उन में एयर रेड शैल्टर्ज़ भी होने चाहिये । अगर कभी एयर रेड हो गया और इस तरह की सूरत पैदा हो गई तो मुझे डर है कि घबराहट की बजह से भगदड़ मच जाएगी और स्थिति को सम्भालना मुश्किल हो जाएगा । इस झगड़े को छोटा न समझ कर पूरी तैयारी हमारी तरफ से की जानी चाहिये ।

आज हथियार भी देश में बनने चाहियें । हम दूसरों पर ही आश्रित नहीं रह सकते हैं । हो सकता है कि जो मित्र देश, अमरीका और इंग्लैन्ड आज हम को हथियार दे रहे हैं, अगर कल वर्ल्ड वार हो जाए तो हमें हथियार देना बन्द कर दें । यह थोड़ा सा समय चार पांच महीने का हमारे पास है, मार्च अप्रैल तक का समय है । उस के बाद बरफ पिघलनी शुरू हो जाएगी और रास्ते खुल जायेंगे । उस वक्त शख्त हमले होने की आशा की जा सकती है । अगर न हो तो भगवान की इच्छा है । लेकिन खयाल यह है कि बड़े पैमाने पर हमले होंगे । इसलिए हमको इन चार पांच महीनों में मुकम्मिल तौर पर तैयारी करनी चाहिये ।

हथियार भी हमें यहां पर बनाने चाहिये । हथियार बनाने की कुछ फैक्ट्रियों को मैं ने देखा है । मैं उनकी ज्यादा डिटेल में नहीं जाना चाहता और न यह मुनासिब है । लेकिन इनका प्रोडकशन बढ़ना चाहिये । पब्लिक सैक्टर में भी कुछ कारखाने खुलने चाहियें । शैल्ज़ और कारतूस बनाने का काम यहां हो सकता है । फिलिंग यानी एक्सप्लोसिव मैटीरियल इत्यादि आर्डनेंस फैक्ट्रीज में बन सकता है । खाली खोल तो बन ही सकते हैं । हथियारों के पुर्जे भी यहां बनने चाहियें । आटोमैटिक वैपंज़ के पुर्जे प्राइवेट सैक्टर में बन सकते हैं । आज लड़ाई आटोमैटिक वैपंज़ या राइफल्ज़ से ही नहीं लड़ी जा सकती है । आज लड़ाई का मतलब है, ए से एटोमीकिल, बी से बैक्टीरियोलोजिकल और सी से कैमिकल । इन सब की हमें आवश्यकता है । आज की लड़ाई बहुत खतरनाक है । टैंकों आदि से ही नहीं लड़ी जा सकती है ।

हमको गद्दारों से और जो सैबोटाज करते हैं, उनसे भी खबरदार रहना होगा । जब कभी खतरा होता है तो दो बातों से होता है, गद्दारों से और हमारी आपस की जो फूट है, उससे । हमारी एकता छिन्न भिन्न नहीं होनी चाहिये ।

हमें सीक्रेसी को भी कायम रखना चाहिये । कलकत्ता में आर्म्स आते हैं तो रेडियो से एनाउन्स कर दिया जाता है, अखबारों में आ जाता है और समय भी बता दिया जाता है कि फलां समय पर हवाई जहाज़ अमरीका से हथियार लेकर आ रहे हैं । वाशिंगटन रेडियो से भी इसका एनाउन्समेंट हो जाता कि पचास लाख डालर के हथियार हमने भेज दिये हैं । इस तरह की चीज़ पर रोक लगनी चाहिये । हमारा जो प्रोग्राम है तैयारी का वह भी सीक्रेट रहना चाहिये । हमारा जो कोड है, वह भी सुरक्षित रहना चाहिये, वह भी अच्छी तरह से होना चाहिये ।

अन्त में मैं इतना ही कहना चाहता हूं :—

खाते हैं सौगन्ध धरा की, लगा धूलि माथे पर आज ।
अन्तिम बूंद रक्त की देकर हम रक्खेंगे मां की लाज ।
बांध कफन सिर पर हम चले मनाने आज मरण त्यौहार ।
अन्तिम विजय हमारी होगी, निश्चित है दुश्मन की हार ।

श्री भक्त दर्शन (गढ़वाल) : अध्यक्ष महोदय, मैं दो विशेष कारणों से इस वाद-विवाद में अपने कुछ विचार रखने की धृष्टता कर रहा हूं । पहली बात यह है कि मेरे निर्वाचन क्षेत्र की सीमा सीधे तिब्बत यानी चीन से मिलती है । बड़ाहोती जिसका जिक्र यहां पर कई बार आया है और जिसका झगड़ा १९५४ से चल रहा है वह मेरे निर्वाचन क्षेत्र की अन्तिम सीमा पर स्थित है । दूसरे श्री बद्रीनाथ का अखिल भारतीय महत्व का मन्दिर मेरे निर्वाचन क्षेत्र में है । जहां से कि तिब्बत की सीमा केवल २४ मील ही रह जाती है । दूसरा कारण यह है कि मेरे निर्वाचन क्षेत्र से पिछले दो विश्व महायुद्धों में किसी एक जिले के मुकाबले में सब से अधिक सैनिकों ने भाग लिया था । आज भी देश के प्रत्येक मोर्चे पर चाहे वह नेफा का हो या लद्दाख का हो या कोई और हो, मेरे निर्वाचन क्षेत्र के सैनिक अन्य सैनिकों के साथ कंधे से कंधा भिड़ा कर बड़ी धीरता के साथ अपने पराक्रम का प्रदर्शन कर रहे हैं ।

इससे पहले कि मैं कुछ अपने विचार आपके सामने रखूं, मैं उन शहीदों के प्रति जिन्होंने बड़ी बहादुरी के साथ वीर गति प्राप्त की है, अपनी श्रद्धांजलि के पुष्प अर्पित करता हूं ।

१९५२ में जब मैं इस सदन में निर्वाचित होकर आया और मुझे पहली बार इस सदन में अपने विचार प्रकट करने का अवसर मिला तो मैंने उस समय भी इस सदन का ध्यान और शासन का ध्यान उत्तरी सीमा से आने वाले खतरे की ओर दिलाया था और उसके बाद अपनी कमज़ोर आवाज़ के होते हुए भी मैं लगातार इस बात की ओर सदन का ध्यान आकर्षित करता रहा हूं । लेकिन जब मैंने पहली पहली बार इस समस्या को छेड़ा था तो कई लोगों ने मज़ाक उड़ाया था और कुछ लोगों ने इसको हंसी समझा था । मैं खुशी तो नहीं कह सकता हूं लेकिन इतना अवश्य कह सकता हूं कि परिस्थितियों ने साबित कर दिया है कि मेरी तथा मेरे जैसे विचार रखने वालों की चेतावनी कारगर सिद्ध हुई है और चीनी आक्रमण ने सारे देश की जनता की आंखें खोल दी हैं और मुझे इस बात का सन्तोष है कि.....

श्री यशपाल सिंह (कैराना): औचित्य प्रश्न के हेतु सरकार की ओर से कोई मंत्री उपस्थित नहीं है ।

†**एक माननीय सदस्य** : श्री थामस मौजूद हैं ।

†**अध्यक्ष महोदय** : यह काफी नहीं है । सरकार के और प्रतिनिधि होने चाहियें ।

श्री भक्त दर्शन : मैं निवेदन कर रहा था कि मैं इस सदन के उन सदस्यों में से हूं जो पिछले दस वर्षों से लगातार इस सदन का तथा शासन का ध्यान इस समस्या की ओर आकर्षित करते रहे हैं । यह बड़े सन्तोष की बात है कि हमारे शासन के जो सूत्रधार हैं वे पहले से अब बहुत सतर्क हो गए हैं और मुझे विश्वास है कि अब ऐसी परिस्थिति नहीं आने वाली है जैसी आ चुकी है और देश को इसका मुकबला करने के लिये पूरी तरह से तैयार किया जा रहा है । लेकिन मुझे यह कहते हुए खेद होता है कि अभी भी हमारे देश में कुछ ऐसे विचार रखने वाले लोग हैं जो चीनी आक्रमणकी भयंकरता को पूरी तरह से अनुभव नहीं कर रहे हैं । बहुत से लोगों का यह ख्याल है कि यह केवल सीमा का झगड़ा है, कुछ मील तक आगे बढ़ कर वे लोग आगे नहीं बढ़ेंगे, और वहीं रुक जायेंगे । लेकिन ऐसी बात नहीं है । हम लोग रोज़ समाचारों में पढ़ रहे हैं, और रेडियो में सुन रहे हैं कि चुशूल के ऊपर आक्रमण हुआ है, दौलत बेग ओल्दी के ऊपर आक्रमण हुआ है । ये दोनों स्थान चीन के १९५६ और १९६० के नक्शों के बाहर हैं और भारतीय सीमा के अन्दर हैं । इसलिये यह कहना कि केवल सीमा के लिये लड़ाई हो रही है, उचित नहीं है । पेकिंग रेडियो तो अब खुले तौर पर से कहने लग गया है कि जिस तरह से उन्होंने तिब्बत को स्वाधीन कराया है, उसी तरह से वे धीरे धीरे भारत को भी स्वाधीन कराना चाहते हैं, यानी कि यहां हम गुलाम हैं और हमें स्वाधीन कराने का बीड़ा उन्होंने उठाया है ।

अध्यक्ष महोदय, चीन की जो वर्तमान सरकार है, मेरी नज़र में वह साम्यवाद और फासिस्टवाद का एक अद्भुत सममिश्रण है । एक ऐसा सममिश्रण है जिसको हम कह सकते हैं कि करेला तो कड़वा था ही लेकिन उस पर भी नीम का रस और चढ़ा दिया गया । यह नाज़ीवाद का एशियाई संस्करण है । इसलिये इस देश के अन्दर अपनी सीमा की रक्षा के लिये जो लड़ाई हम लड़ रहे हैं वह अकेले हम अपने ही लिये नहीं लड़ रहे हैं बल्कि सारे एशिया और संसार के प्रजातन्त्र और उसकी स्वाधीनता के लिये हम यह लड़ाई लड़ रहे हैं । इसलिये हम इसकी गम्भीरता को कम कर के न आंकें । अगर कुछ लोगों के दिमाग के एक कोने में कहीं पर भी यह शक हो कि लड़ाई जल्दी खत्म हो जाएगी तो उनको अपना यह भ्रम मिटा देना चाहिये ।

नेफा और लद्दाख के बारे में तो सारे देश की जनता और रेडियो में काफी प्रचार हो रहा है । और यह ठीक भी है । वहां बड़े पैमाने पर लड़ाई हो रही है । लेकिन मैं शासन का ध्यान बीच का जो सैक्टर है, जो सेंट्रल सैक्टर है, उसकी ओर आकर्षित करना चाहता हूं । आपको मालम है कि बड़ाहोती का झगड़ा सबसे पहले सन् १९५४ में प्रारम्भ हुआ । जो सर्वप्रथम व्हाइट पेपर या श्वेत पत्र इस सदन में रखा गया था उसके अनुसार जो सबसे पहला जो प्रोटेस्ट लेटर हम को मिला है वह भी बड़ाहोती के बारे में था । उस समय बड़ाहोती से ग्यारह मील आगे दामजन तक चीन के कुछ सैनिक आते देखे गये थे । उसके सिवा पिथौरागढ़ और चमोली की सीमायें जहां मिलती हैं, सांगचा मल्ला और लापथ्थल के बारे में कई बार चीन से पत्रों का आदान प्रदान हुआ है । उस से आगे उत्तर काशी में नीलंग दर्रे के अन्दर भी चीनी सैनिक कई बार आगे बढ़े हैं । उससे आगे किन्नौर (हिमाचल प्रदेश) के सिपकी दर्रे में भी कई बार चीनी सैनिकों को देखा गया है । इसलिये मैं शासन से अनुरोध करना चाहता हूं कि हम लोगों को सेंट्रल सेक्टर यानी उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश और बीच में पंजाब की सीमाओं के साथ की चीनी सीमा है उसके बारे में पूरी सतर्कता बरतनी चाहिये और वहां पर पूरी तैयारी होनी चाहिये ।

---

†मूल अंग्रेजी में

बहुत से मित्रों ने इस बात की मांग की है कि जनता को सैनिक शिक्षा दी जाये । जैसा कि हमारे बहुत से लोग अनुभव करते हैं, और मैं भी समझता हूं, देश की करोड़ों जनता को एक साथ सामरिक शिक्षा देना अभी सम्भव नहीं होगा । इसलिये ज्यादा उपयुक्त यह होगा कि कम से कम सीमावर्ती क्षेत्रों के लोगों को सैनिक शिक्षा दी जाये । मैं जानता हूं कि सारे देश के अन्दर लाखों भूतपूर्व सैनिक हैं । वे सभी इलाकों में हैं लेकिन अकेले मेरे निर्वाचन क्षेत्र में लगभग ४० हजार भूतपूर्व सनिक हैं जिन्हें ट्रेण्ड करने की जरूरत ही नहीं है । अभी पिछले दिनों मुझे उनके एक सम्मेलन में जाने का अवसर मिला था । वहां पर उन लोगों ने शपथ ली थी और घोषणा की थी कि अगर उन्हें हथियार दे दिये जायें तो वे आज कल के नौजवानों से भी अधिक उत्साह, बहादुरी और संगठन के साथ दुश्मनों का सामना कर सकते हैं । अतः मैं चाहता हूं कि उनको फौरन ले लिया जाये और उनके द्वारा लोगों को कुछ ट्रेनिंग देने की व्यवस्था की जाय ।

भूतपूर्व सैनिकों के सम्बन्ध में विचार करते समय, मेरी राय में आजाद हिन्द फौज के सैनिकों का एक विशेष स्थान है । इसका एक विशेष कारण यह है कि उनके अन्दर पहले से ही देशभक्ति की मात्रा और लोगों से अधिक रही ।दूसरी बात यह है कि वर्मा के जंगलों में गुरिला लड़ाई लड़ने का भी पूरा अनुभव उन्हें है । मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई जब मैंने अखबारों में पढ़ा कि हमारे आजाद हिन्द फौज के जनरल्स ने अपनी सेवायें अर्पित की हैं । उनके सैनिकों ने भी इस बारे में प्रधान मन्त्री जी को पत्र लिखे हैं । मगर इस सम्बन्ध में जो सबसे बड़ा असन्तोष आजाद हिन्द फौज के सिपाहियों में है । वह यह है कि जिस जमाने में वे जापान की कैद में माने गये थे, उस जमाने का हिसाब उन को आज तक नहीं मिला है । मैं यहां पर उन सदस्यों में से रहा हूं जो बार बार इस बारे में प्रस्ताव लाते रहे हैं और जोर डालते रहे हैं । परन्तु हमेशा प्रतिरक्षा मन्त्रालय की ओर से इंकार किया गया है । मैं समझता हूं कि यह अवसर है कि जब अरबों रुपये देश में बरस रहे हैं तो तब दो ढाई करोड़ रुपयों के कारण उनके साथ अन्याय न किया जाय । मैं आशा करता हूं कि उनके रुपयों का भुगतान शीघ्र किया जायेगा ताकि वे और अधिक उत्साह से लड़ सकें ।

एक बात मैं यह कहना चाहता हूं कि यहां नेशनल कैडट कोर के बारे में बहुत जिक्र हुआ, और मुझे सूचना मिली है, और मैं बहुत प्रसन्न हूं कि शासन की ओर से यूनिवर्सिटियों और कालेजों में सभी छात्रों के लिये नेशनल कैडेट कोर को आरम्भ करने की व्यवस्था की जा रही है । लेकिन मैं जानना चाहता हूं कि छोटे विद्यार्थियों के लिये क्या हो रहा है। मैं सुझाव देना चाहता हूं कि जनरल भोंसले द्वारा जो राष्ट्रीय अनुशासन योजना, कई स्कूलों में चलाई जा रही है, उसे कम से कम सब स्कूलों के निचले दर्जों में शुरू किया जाय ताकि वहीं से छात्र कदम मिला कर चलना सीखें और उनके अन्दर अनुशासन हो, उन लोगों में देश प्रेम की भावना हो और अपने आदर्शों पर न्यौछावर होने की उनके अन्दर नई जाग्रति और प्रेरणा पैदा हो ।अतः जनरल भोंसले ने जो योजना चलाई है उसका परीक्षण सब जूनियर हाई स्कूलों में अनिवार्य कर दिया जाय ।

अन्त में मैं एक ही बात कह कर अपना वक्तव्य समाप्त करता हूं । हमारे प्रधान मन्त्री जी ने जिन शब्दों में यहां पर ये प्रस्ताव रक्खे हैं, जिन के सम्बन्ध में हम बहस कर रहे हैं, उन में हमारे देश की आत्मा की वाणी की उसकी हुंकार सुनाई पड़ती है । इन दोनों प्रस्तावों में चीन के नृशंस और बर्बर आक्रमण का उचित उत्तर मिलता है । हमने शान्ति के मार्गों पर चलने का संकल्प किया था लेकिन देश की स्वतन्त्रता और अक्षुण्णता और उसकी अखण्डता सर्वोपरि है । इसलिये आज हाथों में अस्त्र, हृदय में उत्साह और आत्मा में अटल विश्वास लेकर सारा हिन्दुस्तान एक अंगड़ाई लेकर उठ खड़ा हुआ है और उसकी हुंकार संसार के कोने कोने में व्याप्त हो गई है, और मुझे पूरा विश्वास है

[श्री भक्त दर्शन]

जिस का कि भारत का इतिहास भी साक्षी है कि जब कभी हमारे देश पर हमला हुआ, हमने उसका सफलता के साथ मुकाबला किया, इसी प्रकार हम इस युद्ध में भी अवश्य सफल होंगे ।

†**श्री मनेन** (दार्जिलिंग): मैं प्रधान मन्त्री द्वारा प्रस्तुत किये गये संकल्प का हार्दिक स्वागत करता हूं । मैं देश के लोगों से अपील करता हूं कि वे प्रधान मन्त्री को पूरा पूरा सहयोग दें और तब तक दम न लें जब तक एक एक चीनी को भारत की भूमि से निकाल नहीं दिया जाता ।

मुझे हर्ष है कि प्रधान मन्त्री ने कह दिया है कि हमारी तैयारी न होने के कारणों की जांच की जायेगी । यदि हमारे पास पर्याप्त मात्रा में हथियार होते और हम पूरी तरह तैयार होते, तो हमारे इतने जवान हताहत न होते और चीनी इतने आगे न बढ़ पाते ।

देश को वर्तमान हमले से बचाने और भविष्य में ऐसे हमलों को रोकने के लिये आवश्यक है कि हम अपनी सीमाओं को मजबूत बनायें ।

हमें पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले नेपाली, भुटिया, लेपचा, गारो, खासी आदि लोगों की एक बटेलियन बनाने के लिये कार्यवाही करनी चाहिये और उन्हें आधुनिक स्वचालित हथियारों को चलाने की शिक्षा देनी चाहिये । हमें उस सेना में खम्पा लोगों के भी कुछ डिवीजन रखने चाहियें । हमें खम्पा लोगों को लैस करना चाहिये, जिससे कि वे हमारे सांझे दुश्मन के विरुद्ध गोरिला युद्ध कर सकें । इनके अलावा जो गोरखे भूतपूर्व सैनिक हैं, उनमें से १० हजार को यदि कहा जाये, तो वे लड़ने के लिये तैयार हो सकते हैं ।

साम्यवादी दल के कुछ नेता चाय बागानों में और दार्जिलिंग के दूरवर्ती गांव में यह दूषित प्रचार कर रहे हैं कि यदि वे दल की टिकट खरीदें, तो साम्यवादी सैनिक उन्हें खाना और कपड़ा देंगे । इस प्रचार को रोका जाना चाहिये ।

हमें अमेरिका और ब्रिटेन का उन की सामयिक सहायता के लिये आभारी होना चाहिये ।

श्री च० का० भट्टाचार्य (रायगंज) : यदि हम समस्त सीमान्त की स्थिति का विश्लेषण करें, तो भारत चारों ओर से घिरा हुआ लगेगा । पाकिस्तान हमारा शत्रु है, नेपाल हम से नाराज़ है और नागालैण्ड की स्थिति अनिश्चित है ।

[उपाध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए]

आसाम में पाकिस्तानियों के घुस आने से स्थिति पहले ही गम्भीर थी और अब उसे चीनी हमले का खतरा पड़ गया है । ऐसी स्थिति में आसाम पिस रहा है ?

एक चीनी जासूस ब्रह्मपुत्र नदी के नये पुल के कई फोटो लेते हुए पकड़ा गया तथापि उसे जमानत पर छोड़ दिया गया । और छूटते ही वह फरार हो गया । मैं गृह मंत्री का ध्यान इन बातों की ओर दिलाना चाहता हूं । मेरे विचार में वहां के गृह विभाग का काम राज्यपाल को संभालना चाहिये ।

आकाशवाणी को जनता को प्रोत्साहन एवं उस में शक्ति फूंकने के काम में लाया जाना चाहिये । विवेकानन्द , तिलक , गांधी, जी, रविन्द्र नाथ टैगोर तथा नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की स्वतंत्रता के लिये राष्ट्र से अधिकतम त्याग की अपीलें प्रसारित की जानी चाहियें ।

---

†मूल अंग्रेजी में

कलकत्ता से आसाम तक का एक मात्र मार्ग अधूरा पड़ा हुआ है और काम में नहीं लाया जाता है। उस सड़क में आठ पुलियां न बनने के कारण यह २० मील का मार्ग अधूरा पड़ा हुआ है। इस संकट के समय में आयोगों को यह मार्ग अविलम्ब पूरा करने के लिये धन प्राप्त करना चाहिये ।

भारत में साम्यवादी पत्र लड़ाई का जो चित्र पेश कर रहे हैं वह सही नहीं है अब मैं ८ सितम्बर के आधार पर दो शब्द कहना चाहता हूं । संकल्प में हम ने कहा है कि हम चीनी आक्रांताओं को भारत भूमि से बाहर खदेड़ने की प्रतिज्ञा करते हैं। हमें यह ध्यान रखना चाहिये कि भारत के सीमांत का इलाका दिनों दिन कम होता जा रहा है। पहिली कमी १९४७ में हुई तदुपरांत यह कमी होती रही । इस संबंध में मैं स्वर्गीय मोतीलाल नेहरु के शब्द दुहराना चाहता हूं जिन्होंने विदेशी सत्ता को देश से बाहर खदेड़ने के बारे में कहा था कि हमें अंतिम समय तक लड़ते रहना चाहिये।

श्री हेम राज (कांगड़ा) : अध्यक्ष महोदय, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे जो कि सीमावर्ती इलाके से आता हूं, सदन में इस गम्भीर विषय पर बोलने का अवसर दिया। यह उचित है कि सीमावर्ती क्षेत्रों के अन्य माननीय सदस्यों को भी बोलने का मौका दिया जा रहा है ।

यह ठीक है कि जहां तक आपके उसूलों का ताल्लुक है बहुत ज़बर्दस्त बहस इस बात पर हो चुकी है । मैं तो आपकी सेवा में कुछ वाकयात और सुझाव ही लाना चाहता हूं ताकि यह जो लड़ाई है उस में हम कामयाब हो सकें और अपने नेता को यह विश्वास दिला सकें कि हम महज़ बातें करने वाले नहीं हैं बल्कि जो उनका हुक्म होगा उस हुक्म को हम बजा लायेंगे। जैसे कि किसी वक्त चर्चिल ने अपने वहां पार्लियामेंट में कहा था कि हमें भी वही चीज़ कहनी चाहिए । चर्चिल से यह पूछा गया कि लड़ाई शुरू हो गई है, आप यहां के प्राइम मिनिस्टर बन गये हैं, आप हमें क्या औफर करते हैं तो उस ने कहा था कि मैं आप को कोई चीज औफर नहीं कर सकता। उन्होंने उत्तर दिया आपका लहू और पसीना बहेगा वही औफर कर सकता हूं। यही काम आपको दिन रात करना होगा। आज हमारे सामने भी यही बात है कि अगर हिन्दुस्तानी नेशन ने बढ़ना है और जो चीनी दरिन्दे हैं उनको अपने मुल्क से बाहर निकालना है तो उन के सामने सिर्फ एक ही बात रह जाती है कि हम इस मुल्क को क्या डिफेंस में, क्या एग्रीक्लचरल फील्ड में और क्या औद्योगिक क्षेत्र में सब क्षेत्रों में उन्नत करें। ट्रांस्पोर्ट को हम बेहतर बनायें ।

मुझे यह देख कर बड़ी खुशी हुई कि हमारी आर्डिनेंस फेक्ट्रीज ने मौजूदा संकट को देखते हुए २४ घंटे काम करने का अज्म लिया है । इस के अलावा उन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में अपना एक एक दिन का वेतन उसी वक्त दे दिया जिस वक्त कि उन के सामने यह सवाल पैदा हुआ कि चीन के आक्रमण को रोकने के लिए एक राष्ट्रीय सुरक्षा कोष कायम किया जाय ।

मैंने अपने सीमावर्ती इलाकों में भ्रमण किया है और मैं गवर्नमेंट के सामने हमेशा यह बात रखता रहा हूं कि सीमावर्ती क्षेत्रों में नेशनल मिलिशिया तत्काल कायम कर देनी चाहिएं।

माननीय सदस्यों, श्री पनायन और श्री भक्त दर्शन, ने सीमावर्ती क्षेत्रों का जिक्र किया है। इस सम्बन्ध में मैं एक और प्रोपोज़ल रखना चाहता हूं और वह यह है कि जहां इन क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की एक नेशनल मिलीशिया बनाई जाये, वहां उन को गुरिल्ला वारफ़ेयर की ट्रेनिंग भी दी जाये। उसकी खास बजह यह है कि उनको हर जगह का पता होता है, हर दर्रे और पहाड़ का पता होता है और इस लिए वे लोग बाहर के लोगों की निस्बत फ़ौज के लिए बहुत ज्याद मुफ़ीद साबित हो सकते हैं।

[श्री हेम राज]

मैं ऐसे इलाके से आता हूं, जो कि मिलिटरी इलाका है। मेरा मतलब डुग्गर देश से है, जो जम्मू से लेकर हिमाचल प्रदेश तक फैला हुआ है और जहां के निवासी, डोगरा लोगों का हमेशा से सिपाहियाना काम रहा है। आज भी उस क्षेत्र में एक्स-सर्विस मैन की तादाद पचास, साठ हज़ार से कम नहीं है। मैं समझता हूं कि सीमावर्ती ज़िलों में बसने वाले, हिमालय की कन्दराओं में रहनेवाले उन डोगरा लोगों को पूरी तरह से हथियारबन्द करना चाहिए। मुझे आशा है कि पेश्तर इस के कि दिल्ली पर हमला हो, आक्रमणकारी दिल्ली में आ सकें, डोगरा देश के निवासी, कांगड़ा, गढ़वाल और जम्मू के लोग, अपने को कुर्बान कर देंगे और आक्रमणकारियों के पैर वहां पर जमने नहीं देंगे।

हमारी फ़ैक्ट्रीज़ आज तक कनवेन्शनल वैपन्ज़ बनाती रही हैं। आज ज़माना बदल चुका है और अब उन फ़ैक्ट्रीज़ में आटोमैटिक वैपन्ज़ बनाने की ज़रूरत है, ताकि हमारे जवान अच्छी तरह से दुश्मन का मुकाबला कर सकें। आज कहा जाता है कि चीन अपने तीस करोड़ आदमी मरवाने के लिए तैयार है। मैं समझता हूं कि अगर हमारे एक करोड़ सिपाही भी हों, तो हमारा एक एक सिपाही पांच, पांच, दस दस चीनियों को ख़त्म करने के लिए तैयार होगा, बशर्ते कि उसके पास मौजूदा किस्म के हथियार हों। अगर माड्रन वैपन्ज़ की व्यवस्था की जायगी, तो लाज़िमी तौर पर वे इलाके महफूज़ रहेंगे।

आप ने देखा है कि उन इलाकों में हवाई जहाज़ों से खुराक फेंकते हैं। वहां दरख़्त नहीं हैं। आज ही मिनिस्टर आफ़ माइन्ज़ एंड फ्युअल ने अपील की है कि पैट्रोल और करोसीन आयल को बड़ी सावधानी से इस्तेमाल किया जाये और कम से कम ख़र्च किया जाये। इसकी वजह साफ़ है। इन इलाकों में कहीं पर लकड़ी या कोयला नहीं है और अगर कोई चीज़ जलाने के काम आ सकती है, तो वह मिट्टी का तेल या पैट्रोल है। उससे ही वहां पर खाना बनाया जा सकता है। मैं अर्ज़ करना चाहता हूं कि लम्बी लम्बी बातें करने से कुछ नहीं होगा, बल्कि यह तो अमल से ज़ाहिर होगा कि हम देश की रक्षा के लिये क्या क़ुर्बानी कर सकते हैं। माननीय सदस्यों से मैं यह अर्ज़ करना चाहता हूं कि हम लोगों का यह कर्तव्य हो जाता है कि इस गम्भीर परिस्थिति को दृष्टि में रखते हुए ही हम हर जगह और हर क्षेत्र में काम करें।

उन इलाकों में लोग नागाजौ या वकव्हीट के सत्तू और चाय पर गुज़ारा करते हैं। हमारी फ़ौज़ों की सप्लाई लाइन्ज़ को कायम रखने के लिए वहां पर सड़कें नहीं हैं। जैसा कि दूसरे माननीय सदस्यों ने भी कहा है, उन इलाकों में सड़कें बनाने की बहुत ज़रूरत है। मैं ने भी अर्ज़ किया था कि शिपकीला पास से कौरक के इलाके में, जहां १९५८ में चीनियों ने अन्दर आने की कोशिश की थी, कोई सड़कें नहीं हैं। आप ने हाल ही में स्पिती का वाकया सुना होगा। वह इलाका अब बन्द पड़ा है। जब वहां पर बर्फ गिरती है, तो वहां पर इस हाल से भी ऊंची बर्फ की दीवारें खड़ी हो जाती हैं और इस तरह वहां आने जाने का कोई रास्ता नहीं रहता है। इसलिए यह ज़रूरी है कि शिपकिला पास के कौरक तक सड़क बना कर वह इलाका नैशनल हाईवे नम्बर एक के साथ जोड़ दिया जाये, ताकि अगर किसी वक्त हम को भी मौका मिले, तो हम उस रास्ते से जा कर अपने इलाके को कवर कर सकें और अपनी फौजों को बचा सकें। वहां पर ट्रांस्पोर्ट का मुकम्मल इन्तजाम फ़ौरी तौर पर होना चाहिए।

जहां तक खुराक का सम्बन्ध है, सैकंड वर्ल्ड वार में साइंटिस्ट्स ने बड़ा काम किया था। आज हमारे जवानों को चौदह या सोलह हज़ार फ़ीट की बुलन्दी पर लड़ना पड़ रहा है। अगर वे वहां पर बिल्कुल लदे हुए हों, तो वे कैसे अपना काम कर सकते हैं? इसलिए हमारे साइंटिस्ट्स को फौज के लिए कोई न कोई कान्सेन्ट्रेटिड फूड तैयार करना चाहिये, ताकि हमारे जवानों को ज्यादा बोझ न उठाना पड़े और वे बुलन्दी पर आसानी से काम कर सकें।

आज की लड़ाई में एयर फ़ोर्स का महत्व बहुत ज्यादा है। आज यू० के० और यू० एस० ए० ने बिला-मांगें हम को मदद दी है।। उन्होंने इस लिहाज़ से हम को इमदाद दी है कि हिन्दुस्तान दुनिया की सब से बड़ी डेमोक्रेसी है और अगर वह फ़ेल हो जाती है, तो फिर दुनिया में हर जगह टोटेलिटेरियन राज्य कायम हो जायगा और उसकी आइडियालोजी सब तरफ़ छा जायगी। वे हमारी मदद पर आए हैं; इस के लिये हम उन के मशकूर हैं। मैं समझता हूं कि हम को उन से मदद लेने में कोई गुरेज़ नहीं करना चाहिये। अगर वे दिल खोल कर मदद दे सकते हैं, तो हम को उन से ज्यादा से ज्यादा हवाई जहाज ले लेने चाहिए, ताकि हमारी एयर फ़ोर्स चीन का मुकाबला कर सके और हम उन के दांत खट्टे कर सकें।

कल एक भाई ने जो कि पंजाब से आते हैं, डोगरों के मुताल्लिक कुछ ज़िक्र किया, हालांकि उस का सम्बन्ध कोई नहीं था। इस बारे में मैं सिर्फ़ यह अर्ज़ करना चाहता हूं कि डोगरों ने कभी भी अपने लिये कोई क्रेडिट नहीं मांगा है। वे समझते हैं कि यह देश उनका है और वे देश के लिये कुर्बानी देंगे। इसलिए मैं समझता हूं कि इस तरह का आरोप लगाना उचित नहीं है। वह कोई मौके की बात भी नहीं थी। इस के अलावा इस किस्म की बातें देश के इन्टेग्रेशन के लिए खतरनाक हैं।

आज हमारे ईस्टर्न और वैस्टर्न फ्रंट पर जो बहुत से डोगरा भाई और हमारे दूसरे जवान लड़ रहे हैं, मैं उन सब को, जिन्होंने अपनी कुर्बानी दी है और जो आइन्दा भी कुर्बानी देने के लिये तयार हैं, अपनी श्रद्धांजलि पेश करता हूं।

इन शब्दों के साथ मैं आप का आभारी हूं कि आप ने मुझे बोलने का मौका दिया। मैं आशा करता हूं कि जो तजबीजें मैं ने रखी हैं, उन पर विचार किया जायगा।

श्री भानु प्रकाश सिंह (राजगढ़) : उपाध्यक्ष महोदय, चीन ने हमारी मातृभूमि के ऊपर हमला कर के हमारी स्वतंत्रता और सार्वभौमिकता को चुनौती दी है, हमारे देश की अखंडता को उस ने खंडित किया है। हमारे शासन और इस पार्लियामेंट का यह कर्तव्य है, उन का यह धर्म हो जाता है कि अंग्रेज़ों से स्वाधीनता के समय हमें जितनी भूमि मिली थी, उस से एक इंच भी कम भूमि हम आने वाली पीढ़ियों को न दें।

अध्यक्ष महोदय, इस हमले के संदर्भ में चीन की जो प्रकृति रही है, उसका अध्ययन करना बहुत आवश्यक है। चीन पिछले चालीस पचास वर्ष से युद्ध के वातावरण में रह रहा है। वहां एक बच्चा पैदा होता है, तो युद्ध के वातावरण में, पाल पोस कर बड़ा किया जाता है, तो युद्ध के वातावरण में, और मरता है तो युद्ध के वातावरण में। सारा देश एक युद्ध के वातावरण में पला हुआ है। और उसका दिमाग युद्ध की ही बात सोचता है। युद्ध उसके लिए कोई नई चीज़ नहीं है। हमारे लिये यह बड़ी गम्भीर समस्या है क्योंकि हम अपने आपको शान्ति और अहिंसा का पुजारी समझते हैं। इस-लिए युद्ध हमारे लिए एक भयानक वस्तु है।

[श्री भानु प्रकाश सिंह]

लेकिन हमें इस हमले से दो बड़े धक्के लगे हैं। एक धक्का लगा है हमारी तृतीय पंचवर्षीय योजना को और दूसरा धक्का लगा है विदेशी नीति, पंचशील और हमारे शांति के प्रयत्नों को।

जहां तक विदेश नीति का, पंचशील का और चीन के साथ दौत्य सम्बन्धों का प्रश्न है, मेरा खयाल है कि हमें इस से सम्बन्धित सभी बातों को प्रधान मंत्री जी के विवेक पर ही छोड़ देना चाहिये। हमें इस के झमेले में अधिक नहीं पड़ना चाहिए। आने वाली पीढ़ी और इतिहास इस बात को बतायेगा कि प्रधान मंत्री अपने विवेक में सफल रहे हैं या असफल।

इस हमले से हमें दो सबक मिलते हैं। एक सबक तो यह मिलता है कि कम्युनिस्ट देशों से मित्रता बढ़ाने में हमें बड़ी सावधानी बरतनी चाहिये। हमारे देश के प्रधान मंत्री ने चीन के लिए क्या नहीं किया, उसको अन्तर्राष्ट्रीय स्थान दिलाने में उन्होंने क्या कोई कोर कसर उठा रक्खी ? उस के बावजूद भी जो सलूक चीन ने हमारे साथ किया, उसको कभी नहीं भुलाया जा सकता है। दूसरी बात यह है कि संसार के कम्युनिस्ट शक्ति के पुजारी हैं। इसका उदाहरण क्यूबा है, इसका उदाहरण फार्मूसा है और इसका उदाहरण भारतीय जनता का दबाव है जिस ने यहां की कम्युनिस्ट पार्टी को एक प्रस्ताव पास करने के लिए बाध्य किया है। मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि मेरे कम्युनिस्ट मित्रों ने ऐसा किया है। इसके लिये मैं उनकी सराहना करता हूं, फिर चाहे यह प्रस्ताव उन्होंने दबाव के कारण ही क्यों न पास किया हो। लेकिन इस के लिये हमें पृष्ठ भूमि में जाने की बड़ी आवश्यकता है और यह देखने की आवश्यकता है कि कम्युनिस्टों की राष्ट्रीय एकता क्या है ? संसार के अन्दर कम्युनिस्ट पार्टी एक अन्तर्राष्ट्रीय वाद को मानती है। उसके सामने राष्ट्रीयता कोई चीज़ नहीं है। राष्ट्रीयता केवल वहां पर आती है जहां पर दो देशों के अन्दर कम्युनिस्ट सरकार हो। लेकिन जहां एक देश में कम्युनिस्ट सरकार और दूसरे देश में गैर-कम्युनिस्ट सरकार हो तो वहां पर राष्ट्रीय-राष्ट्रीयता का प्रश्न नहीं उठता, वहां कम्युनिस्त पार्टी गैर-कम्युनिस्ट देश में इसलिये तैयार की जाती है कि जिस समय कम्युनिस्ट देश उस देश पर आक्रमण करे तो वहां की कम्युनिस्ट पार्टी मुक्ति गान गवाये, अपने भाइयों को सहायता प्रदान करे। इस संदर्भ में हमारी कम्युनिस्ट पार्टी ने जो प्रस्ताव पास किया है, वह बहुत महत्वपूर्ण है। ऐसा कर के उन्होंने संसार के अन्दर एक उदाहरण पेश किया है। यह पहली मर्तबा है कि हिन्दुस्तान की कम्युनिस्ट पार्टी उस अन्तर्राष्ट्रीयवाद से अलग हुई है और हम को उस का समर्थन करना चाहिये।

लेकिन मैं अपने कम्युनिस्ट मित्रों से कहना चाहता हूं कि देश की जनता आप से बातें नहीं, ठोस कार्य चाहती है, आप को कार्य कर के बताना होगा कि आप देश भक्त हैं, आज का वातावरण, आज की स्थिति ऐसी है कि देश को इस बात का ठोस कार्य से सबूत देना होगा कि आप देशभक्त हैं। साथ ही साथ जो गैर कम्युनिस्ट हैं, उन से भी देश इस बात का सबूत मांगेगा कि व गद्दार हैं, इस बात को अच्छी तरह से समझ लेना चाहिये। नेहरू-स्तुति से काम चलने वाला नहीं है। यदि कम्युनिस्ट भाई सोचते हैं कि नेहरू जी की वन्दना कर के, उनकी तारीफ कर के देश के कलेजे में छुरा घोंप देंगे तो वे अपने इस काम में सफल नहीं होंगे। यह उन को अच्छी तरह से समझना चाहिये कि नेहरू और भारत आज की स्थिति में कोई दो अलग चीजें नहीं हैं। इसलिये मेरा उन से निवेदन है कि जो व्यक्ति उन की पार्टी के अन्दर चीन के समर्थक हैं, उन को पार्टी से एक दम अलग कर दें। राष्ट्रीय रक्षा कोष में अधिक से अधिक धन दें। उनको यह भी चाहिये कि वे जवानों के लिये खून दें। सब से महत्वपूर्ण बात यह है कि वे फौज में भरती हों और चीनियों से आगे जा कर लड़ें। प्रधान मंत्री चाहें तो एक उन के लिये अलग से स्पेशल यूनिट बना सकते हैं। उन को आगे कर दिया जाय ताकि इस बात का सबत तो मिल सके कि वे देशभक्त हैं . . .

एक माननीय सदस्य : चीनियों के साथ मिल जायेंगे ।

श्री भानु प्रकाश सिंह : मैं नहीं मानता हूं कि राष्ट्र-द्रोह का टीका केवल कम्युनिस्टों पर ही लगाया जा सकता है । अगर हम ऐसा करते हैं तो एक बड़ी गलतफहमी में रहते हैं । गैर-कम्युनिस्टों में भी बहुत से तत्व ऐसे हैं जोकि समय आने पर देश के साथ गद्दारी कर सकते हैं और उन से भी हम को सावधान रहना है ।

मूल्यों का भी सवाल है । खाद्य स्थिति का सवाल है । देश में भ्रामक प्रचार करने का सवाल है । इस प्रकार के और भी तत्व हैं जिन पर सरकार को उतनी ही कड़ी नजर रखनी चाहिये, जितनी कि कम्युनिस्टों पर रखनी चाहिये ।

श्री कमल नयन बजाज : (वर्धा) कोई ऐसी जमात नहीं है जो गद्दारी कर सके ।

श्री भानु प्रकाश सिंह : जमात और तत्व में फर्क है । मैं तत्व की बात कर रहा हूं । पड़ोसी पाकिस्तान का भी बड़ा सवाल उठता है । उस की तरफ से हमें बड़ी सतर्कता बरतनी चाहिये । मुझे हैरानी होती है कि पाकिस्तान और चीन इस समय मित्र हो गये हैं और उस को बहुत सा समर्थन भी दुनिया के अन्दर मिल रहे हैं इस बात के लिये । यह बड़ा अजीब है । जिस काश्मीर को पाकिस्तान अपना समझता है, उस काश्मीर पर जब चीन ने हमला किया तो किस प्रकार से वह चीन से मैत्री रख सकता है । यह तो केवल इस बात का सबूत है और दुनिया को यह बात जाहिर करता है कि काश्मीर भारत का अंग है पाकिस्तान का अंग नहीं । यदि काश्मीर को पाकिस्तान अपना अंग समझता तो चीन ने जो लद्दाख पर हमला किया है, उस को देखते हुए चीन को अपना दुश्मन समझता और हमारे साथ मित्रता का हाथ आगे बढ़ाता । ऐसा न होने पर भी मैं आप के जरिये प्रधान मंत्री जी से निवेदन करूंगा कि यदि वह उचित समझें तो इस समय पाकिस्तान के अय्यूब खां, नेपाल, भूटान और सिक्किम के नरेशों को बहुत जल्द यहां पर बुलायें, उनके साथ मीटिंग करें, उन के साथ हृदय से वार्ता करें और जहां तक सम्भव हो उन से सम्बन्ध अच्छे बनाने की कोशिश करें । हमारी इस कोशिश के बावजूद भी पाकिस्तान की समझ में हमारी बात न आये तो कोई बात नहीं है, हम ४५ करोड़ व्यक्ति किसी भी बात पर आज पीछे हटने को तैयार नहीं होंगे ।

रूस का जो वर्तमान रुख रहा है, उससे भारतीय जनता को बड़ी निराशा हुई है । रूस को यह नहीं भूलना चाहिये कि आज उस का भाई चीन जो मित्र भारत के ऊपर इस प्रकार से हमला कर बैठा है, वह कल नहीं तो परसों, एक न एक दिन वह भी आयगा जबकि वह रूस पर भी हमला कर सकता है । जो दानव हम पर आक्रमण करने के लिये हिमालय जैसे पर्वतों को पार कर सकता है, उस के लिये पेंसिल की रेखा पार करना कितना मुश्किल होगा, यह रूस के लोगों को समझना चाहिये । अभी भी रूसी जनता के लिये, रूसी सरकार के लिये अवसर है कि वह भारत की जनता का विश्वास प्राप्त करे । इस के लिये रूस सरकार को चाहिये कि जो शस्त्र चैकोस्लोवाकिया से रेल द्वारा चीन को जा रहे हैं, उन को न जाने दे और दूसरी बात यह है कि हमें पूर्ण मदद दे । यदि प्रधान मंत्री उचित समझें तो इस के लिये वह किसी भी अपने विश्वास-पात्र व्यक्ति को मास्को भेज कर वहां के प्रधान मंत्री से बातचीत कर सकते हैं और उन का विश्वास प्राप्त कर सकते हैं । वह उचित समझें तो रूस को यह भी विश्वास दिला सकते हैं कि हम रूसी हथियार चीन के विरुद्ध काम में नहीं लायेंगे और इस प्रकार का आश्वासन अमरीका को भी दिया जा सकता है कि साथ ही साथ अमरीकी हथियार पाकिस्तान के विरुद्ध काम में नहीं लायेंगे ।

[श्री भानु प्रकाश सिंह]

इस के अलावा मैं आप के जरिये प्रधान मंत्री से यह भी निवेदन करना चाहूंगा कि हमारे कुछ कामनवेल्थ के मित्र हैं, उदाहरणस्वरूप कनाडा और आस्ट्रेलिया, जो इस समय चीन को खाद्यान्न भेज रहे हैं। इस समय चीन में खाद्यान्नों की कमी है। चाहे इंगलैंड के प्रधान मंत्री मैकमिलन के द्वारा हो या किसी अन्य मित्र के द्वारा हो, इन मित्रों पर प्रभाव डाल कर इस खाद्य सामग्री को वहां जाने से रोकने का प्रयत्न किया जाय।

अन्त में मैं अपना भाषण समाप्त करने से पहले अपने देश के उन व्यक्तियों से अनुरोध करना चाहता हूं जिन की आर्थिक स्थिति स्वतंत्रता से पहले कमजोर थी। आज बारह या पन्द्रह सालों के अन्दर उन की आर्थिक स्थिति अच्छी हो गई है। जब भारत माता ने उन्हें हजारों, लाखों और करोड़ों रुपयों का धनी बना दिया है, और आज उसी भारत माता के ऊपर एक बड़ा भारी संकट आया हुआ है, तो मैं उन से अपील करूंगा कि वे मुक्त हस्त से भारत की लाज बचाने के लिये धन दें। मैं जानता हूं कि जब हम फिर से अपनी योजनायें शुरू करेंगे तो यह जो तत्व हैं, फिर से कमाने का अवसर प्राप्त कर ही लेंगे।

†**श्रीमती ज्योत्स्ना चन्दा** (कछार) : मैं इन दोनों संकल्पों का समर्थन करती हूं तथा उन जवानों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं जो देश की रक्षा करते हुए वीर गति को प्राप्त हुए हैं। म आपको यह बता देना चाहती हूं कि आसाम की जनता में अभी नैतिक बल काफी अधिक है। मुझे यह बताते हुए अत्यन्त खेद है कि पिछले ५ वर्षों में जबकि चीनी सीमान्त में सड़कें बना रहे थे और पूरी तैयारी कर रहे थे तो भी हम सोते रहे।

मैं नेफा के सम्बन्ध में कुछ सुझाव रखना चाहती हूं। क्योंकि मैं आसाम का प्रतिनिधित्व करती हूं। नेफा का प्रशासनिक केन्द्र शिलांग में है जो नेफा से बहुत दूर है अतः मैं यह चाहती हूं कि इसे शिलांग से हटा कर नेफा में स्थापित कर दिया जाये।

नेफा में चीनियों ने पुस्तिकायें और पर्चे बांटे हैं जिन से वहां की जनता में भ्रान्ति होने की सम्भावना है हमें उन का प्रतिवाद वहां की स्थानीय भाषाओं में प्रकाशित करना चाहिये।

उस क्षेत्र के लोगों को सैनिक ट्रेनिंग दी जानी चाहिये।

सरकार को इस बात का पूरा प्रयत्न करना चाहिये कि देश में सामान्य आवश्यकता की वस्तुओं की कीमतें न बढ़ने पावें।

आसाम तथा अन्य प्रदेशों के बीच संचार व्यवस्था में सुधार करने की अत्यन्त आवश्यकता हैं।

यदि हम विदेशी सैनिकों को अपनी ओर से लड़ने के लिये निमंत्रित करें तो भी इस से हमारी तटस्थता की नीति में कोई बाधा नहीं आयेगी। हमें सैनिक साज सामान के सम्बन्ध में आत्मनिर्भर होने की नीति का पालन करना चाहिये।

†**श्री कमल नयन बजाज** : मैं इन जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं जो वीर गति को प्राप्त हुए हैं। देश ने इस संकटकाल में जो उत्साह दिखाया है वह बहुत उत्साहजनक है।

हम ने देश की स्वतंत्रता के लिये पूंजीवादी साम्राज्यवाद का सामना किया अब हमें इस निर्दय साम्यवाद का सामना करना है। भारत पर चीन का हमला अकेले भारत पर ही हमला नहीं है यह समस्त स्वातंत्र्य प्रिय देशों पर हमला है अतः उन्हें संगठित रूप से कटिबद्ध हो कर इस का सामना करना चाहिये।

---

†मूल अंग्रेजी में

मैं तटस्थता की नीति से पूरी तरह सहमत हूं । हमें संकट को देख कर अपनी नीति में कोई परिवर्तन नहीं करना चाहिये । यह हर्ष का विषय है कि सारे लोक तंत्र देशों ने बिना किसी शर्त के हमें अधिक से अधिक सहायता देने का निश्चय किया है । मैं सरकार की इस नीति से सहमत हूं कि जिन व्यक्तियों पर देशद्रोह का संदेह था उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया है ।

लोगों से कहा जाना चाहिये कि वे आयात किये खाद्यान्नों का कम से कम उपयोग करें । आयात कम से कम कर दिये जाने चाहियें । आपातकाल में हमें आयात के खाद्यान्नों पर निर्भर नहीं होना चाहिये । आयात का खाद्यान्न संग्रह में रखा जाना चाहिये ।

जो कैदी कम से कम ५ वर्ष की सजा भोग चुके हैं उन सब को रिहा कर दिया जाये और उन्हें राष्ट्र की ओर से लड़ने के लिये कहा जाये ।

देश में जितनी भी मोटर गाड़ियां हैं उन के मालिकों को सूचित कर दिया जाये कि आवश्यकता पड़ने पर सरकार उन्हें ले सकती है । शिक्षा संस्थाओं में सैनिक शिक्षा दी जाये । अन्त में मैं केवल एक ही बात कहना चाहता हूं । स्वतंत्रता को बनाये रखने के लिये भले ही हमें अपनी आधी जनसंख्या की बलि देनी पड़े तो भी हमें पीछे नहीं हटना चाहिये तथापि हम जवानों के जीवन से खिलवाड़ नहीं कर सकते हैं । इस संबंध में आवश्यक अनुशासन रहना आवश्यक है ।

श्री कछवाय (देवास) : उपाध्यक्ष महोदय, इतने लम्बे समय के बाद आप ने मुझे जो बोलने का समय दिया उस के लिये मैं आप का बड़ा आभारी हूं ।

चीन के हमले से हमारे देश में जो नुकसान हुआ है वह हमारी लापरवाही के कारण है और पता नहीं यह नुकसान कितना भोगना पड़ेगा । मैं दो, चार बातें सदन के सामने और प्रधान मंत्री के ध्यान में लाना चाहता हूं । चीन ने जो हमारे देश पर हमला किया है ऐसी स्थिति में हमें चीन से राजनयिक सम्बन्ध तोड़ लेने चाहियें । आज सारे देश में जो एक खलबली मची हुई है और जो लोगों में उत्तेजना फैली हुई है और जो जागृति पैदा हुई है उस अवसर का आज शासन को लाभ उठाना चाहिये । आज देश का बच्चा बच्चा और किसान मजदूर उस अवसर की बाट जोह रहा है जब वह भारत की स्वाधीनता के रक्षा संग्राम पर अपना पार्ट अदा कर सके। हमारे देश का इतिहास बतलाता है कि जब जब युद्ध हुआ है तब तब हमारे देश में उन मजदूरों का उपयोग किया गया है और उन मजदूरों का बड़ा सफल योगदान युद्ध में रहा है । उन महायुद्धों के अंदर मजदूर ही एक ऐसा व्यक्ति है जो अपनी जान की बाज़ी लगा कर उस युद्ध में सफल होता है । मजदूर भारत माता की स्वाधीनता की रक्षा के हेतु अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार है ।

मैं कुछ बातों की ओर शासन का ध्यान दिलाना चाहता हूं । कम्युनिस्ट पार्टी ने जो प्रस्ताव पास किया है उसमें वे हमारे प्रधान मंत्री की तारीफ करते हैं, उन की वाहवाही करते हैं । इस सम्बन्ध में मैं प्रधान मंत्री का ध्यान भस्मासुर के किस्से की ओर दिलाना चाहता हूं । हमारे इतिहास में एक किस्सा है कि भस्मासुर ने भगवान शंकर को खुश करके ऐसा वरदान प्राप्त किया था और उस वरदान से वह शंकर भगवान पर ही हावी हो गया । आज भी वही चीज हो रही मालूम पड़ती है । हमारे कम्युनिस्ट भाई प्रधान मंत्री की तारीफ़ करते हैं । लेकिन प्रधान मंत्री को उन की चाल में फंसना नहीं चाहिए। आज सारी देश की जनता कम्युनिस्ट पार्टी के खिलाफ़ है । इसलिए उन्हें सावधान रहना चाहिए । हमारे प्रधान मंत्री ने उनके बारे में कोई आलोचना नहीं की है । उन्होंने अपने भाषणों में बताया है कि कम्युनिस्ट पार्टी बहुत अच्छी पार्टी है । इस लिए मैं फिर उन का ध्यान दिलाना चाहता हूं कि उन्हें इस सम्बन्ध

में सावधान रहना चाहिए । जितना ख़तरा हमारे देश को आज कम्युनिस्ट पार्टी से है, उतना और किसी से नहीं है । मैं आपको कुछ उदाहरण बताना चाहता हूं ।

अभी कम्यूनिस्टों की राष्ट्रीय परिषद् की बैठक हुई । उस में किन किन व्यक्तियों ने क्या क्या बयान दिये, क्या क्या विचार प्रकट किये, यह कम्युनिस्ट पार्टी ने नहीं बताया है । हमारा जासूस विभाग भी इतना सोता रहा कि उसने भी इसकी ख़बर नहीं दी । अगर उसने इस सम्बन्ध में आवश्यक और उचित कार्यवाही न की और उस बैठक की सारी बातों को जनता के सामने नहीं लाया गया, तो मैं समझता हूं कि जासूस विभाग के ऊपर जो ख़र्च किया जाता है, उसको हटा देना चाहिए । कम्यूनिस्ट पार्टी के जेनरल सक्रेटरी, श्री नम्बूदरीपाद, उस प्रस्ताव पर मतदान के समय तटस्थ रहे । उस बैठक में १७ आदमी अनुपस्थित थे और पांच व्यक्तियों ने उस प्रस्ताव पर अपना मत नहीं दिया । इसके अतिरिक्त तीस व्यक्ति ऐसे थे, जिन्होंने उस प्रस्ताव का विरोध किया ।

इस सम्बन्ध में मैं आपके सामने मध्य प्रदेश का उदाहरण भी देना चाहता हूं । कम्यूनिस्ट पार्टी के अध्यक्ष, श्री डांगे, १३ अक्तूबर, १९६२ को भोपाल गए थे । वहां भाषण करते हुए भारतीय लोगों के विरोध के सम्बन्ध में यह उत्तर उन्होंने दिया कि ऐसे विरोध को तो मैं भोजन में चटनी के समान समझता हूं । उन्होंने यह भी कहा कि हमारा शासन दुनिया के तीन हिस्सों में है । मैं निवेदन करना चाहता हूं कि दुनिया के जिन भागों में कम्युनिस्टों का शासन है, उनमें चीन भी शामिल है । यह कितने खेद और आश्चर्य की बात है कि कम्यूनिस्ट पार्टी के बड़े बड़े लीडर इस प्रकार की भाषा का प्रयोग करते हैं ।

दस दिन के बाद इन्दौर में नगर की ओर से चीनी हमले के विरोध में जलूस निकाला गया । उसमें बहुत से पोस्टर थे, जिन में कहा लिखा था, "कम्यूनिस्ट चीन मुर्दाबाद" । हमारे माननीय सदस्य, श्री होमी दाजी, अपने ग्रुप को ले कर वहां पर पहुंचे और उन्होंने उन पोस्टरों को फाड़ दिया । क्या इसका साफ़ मतलब यह नहीं है कि यहां पर तो कम्यूनिस्ट पार्टी के सदस्य सफ़ाई पेश करते हैं और बाहर सारे देश में वे राष्ट्र के हितों के विरुद्ध एक विद्रोह फैला रहे हैं ? आज सारे देश की जनता कम्यूनिस्ट पार्टी के विरुद्ध है । इस स्थिति में क्या सरकार इस बात पर विचार नहीं करती कि इस पार्टी पर प्रतिबन्ध लगा देना चाहिये ?

चीन के हमले के सम्बन्ध में विश्व के जिन चालीस देशों ने हमारा समर्थन किया है, हम उनकी तारीफ़ करते हैं । किन्तु कुछ कम्यूनिस्ट देश ऐसे हैं, जिन्होंने चीन का समर्थन किया है । क्या भारत की कम्यूनिस्ट पार्टी का यह कर्तव्य नहीं है कि विश्व की जिन कम्यूनिस्ट पार्टियों ने चीन का समर्थन किया है, वह उनके विरुद्ध अपना विरोध प्रकट करे । अगर उन्होंने देश-भक्ति निभानी है, तो उसका सीधा रास्ता यह है कि उन्हे अपने सिद्धातों में परिवर्तन करना चाहिए ।

[अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए]

कम्यूनिस्ट पार्टी को चू-एन-लाई का पुतला बना कर उसे चीनी दूतावास के सामने जलाना चाहिए और अपना झंडे का रंग भी बदल देना चाहिए । कम्यूनिस्ट पार्टी ने अपने जीवन में कभी भी "भारतमाता की जय" नहीं बोली है । उसको अपने नारे भी पलटने चाहिएं ।

†**श्री नरेन्द्र सिंह महीडा** (आनन्द) : मैं सभा का और अधिक समय नहीं लेना चाहता हूं मुझे यह देख कर दुख हुआ है कि अधिकांश सदस्यों ने एक दूसरे पर कीचड़ ही उछाली है आपात काल में हमें यह बात शोभा नहीं देती है ।

मैं पिछले १७ वर्षों से केसरिया पगड़ी बांध रहा हूं । यह कफन का चिह्न है । मैंने १९४७ में एक लाख स्वयं सेवकों की सेवा संगठित की थी । आज भी मैं गांव-गांव जाकर १ लाख स्वयं सेवक एकत्र कर सकता हूं ।

मैं एक अनुभवी सैनिक हूं तथा विमान चालन भी जानता हूं । मैं माननीय सदयों को सावधान कर देना चाहता हूं कि वे चीन की शक्ति के संबंध में गलत अनुमान न लगायें जितने भी नवयुवक सशक्त है तथा जो १७ से २५ वर्ष की आयु के बीच के हैं उन्हें सैनिक ट्रेनिंग दी जानी चाहिये ।

इस अवसर पर हमें चाहिये कि हम प्रधान मंत्री को अपना पूरा सहयोग देवें एक दूसरे की परस्पर आलोचना करना या प्रधान मंत्री की आलोचना करना उचित नहीं है ।

†**श्री पें० वेंकटासुब्बया** (अडोनी) : आज जो जवान हमारे देश की सीमाओं की रक्षा कर रहे हैं मैं उन्हें अभिवादन करता हूं । इस जैसा नंगा आक्रमण इतिहास में कभी भी नहीं हुआ है जैसा कि चीन ने किया है । परन्तु इस आक्रमण का एक अच्छा परिणाम भी निकला है कि हम संगठित हो गये हैं । मेरा विचार यह कि देश की शासन व्यवस्था को अब सुधारा जाना चाहिए । खाद्य उत्पादन को बढ़ाना चाहिए । इसके लिए वित्तीय सहायता दी जानी चाहिए । इसी प्रकार देश के औद्योगिक आधार को शक्तिशाली बनाना चाहिए । मेरा यह भी सुझाव है कि खाद्य उत्पादन बढ़ाने के लए राज्यों तथा केन्द्र के खाद्य तथा कृषि मंत्रियों की एक समिति बनाई जानी चाहिए ।

हमारा प्रचार कार्य भी बहुत ढीला है, अतः इसे भी तीव्र किया जाना चाहिए । दिन प्रतिदिन के प्रचार कार्य में सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय को परामर्श देने के लिए प्रसिद्ध बत्रकारों की एक समिति बनाई जानी चाहिए ।

हमारे देश का साहस बहुत ही उच्च स्तर पर रहा है । हमें व्यर्थ के खर्च रोक देने चाहिए और गांवों में भर्ती का कार्य तीव्र कर देना चाहिए । युद्ध की सामग्री तैयार करने वाले कारखानों में उत्पादन बढ़ाया जाना चाहिए । इन शब्दों से मैं प्रधान मंत्री महोदय के संकल्प का समर्थन करता हूं ।

†**श्री लीलाधर कटकी** (नवगांव) : मैं संकल्प का समर्थन करता हूं । तटस्थता की नीति के कारण हमें सफलतायें प्राप्त हुई है । आज भी जब इस नीति के बावजूद हमें विभिन्न देशों से सहायता मिल रही है तो फिर इसे छोड़ने से क्या लाभ है । अतः मेरा मत तो यह है कि किसी गुट में शामिल न होने की हमारी नीति के त्याग करने की कोई आवश्यकता नहीं ।

आज की परिस्थिति में यह बड़ा जरूरी है कि 'नेफा' और आसाम में तथा देश के अन्य भागों के बीच संचार व्यवस्था को और अच्छा बनाया जाना चाहिए ताकि सम्भरण कार्य ठीक ढंग से चलता रहे । इसके अतिरिक्त एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि उस क्षेत्र के लोगों को हवाई हमले के समय की जाने वाली सावधानी आदि की शिक्षा दी जानी चाहिए ।

---

†मूल अंग्रेजी में

[श्री लीलाधर कटकी]

कृषि उत्पादन को बढ़ाना चाहिए। सिंचाई सुविधाओं को बढ़ाना चाहिए। सैनिकों को बढ़ाना चाहिए। सैनिकों की जरूरतों को पूरी करने के लिए मुर्गेखाने और फार्म बनाये जाने चाहिए। यह प्रसन्नता की बात है कि देश के छोटे बड़े सब इस समय सरकार की पूरी सहायता कर रहे हैं। जवानों को श्रद्धा के फूल भेंट करने में मैं अन्य महानुभावों द्वारा व्यक्त किये गये विचारों का समर्थन करता हूं।

†**श्री बसुमतारी** (गोलपाड़ा) : प्रधान मंत्री, युद्ध काल में हमारा नेता हो कि न, इस बात पर चर्चा हुई है। इस बारे में मेरा निवेदन है कि श्री नेहरू देश का नेता ही नहीं देश का जीवित चिह्न है। अतः उनके नेतृत्व के सम्बन्ध में सन्देह करने का कोई प्रश्न ही नहीं है। व्यवहारिक नीति भी यही है कि वर्तमान संकट में वर्तमान नेताओं को ही देश का नेतृत्व करना चाहिए।

मेरा सम्बन्ध आसाम से है। आसाम के लोगों ने अपने साहस को बहुत ही ऊंचा रखा है, परन्तु मेरा निवेदन यह है कि सरकार द्वारा आसाम के लोगों को आवश्यक शस्त्र देने चाहिए जिससे कि वे आक्रमणकारी का मुकाबला कर सके। असैनिक प्रतिरक्षा को उपेक्षा की दृष्टि से नहीं देखा जाना चाहिए।

मैं यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि ब्रह्मपुत्र नदी में जो कम्पनी ननी परिवहन का काम कर रही है, इसे सरकार को अपने हाथ में ले लेना चाहिए। आसाम में परिवहन तथा संचार की व्यवस्था में सुधार करना चाहिए जिससे कि सेना को सम्भरण का कार्य सुचारु रूप से चल सके। पाकिस्तान के विमान भी मंडरा रहे हैं, अतः हमारी सरकार को जागरूक रहने की आवश्यकता है।

श्री मुहम्मद ताहिर (किशनगंज) : जनाब स्पीकर साहब, हमारे लीडर ने जो तजवीज पेश की है उसकी ताईद करके मैं चन्द बातें अर्ज करूंगा। यह मौका नहीं है कि इस पर ज्यादा——

अध्यक्ष महोदय : जो मेम्बर साहिबान बोल लें वे कृपा करके चले न जाए।

श्री मुहम्मद ताहिर : इस वक्त मौका यह नहीं है कि हम ज्यादा वक्त सर्फ करें लेकिन मौका यह है कि हम अमल करें।

अमल से जिन्दगी बनती है जन्नत भी जहन्नुम भी अमल करेंगे तो कामयाबी होगी। इस वक्त मुझे चन्द बातें अर्ज कर देनी हैं। मेरे दिल में एक खतरा पैदा हो रहा है। खतरा यह है कि चाइनीज की तरफ हमने हमेशा दोस्ती का हाथ बढ़ाया और दोस्ती का हाथ ही नहीं बढ़ाया बल्कि शराफत का हाथ बढ़ाया लेकिन उसका जवाब हमें दुश्मनी से और जलालत से मिला। यही नहीं बल्कि जब हम दोस्ती का हाथ बढ़ा रहे थे तो चाइना ने यह कहा : "हम साम्राज्यवाद के हाथों भारत को स्वतन्त्रत करायेंगे" इससे हमको चीन के इरादे और उसके मिजाज़ का पता चलता है।

यही नहीं जब दलाई लामा को हम लोगों ने वैलकम किया था उस वक्त चाइना में एक रैली हुई थी और उसमें उन्होंने कहा कि हम एक एक हिन्दुस्तानी को अपने घूंसे से मार डालेंगे। इस किस्म के बयानात दिये गये थे।

---

†मूल अंग्रेजी में

यही नहीं बल्कि जब लद्दाख में हमारे आठ नौ जवान गिरफ्तार हुए थे पिछले सालों में, जिनको बाद में चाइनीज ने छोड़ दिया था, जब वह आये तो उन्होंने जो बयान दिया उस बयान से साफ तौर से मालूम होता है कि उनसे भी यही कहा कि हम इंडिया को लिबरेट करेंगे। यह समझ में नहीं आता कि वह हमको किससे लिबरेट करेंगे। हम तो एक आजाद मुल्क हैं, हमको लिबरेट करने का उनको क्या हक है। लेकिन वह कहते हैं कि हम इम्पीरियलिस्ट हैं और हमको इम्पीरियलिज्म से लिबरेट करना चाहते हैं। इससे चाइना के मिजाज का पता चलता है।

इसके बाद फिर एशिया का हाल देखिये। रूस का अव्वल तो चाइना से मिलिटरी पैक्ट है। रूस यह कहता है कि भारत हमारा मित्र देश है और चीनी हमारे भाई हैं। हम उसके दोस्त हैं लेकिन चीनी तो उसके भाई हैं। यही नहीं, बल्कि चाइना ने जो एक नक्शा तैयार किया है, जिसमें दिखाया है कि हिन्दुस्तान की इतनी जमीन हमको मिलनी चाहिए, वह नक्शा मास्को के गवर्नमेंट हाउस में लटका हुआ है। इसके मानी यह हैं कि उस नक्शे को रूस ने एप्रूव कर दिया है। अगर वह यह समझता था कि चीन का यह काम गलत है तो उसे इस चीज को गवर्नमेंट हाउस में नहीं लटकाना चाहिये था। यह चीज बहुत खतरनाक है।

मेरा अन्दाजा यह है कि चाइना का यह इरादा नहीं है कि वह हमारे प्लेन्स में आवे। वह हिली एरियाज में आकर रुक जाना चाहता है और वहां रुकने के बाद वह और रूस दोनों मिल कर यहां के कम्युनिस्टों को हथियार देगा, और जो खेल उसने च्यांगकाई शेक के साथ खेला था वही यहां खेलना चाहता है। मुझे ऐसा लगता है कि हमारे कम्युनिस्ट भाई इस वक्त एक रिजोल्यूशन पास करके हमें भुलावा दे रहे हैं। उनके बारे में मैं यह कहना चाहता हूं कि उनके लिए सबसे बेहतर काम यह था कि वह चीन जाते, जैसा कि वह अक्सर जाते रहते हैं, और उनसे कहते कि हम तुम्हारी आइडियालाजी को हिन्दुस्तान में चला रहे हैं और इस मुल्क को एक दिन कम्युनिस्ट बना लेंगे। लेकिन अगर तुम हमारे मुल्क पर हमला करते हो तो तोबा है और तुम्हारी पार्टी को छोड़ते हैं और हिन्दुस्तान की कम्युनिस्ट पार्टी को डिजाल्व करते हैं। तब ख्याल किया जाता कि हिन्दुस्तानी कम्युनिस्ट पार्टी को वाकयाई हिन्दुस्तान से मुहब्बत है। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। वह एक महज भुलावा दे रहे हैं और यह कह कर कि हम गवर्नमेंट के साथ हैं वह महज अपनी पार्टी को जिन्दा रखना चाहते हैं। एक वक्त आयेगा जब रूस और चीन दोनों मिल कर इनकी मदद करेंगे और हिन्दुस्तान में वह खलफिशार पैदा करेंगे जैसा कि श्री चाऊ ऐन लाई ने चीन में पैदा किया था।

इस सिलसिले में मैं दो, चार बातें कह देना चाहता हूं। मैं चाहता हूं कि इस चीज को हमारी गवर्नमेंट और हमारे मुल्क को अपने दिल में बतौर वार्निंग के ले लेना चाहिए कि यह जो हम कहते हैं कि पीसफुल निगोशिएशंस करेंगे, जहां तक पीसफुल निगोशिएशंस के उसूल का ताल्लुक है यह बहुत अच्छी बात है, पीसफुल निगोशिएशंस करें लेकिन किस वक्त करें इस का ध्यान रखना बहुत जरूरी है। मैं समझता हूं कि इस वक्त पीसफुल निगोशिएशंस की बिलकुल जरूरत नहीं है। पीसफुल निगोशिएशंस करने के पहले हम ऐसी फिजा पदा कर दें, ऐसी हालत पैदा कर दें कि चाऊ ऐन लाई खुद हम से प्रपोज करें कि वे हम से पीसफुल निगोशिएशंस करने के वास्ते तैयार हैं और वह कहें कि हम से गलती हुई है हमें माफ किया जाय, पीसफुल निगोशिएशंस उसी वक्त हो सकते हैं वरना नहीं या तो उस वक्त हो सकते हैं जब हम मैकमोहन लाइन से उनको पीछे कर के दो, चार क़दम आगे बढ़ जांय और वह हमारे सामने झुक कर कहें कि साहब हमसे गलती हुई, हम आप से पीसफुल निगोशिएशंस करने के लिए तैयार हैं। इसलिए मैं पीसफुल निगोशिएशंस के बारे में

[श्री मुहम्मद ताहिर]

अपनी गवर्नमेंट से अपील करता हूं कि ऐसी हालत के क़ब्ल उसके ऊपर विचार करने को तैयार न हो। हम देखते हैं कि बराबर हमारी तरफ से इस बारे में ढील वर्ती गई है। एक तरफ तो हम ने यह बराबर कहा कि हम चीन से कोई बातचीत नहीं करेंगे जब तक कि आक्रमण समाप्त नहीं कर दिया जाता। य एक बात हो गई लेकिन दूसरा मामला आया तो हम ने फिर यही कह दिया। अब यह अजीब बात है कि पहले हमने बकेटेड कहा और फिर हमारी तरफ से टर्मिनेशन आ गया। इसके बाद हमारी तरफ से ८ सितम्बर की लाइन का नाम आ गया। अब इन सब चीज़ों को देख कर दिल को बहुत तकलीफ होती है कि आखिर यह क्या वजह है कि हम लोग इस तरीक़े से अपने को कमजोर और दबे हुए समझते हैं? चीनियों को हमें साफ तौर से बता देना चाहिए कि जब तक वे मैकमेहन लाइन के उस पार नहीं चले जायेंगे तब तक हम उनसे पीसफुल निगोशिएशंस करने को क़तई तैयार नहीं हैं। इसके बारे में जब वह खुद अपील करें तो उसको पार्लियामेंट के सामने लाया जाय और उसको बतलाया जाय कि चीनी हमसे पीसफुल निगोशिएशंस करना चाहते हैं, पार्लियामेंट की राय लेकर और उसके मुताबिक उनसे डील किया जाय।

अक्सर हाउस में पाकिस्तान के ऐटीच्यूड का जिक्र आया है। यह ठीक है कि पाकिस्तान का जो ऐटीच्यूड है वह बिलकुल गलत है। हमारी गवर्नमेंट से गालिबन उनकी कुछ बातें हो रही हैं। मुमकिन है कि पाकिस्तान वालों को अक्ल आ जाय और मैं खुदा से दुआ करता हूं कि उनको ऐसी अक्ल और समझ आ जाय ताकि वह अपना गैर दोस्ताना रवैय्या छोड़ कर हमारा साथ दें।

ख्वाजा नाजिमुद्दीन ने जो यह कंडीशन रखी है कि हिन्दुस्तान मुसलमानों की हिफाज़त का ऐलान करे। अब यह एक अजीब सी बात है। अरे भाई हम एक डेमोक्रेटिक मुल्क में रहते हैं और यहां हम आपके कहे बगैर हिफ़ाज़त में हैं। आपको हमारी हिफाजत में क्या पड़ी है? मैं उनको इस तरह की बातें न करने के लिए वार्न करना चाहता हूं। मैं तो उन से कहना चाहता हूं कि अगर वाक़ई चीन या कम्युनिज्म हिन्दुस्तान की तरफ आया तो यह ६ करोड़ मुसलमान जिनकी कि हिफाज़त के लिए ख्वाजा नाजिमुद्दीन बोलते हैं वह ख्वाब में भी नज़र नहीं आयेंगे और वह सब खत्म हो जायेंगे। इसलिए मैं ख्वाजा नाजिमुद्दीन जोकि पाकिस्तान की मुस्लिम लीग के अभी प्रेसीडेंट हुए हैं, उनसे अपील करूंगा कि वह इस तरह की बातें न करें और वह पाकिस्तान के मासैज़ को इस बात के लिए तैयार करें और वहां की हुकूमत को मजबूर करें कि उस के लिए सिवाय इसके और कोई चारा नहीं है कि वह हिन्दुस्तान का साथ दे।

जहां तक कम्युनिज्म और मुसलमानों का ताल्लुक है, मैं बहैसियत एक मुसलमान के कहता हूं कि जहां कम्युनिज्म आयेगा वहां से मुसलमान चला जायेगा।

वतन की आजादी की हिफाज़त के लिए कोई भी कुर्बानी कम नहीं है। मैं समझता हूं कि किसी भी नेशन की सबसे बड़ी कुर्बानी वतन की हिफ़ाज़त करने के रास्ते में होती है। यह सबसे बड़ी कुर्बानी है इससे बढ़ कर और कोई कुर्बानी नहीं हो सकती। आज की फिज़ा में हिन्दुस्तान का बच्चा बच्चा प्राइम मिनिस्टर साहब के साथ है। औरतें, बच्चे, जवान और बूढ़े सब उनके साथ हैं। हम एक दिन दिखला देंगे कि हमने चीन को मैकमेहन लाइन से पीछे हटा दिया है। यह बिलकुल साफ है कि कम्युनिज्म को हम कभी अपने मुल्क में जमने का मौक़ा नहीं देंगे। अब चूंकि मेरा वक्त खत्म हो गया है इसलिए और ज्यादा न कहते हुए बस आखिर में एक शेर पर अपनी स्पीच खत्म करता हूं :—

"सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा,
हम बुलबुलें हैं उसकी, यह गुलिस्तां हमारा।"

†**श्री शशि रंजन** (पपरी) : मैं बिना किसी संशोधन के प्रधान मंत्री के संकल्प का समर्थन करता हूं। आज यह स्पष्ट हो गया है कि विश्व के सभी प्रजातंत्रवादी और स्वतंत्रता प्रेमी लोगों ने बिना शर्त हमारा समर्थन किया है। इस बात से यह पता चलता है कि किसी गुट में न मिलने की हमारी नीति एक सही नीति है। हमारे प्रधान मंत्री का मुकाबला चर्चिल अथवा चम्बरलेन से किया गया है। इस बारे में मेरा निवेदन है कि हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारा लोकतंत्र कुछ ही वर्षों का है जब कि उनका सकड़ों वर्षों से चल रहा है।

एक बात बिलकुल स्पष्ट है कि यदि रूस चीन को इस विस्तारवादी कार्य करने से नहीं रोकेगा तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि संसार भर से माम्यवाद का चिह्न तक मिट जायेगा। यह बात भी स्पष्ट कर देनी चाहिए कि भारत चीनियों के विरुद्ध नहीं है, वह तो सत्तारूढ़ दल की विस्तारवाद मनोवृत्ति के विरुद्ध है।

मेरा यह भी सुझाव है कि सेवा निवृत्त सैनिक और असैनिक अधिकारियों की सेवा प्राप्त करनी चाहिए। काम के घंटे बढ़ा देने चाहिए। विकास कार्य के अतिरिक्त अन्य सब कार्य स्थगित कर देने चाहिए। "सैन्सरशिप" कड़ा कर देना चाहिए। और सभी प्रकार से असैनिक प्रतिरक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए। सीमा से मिलते क्षेत्रों के परिदहन की जिम्मेदारी प्रतिरक्षा सेनाओं को दे देनी चाहिए।

इसके अतिरिक्त हमें सभी उपभोग्य वस्तुओं पर नियंत्रण किया जाना चाहिए। सीमा क्षेत्रों के लोगों को शस्त्र देने के लिए तनिक ढिलाई से काम लेना चाहिए। प्रशासन का व्यय कम करके उसे प्रतिरक्षा की ओर लगाया जाना चाहिए। हमें यह याद रखना चाहिये कि अन्त में विजय लोकतंत्र की ही होती है।

श्री चं० ला०चौधरी (महुआ) : मोहतरम सदर साहब, मैं आप का ध्यान दिलाना चाहता हूं कि मैं चार दिनों से इन्तज़ार कर रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय : जब माननीय सदस्य को बुलाया गया था, तो वह गैर-हाज़िर थे।

श्री चं० ला० चौधरी : मैं किसी काम से बाहर चला गया था।

अध्यक्ष महोदय : जब आप को बुलाया जाये, तो आप को कोई और काम पड़ जाये और इस तरह दो बातें कोइनसाइड करें, तो मैं क्या कर सकता हूं ?

मेरा ध्यान इस तरफ दिया गया है कि आज आठ बजे तक बैठने का इकरार था। अब हाउस की इस वक्त क्या राय है ? जो मेम्बर साहबान बोल चुके हैं, वे तो समझते हैं कि हम कुर्बानी कर रहे हैं और जिन्होंने बोलना है, उन की इच्छा है कि हम बैठे रहें। मेम्बर साहबान जैसा चाहें, मैं वैसा ही करने के लिए तैयार हूं। (**अन्तर्बाधायें**) इस वक्त जितने माननीय सदस्य बोलना चाहते हैं, अगर वे पांच पांच या सात सात मिनट पर राज़ी हों, तब तो वक्त है और मैं सब को मौका दे सकता हूं। अगर इस से ज्यादा वक्त चाहिए, तो बड़ी मुश्किल होगी। (**अन्तर्बाधायें**)

श्री जसवन्त मेहता (भावनगर) : दस मिनट।

अध्यक्ष महोदय : मैं समझता हूं कि सात मिनट काफी हैं। अगर हम आपस में यह एग्रीमेंट करलें, तो मैं सब मेम्बरान को बुला सकूंगा।

†**श्री विश्वनाथ राय** (देवरिया) : पांच मिनट में कुछ कहा नहीं जा सकता है।

---

†मूल अंग्रेजी में

अध्यक्ष महोदय : बहुत अच्छा कहा जा सकता है। अब मेम्बर साहबान की क्या राय है कि कल पर रखा जाये ? (**अन्तर्बाधा**) ।

श्री चं० ला० चौधरी : अगर पांच मिनट दिये जायें, तो उसमें काफी कुछ कहा जा सकता है ।

कुछ माननीय सदस्य : सात मिनट ।

अध्यक्ष महोदय : अगर आप सात मिनट पर रजामन्द हैं, तो जो साहब यहां पर हैं, उन को मैं सात मिनट दे दूंगा। जिन मेम्बर साहबान को मैं ने गारण्टी दी थी, उन सब को मैंने बुला लिया है। जो आज बैठे हुये हैं, जिन्होंने अपने नाम दिये हुये हैं, या जो अब नाम देना चाहते हैं, उन सब के बारे में मैं अभी नहीं कह सकता हूं। माननीय सदस्य अपनी अपनी स्लिप दे दें। **श्रीमती यशोदा रेड्डी।**

†**श्रीमती यशोदा रेड्डी** (करनूल) : हमें नेहरू के नेतृत्व पर अभिमान है। और उस में युद्ध कालीन नेतृत्व के भी सब गुण विद्यमान हैं। चीन ने हम पर आक्रमण किया है और वह चाहता है कि अपनी तटस्थता की नीति को छोड़ दे। चीन की इच्छा है कि भारत को एक साम्यवादी देश बनाया जाये। हमें अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा करने तथा चीनियों के गलत इरादों को चकनाचूर करने की पूरी कोशिश करनी चाहिये ।

हमें अपनी तटस्थता की नीति पर डटे रहना चाहिये। और जो भी मित्र देश हमारी सहायता करें उसे स्वीकार करना चाहिये : उसके साथ ही हमें इस बात की भी पूरी कोशिश करनी चाहिये कि हमारी योजनाओं का काम भी पूरा हो जाये। देश के लिये बड़े से बड़ा बलिदान देने में महिलायें पीछे नहीं रहेंगी ।

श्री प्रिय गुप्त : बोलो भारत माता की जय ।

अध्यक्ष महोदय : यह क्या है? पब्लिक जलसे में तो हम नहीं बैठे हुये । यह ठीक नहीं है, कुछ कुछ डिसिप्लिन होना चाहिये। इस तरीके से यहां पार्लियामेंट के अन्दर नहीं किया जाता है।

कार्य मंत्रणा समिति

आठवां प्रतिवेदन :

†**श्री राने** (बुलडाना) : मैं कार्य मंत्रणा समिति का आठवां प्रतिवेदन उपस्थित करता हूं।

इस के पश्चात् लोक-सभा बुधवार १४ नवम्बर, १९६२/कार्तिक २३, १८८४ (शक) के ग्यारह बजे तक के लिये स्थगित हुई ।

---

†मूल अंग्रेजी में

दैनिक संक्षेपिका

मंगलवार, १३ नवम्बर, १९६२

२२ कार्तिक, १८८४ (शक)

विषय		पृष्ठ
प्रश्नों के मौखिक उत्तर		५१५—३८
तारांकित प्रश्न संख्या		
१५४	पाकिस्तान को चोरी छिपे चावल भेजना . . .	५१५—१७
१५५	ग्रामदान क्षेत्रों में कृषि उत्पादन .	५१७—१८
१५६	असैनिक विमान चालक	५१९—२०
१५७	डीज़ल लोकोमोटिव परियोजना . .	५२१—२२
१५८	हेरन और वाइकिंग विमान बेचने का प्रस्ताव .	५२२—२४
१५९	कृषि उत्पादों का परीक्षण	५२४—२६
१६०	तटीय व्यापार	५२६—२७
१६१	बाढ़ से फसल तथा पशुओं की हानि .	५२७—२९
१६२	ग्रामीण सस्थाओं में कृषि की शिक्षा .	५२९—३१
१६३	विमानों के पुर्जे और सामान	५३२—३३
१६४	मंगलौर पत्तन . .	५३३—३४
१६५	उर्वरकों की संग्रह	५३४—३ ६
१६६	चीनी के मूल्यों का वैज्ञानिक व्यवस्थाकरण . .	५३६—३७
१७३	चीनी की उत्पादन लागत	५३७—३८
प्रश्नों के लिखित उत्तर		५३८—७१
तारांकित प्रश्न संख्या		
१६७	जहाजी कम्पनियां	५३८
१६८	जबलपुर के रास्ते दिल्ली और मद्रास के बीच विमान सेवा .	५३९
१६९	ऊन के उत्पादन में कमी	५३९
१७०	दक्षिण पूर्व रेलवे प्रशासन में डिवीजन व्यवस्था . .	५३९
१७१	रेलवे दुर्घटनायें	५४०
१७२	इमारती तथा अन्य लकड़ी की आवश्यकता . .	५४१

विषय		पृष्ठ
प्रश्नों के लिखित उत्तर		
अतारांकित प्रश्न संख्या		
२९९	फतेहपुर सीकरी में हैंगिंग गार्डेन	५४१–४२
३००	दिल्ली में प्राणकीय उद्यान	५४२
३०१	कोको की खेती	५४२–४३
३०२	कोचीन और त्रिवेंद्रम में हवाई अड्डा	५४३
३०३	तिरुनेलवेली से कन्याकुमारी तक रेलवे लाइन का बढ़ाया जाना	५४३
३०४	त्रिपुरा में औषधालय और अस्पताल	५४४
३०५	त्रिपुरा में कपास की खेती	५४४–४५
३०६	पंचायत अध्यक्षों के लिये प्रशिक्षण केन्द्र	५४५
३०७	आन्ध्र में राष्ट्रीय राजपथ	५४५
३०८	हवाई अड्डा पदाधिकारियों के लिये प्रशिक्षण केन्द्र	५४५
३०९	डाक तार कर्मचारी	५४६
३१०	दिल्ली में डाकतार विभाग के क्वार्टर	५४६
३११	जापानी ढंग से खेती के लिये जमीन	५४७
३१२	इंडियन एयर लाइन्स कारपोरेशन के लिये "ट्राइडेंट" विमान	५४७
३१३	उत्तर रेलवे के बिना चौकीदार वाले लेवल क्रासिंग	५४८
३१४	कोयला लाने ले जाने के लिये "बाक्स" टाइप के माल डिब्बे	५४८–४९
३१५	ब्रिटेन से आयात पर माल भाड़ा छूट	५४९
३१६	आसाम में संचार सेवाओं का विस्थापन	५४९
३१७	छोटे सिंचाई कार्य	५५०–५१
३१८	पशुधन	५५१
३१९	ऐशिया के लिये संयुक्त आयोजना	५५१–५२
३२०	दूसरा शिपयार्ड	५५२
३२१	डाक तथा तार विभाग के कार्यकुशल कर्मचारियों को पुरस्कार	५५२–५३
३२२	पंचायती समितियां को सहायता	५५३
३२३	पाल वाले जहाज	५५३–५४
३२४	काशीपुर के निकट रेल-दुर्घटना की जांच	५५४
३२५	मुरादाबाद डिवीजन में सोलानी में रेलवे पुल पर दुर्घटना	५५४
३२६	विमान निगम	५५५
३२७	हिन्दुस्तान शिपयार्ड	५५५–५६
३२८	अन्दमान को रेडियो टेलीफोन द्वारा कलकत्ता से मिलाना	५५६–५७

विषय पृष्ठ

प्रश्नों के लिखित उत्तर

अतारांकित
प्रश्न संख्या

३२९	आन्ध्र प्रदेश में नई रेलवे लाइनें . . .	५५७
३३०	वन अधिनियम का उल्लंघन	५५७
३३१	त्रिपुरा में खास भूमि पर अनधिकार कब्जा . .	५५७–५८
३३२	सुगौली और हरिनगर के चीनी के कारखानें . .	५५८
३३३	तीसरी योजना में हवाई अड्डों का निर्माण . .	५५८
३३४	ठेका तथा निर्माण सहकारी समितियों संबंधी गोष्ठी .	५५८–५९
३३५	महाराष्ट्र में छोटी लाइन को बड़ी लाइन बनाना . .	५५९
३३६	अगरतला में डाक तथा तार घर . . .	५५९–६०
३३७	मछली का निर्यात	५६०
३३८	खेती योग्य परती भूमि . .	५६०–६१
३३९	कांगड़ा घाटी सेक्शन पर यात्री डिब्बे	५६१
३४०	रेलवे डिब्बे, आदि . .	५६१–६२
३४१	स्विस सहायता वाले डेरी फार्म .	५६२
३४२	आस्ट्रेलियाई मेंढों का आयात . . .	५६२
३४३	गन्ना उत्पादन	५६३
३४४	जगाधरी और लुधियाना के बीच बरास्ता चण्डीगढ़ रेलवे लूप लाइन	५६३
३४६	पंजाब के राष्ट्रीय राजपथ . .	५६३–६४
३४७	निर्यातीत वस्तुओं के लिये प्राथमिकता .	५६४
३४८	विशाखापटनम बन्दरगाहें में रोके गये गेहूं के जहाज	५६४–६५
३४९	तल्ला पुल	५६५
३५०	पूर्वोत्तर सीमा रेलवे पर प्लेटफार्मों पर छत डालना	५६५
३५१	डाक सेवायें .	५६६
३५२	कृषि उत्पादन का विपणन	५६६
३५३	बिना टिकट यात्रा .	५६६
३५४	रेलवे सामान का आयात . .	५६७
३५५	खाद्यान्न में आत्मनिर्भरता	५६७
३५६	भूमिहीन मजदूर .	५६७–६८
३५७	दिल्ली में भूकम्प के धक्के .	५६८
३५८	एयर इंडिया के विज्ञापन .	५६८

विषय	पृष्ठ
लिखित उत्तर—(क्रमशः)	
अतारांकित प्रश्न संख्या	
३५९ एयर इंडिया के टिकटों की बिक्री .	५६९
३६० मस्को के लिये एयर इंडिया की उदघाटन उड़ान .	५६९
३६१ मुगल सराय और रोका के बीच डीजल की मालगाड़ी .	५६९–७०
३६२ इन्दौर को धूलिया से जोड़ने वाली रेलवे लाइन .	५७०
३६३ छोटी लाइन (नैरोगेज) कांगड़ा घाटी सेक्शन का पुनः मार्ग रेखण . . .	५७०–७१
निधन सम्बन्धी उल्लेख	५७१
अध्यक्ष महोदय ने श्री हीराभाई कुंवरभाई बेरिया के, जो वर्तमान लोक-सभा के सदस्य थे, निधन का उल्लेख किया ।	
इसके पश्चात् सदस्य दिवंगत आत्मा के सम्मान में कुछ समय तक मौन खड़े रहे ।	
अविलम्बनीय लोक महत्व के विषय की ओर ध्यान दिलाना . .	५७१—७५
श्री बिशन चन्द्र सेठ ने पूर्वोत्तर रेलवे के मांझी और बकुलहा स्टेशनों के बीच ११ नवम्बर, १९६२ को हुई कथित रेल-दुर्घटना की ओर, जिसके फल-स्वरूप २५ व्यक्ति मारे गये और अन्य कई घायल हुये, रेलवे मंत्री का ध्यान दिलाया ।	
रेलवे मंत्री (श्री स्वर्ण सिंह) ने इस सम्बन्ध में एक वक्तव्य दिया ।	
सभा पटल पर रखे गये पत्र .	५७५
(१) मोटर गाड़ी अधिनियम, १९३९ की धारा १३३ की उप-धारा (३) के अन्तर्गत दिल्ली मोटर गाड़ी नियम, १९४० में कुछ और संशोधन करने वाली निम्नलिखित अधिसूचनाओं की एक-एक प्रति :—	
(एक) दिनांक १९ अप्रेल, १९६२ के दिल्ली गजट में प्रकाशित अधि-सूचना संख्या एफ० १२/१०२/६०—परिवहन ।	
(दो) दिनांक २६ जुलाई, १९६२ के दिल्ली गजट में प्रकाशित अधि-सूचना संख्या एफ० १२/७६/६०—परिवहन ।	
(२) कृषि उत्पाद (विकास तथा भाण्डागार) निगम, अधिनियम, १९५६ की धारा ३ के अन्तर्गत निकाली गई दिनांक ३ नवम्बर, १९६२ की अधिसूचना संख्या जी० एस० आर० १४५१ की एक प्रति ।	
(३) भारतीय चिकित्सा परिषद अधिनियम, १९५६ की धारा ३२ की उप-धारा (२) के अन्तर्गत दिनांक २२ जुलाई, १९६१ की अधिसूचना संख्या एस० ओ० १६९९ में प्रकाशति भारतीय चिकित्सा परिषद् (स्नातकोत्तर डाक्टरी शिक्षा समिति) नियम, १९६१ की एक प्रति ।	

विषय पृष्ठ

मंत्रियों द्वारा वक्तव्य . . . . ५७६—७७

(एक) सिंचाई और विद्युत मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अलगेशन) ने हीराकुड बांध परियोजना के बारे में श्री बो० ना० सिंह द्वारा पूछे गये तारांकित प्रश्न संख्या ११८२ के ३० मई, १९६२ को दिये गये उत्तर को शुद्ध करने के लिये एक वक्तव्य दिया ।

(दो) खान और ईंधन मंत्री (श्री के० दे० मालवीय) ने पेट्रोलियम की चीजों के संभरण की स्थिति के बारे में एक वक्तव्य दिया ।

विधेयक पुरःस्थापित . . . . . ५७७—७८

(१) विदेशियों संबंधी विधि (लागू करना तथा संशोधन) विधेयक, १९६२

(२) समवाय (संशोधन) विधेयक, १९६२ ।

अध्यादेश के बारे में वक्तव्य—सभा पटल पर रखे गये . . ५७९

(१) लोक सभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन सम्बन्धी नियमों के नियम ७१(१) के अन्तर्गत विदेशियों सम्बन्धी विधि (लागू करना तथा संशोधन) अध्यादेश, १९६२ (१९६२ का संख्या ५) द्वारा तत्काल विधान बनाने के कारण बताने वाले व्याख्यात्मक वक्तव्य की एक प्रति सभा पटल पर रखी गई ।

(२) लोक सभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन संबंधी नियमों के नियम ७१(१) के अन्तर्गत समवाय (संशोधन) अध्यादेश, १९६२ (१९६२ का संख्या ७) द्वारा तत्काल विधान बनाने के कारण बताने वाले व्याख्यात्मक वक्तव्य की एक प्रति सभा पटल पर रखी गई ।

संकल्प विचाराधीन . . . . . ५७९—६३६

आपात की घोषणा की स्वीकृति और चीनी आक्रमण के बारे में ८ नवम्बर, १९६२ को प्रस्तुत किये गये दो संकल्पों तथा तत्सम्बन्धी स्थानापन्न प्रस्तावों पर और संशोधनों के बारे में चर्चा जारी रही । चर्चा समाप्त नहीं हुई ।

कार्य मंत्रणा समिति का प्रतिवेदन उपस्थापित . . . ६३६

आठवां प्रतिवेदन उपस्थित किया गया ।

बुधवार, १४ नवम्बर, १९६२/२३ कार्तिक १८८४ (शक) के लिये कार्यावलि

आपात घोषणा की स्वीकृति तथा चीनी आक्रमण के बारे में संकल्पों पर अग्रेतर चर्चा ।

विषय सूची (क्रमशः)

	पृष्ठ
श्री व० गो० नायडु	५९५–९६
श्री दे० शि० पाटिल	५९६–९७
श्री ज० ब० सिंह	५९७—६००
श्री सिद्धनंजप्पा	६००–०१
श्री बाल्मीकी	६०१–०४
श्री सुमत प्रसाद	६०४
श्री प्रिय गुप्त	६०४–०५
श्री शिव नारायण	६०५—०७
श्री डा० एरिंग	६०८–०९
श्री शिव चरण गुप्त	६०९
श्री तन सिंह	६०९—११
डा० क० ला० राव	६११–१२
डा० गायतोंडे	६१२–१३
श्री हिम्मतसिंहजी	६१३–१४
श्री जोकीम आलवा	६१४
श्री ब्रजेश्वर प्रसाद	६१४
श्री जयपाल सिंह	६१४–१५
श्री बालकृष्ण वासनिक	६१५
श्री गजराज सिंह राव	६१५–१६
श्री देशपांडे	६१६
श्री मोहन स्वरूप	६१६—१९
श्री भक्त दर्शन	६१९—२२
श्री मेनन	६२२
श्री च० का० भट्टाचार्य	६२२–२३
श्री हेमराज	६२३–२५
श्री भानु प्रकाश सिंह	६२५—२८
श्रीमती ज्योत्सना चांदा	६२८
श्री कमल नयन बजाज	६२८–२९
श्री कछवाय	६२९–३०
श्री नरेन्द्र सिंह महीड़ा	६३१
श्री पें० वेंकटासुब्बया	६३१
श्री लीलाधर कटकी	६३१–३२
श्री बसुमतारी	६३२
श्री मुहम्मद ताहिर	६३२—३४
श्री शशि रंजन	६३५–३६
श्रीमती यशोदा रेड्डी	
कार्य मंत्रणा समिति—	६३६
आठवां प्रतिवेदन	६३६
दैनिक संक्षेपिका	६३७—४१

PLS. 41. IX. 5. 62.
140

© १९६२ प्रतिलिप्यधिकार लोक-सभा सचिवालय को प्राप्त ।

लोक-सभा के प्रक्रिया तथा कार्य-संचालन सम्बन्धी नियम (पांचवां संस्करण) के नियम ३७९ और ३८२ के अन्तर्गत प्रकाशित और भारत सरकार मुद्रणालय, नई दिल्ली की संसदीय शाखा में मुद्रित ।